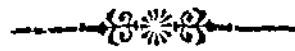
भूमिका ।



इस संसारमें शरीरका आरोग्य रहना भी धर्मअर्थका साधन कहा है, यतः—"धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं स्मृतम्" कारण कि, शरीरमें व्याधिके होनेसे मनुष्य किसी कार्यके करनेको समर्थ नहीं रहता है, इसीसे शरीरको आरोग्य रखना परम पुरुषार्थ है, लोकमें प्रसिद्ध है कि, 'एक तन्दुरुस्ती हजार न्यामत' इस शरीरको नीरोग रखनेकेही निमित्त भगवान् धन्वन्तरिने प्रगट होकर आयुर्वेदका प्रचार किया उनके ग्रंथको अवलम्बन कर ऋषिमुनियोंने अनेक ग्रंथ रचे जिनकी चिकित्सासे आरोग्य हो प्राणी सुखसे कालयापन करने लगे । आयुर्वेदके प्राचीन ग्रंथोंमें चरक, सुश्रुत और वाग्भट हैं । यह ग्रंथ परिश्रमसाध्य और दीर्घकालमें पाठमें आतेहैं इसकारण ऋषि मुनि और महात्माओंने सुखसे बोध होनेके निमित्त सबके संक्षेपसे सार लेकर छोटे छोटे ग्रंथ निर्माण किये जिनके पठन पाठन कर थोडेही कालमें मनुष्य सुबोध हो सक्ते हैं इसप्रकारके ग्रंथ संख्यामें थोडे नहीं हैं परन्तु कालक्रमसे ऐसा समय आनकर प्राप्त हुआ कि जिसके पास जो पुस्तक थी उसने अपने जीते जी उस ग्रंथका प्रकाश न किया, बहुत क्या ? दूसरोंको दर्शनतक भी न कराया । उनके उपरान्त वह पुस्तक या तो पानीमें गलगई या कहीं पसारीकी दुकानकी पुडिया बाँधनेके काममें आई इस प्रकारसे अच्छी २ विद्याओंकी सहस्रों पुस्तकें नष्ट होगई हैं जिनका नाममात्र ग्रन्थान्तरोंमें पाया जाता है, और रहीसही और भी लोप होजातीं परन्तु जबसे यन्त्रालयका प्रचार हुआ तबसे जो पुस्तक जहां सुनीगई यत्नपूर्वक व्ययद्वारा लाकर यन्त्राधीशोंने ग्रंथोका छापना आरंभ किया और लोप होतेहुए ग्रंथोंको बचाया, अभी थोडे दिनकी बात है कि, वैद्यकके तीनचारही ग्रन्थ लब्ध होतेथे परन्तु यन्त्राधिप-

॥ श्रीः ॥

अथ वैद्यरत्नविषयानुक्रमणिका.



इति वै० र० विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

अथ वैद्यरत्न ।

भाषाटीकासमेत ।



योगेश्वरंशिवंनत्वापार्वतीवल्लभंहरम् ।
सज्जनानांविनोदायवैद्यरत्नंकरोम्यहम् ॥ १ ॥

नाडीपरीक्षा ।

रोगाक्रान्तशरीरस्यस्थानान्यष्टौपरीक्षयेत् ।
नाडींमूत्रंमलंजिह्वांशब्दस्पर्शदृगाकृतिम् ॥ १ ॥

अर्थ-वैद्य रोगी मनुष्योंके आठ स्थानोंकी परीक्षाकरै. नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा, मलपरीक्षा, जिह्वापरीक्षा, शब्दपरीक्षा, स्पर्शपरीक्षा, नेत्रपरीक्षा और आकृतिकी परीक्षा करै ॥ १ ॥

नाडीज्ञानंविनावैद्योनलोकेपूज्यतांव्रजेत् ।
अतश्चातिप्रयत्नेनशिक्षयेन्मतिमान्नरः ॥ २ ॥

अर्थ- नाडीज्ञानके विना वैद्य लोकमें पूजित नहीं होता है इसकारण बुद्धिमान् प्रयत्नसे नाडीशिक्षा करै ॥ २ ॥

त्यक्तमूत्रपुरीपस्यसुखासीनस्यरोगिणः ।
अन्तर्जानुकरस्यापिसम्यङ्नाडीप्रबुध्यते ॥ ३ ॥

अर्थ-मूत्रपुरीषत्यागे हुए, सुखसे बैठे हुए, भीतर घुटनो के हाथ किये, रोगी की नाडी सुखसे जानी जाती है ॥३॥

सव्येनरोगधृतिकूर्परभागभाजा ।
पीडयाथदक्षिणकरांगुलिकात्रयेण ॥

अंगुष्ठमूलमपिपश्चिमभागमध्ये ।
नाडींप्रभञ्जनगतिंसततंपरीक्षेत ॥ ४ ॥

अर्थ-जो पहुँचेकी नाडी 'रोगकी धारण करनेवाली है उसको दहनी हाथकी तीन उंगलियोंसे दबाकर रोगीके हाथकी कोहनीको दूसरे हाथसे अच्छीतरह पकडकर अंगुठेकी जडके नीचे वातगतिनाडीकी भलीप्रकार परीक्षा करे आशय यह कि दहने हाथसे कोहनी पकड फिर बायें हाथको हटाय नाडी देखे ॥ ४ ॥

स्त्रीणांभिषग्वामहस्तेवामेपादेचयत्नतः ।
शास्त्रेणसंप्रदायेनतथास्वानुभवेनच ॥
परीक्षेद्रत्नवच्चासावभ्यासादेवजायते ॥ ५ ॥

अर्थ-वैद्यको उचित है कि स्त्रियोंके वामहाथ और बायें पैरमें शास्त्रके अनुसार और अपने अनुभवद्वारा रत्नकी समान नाडीपरीक्षा करे यह परीक्षा अभ्यास करनेसे हो सकती है ॥ ५ ॥

करस्यांगुष्ठमूलेयाधमनीजीवसाक्षिणी ।
तच्चेष्टयासुखंदुःखंज्ञेयंकायस्यपण्डितैः ॥ ६ ॥

अर्थ-हाथके अंगूठेकी जडमें जीवसाक्षिणी धमनी (नाडी) है उसकी चेष्टासे विद्वान्को शरीरका सुख दुःख जानना चाहिये ॥ ६ ॥

अंगुलित्रितयस्पृष्टाक्रमाद्दोपत्रयोद्भवः ।
मन्दांमध्यगतांतीक्ष्णांत्रिभिर्दोषैस्तुलक्षयेत् ७॥

अर्थ-नाडीकी तीन अंगुलियोंके स्पर्शसे तीनों दोषद्वारा मन्द मध्य और तीक्ष्ण गति जाने अर्थात पहली अंगु-

लीमें मध्यस्पर्श होनेसे वातकी, बीचकी अंगुलीमें तीक्ष्ण स्पर्शसे पित्तकी, अन्तकी अंगुलीमें मन्दस्पर्श होनेसे कफकी नाडी जाननी ॥ ७ ॥

पित्तनाडीभवेदुष्णाकफनाडीतुशीतला ।
वातनाडीभवेन्मध्याचैवंस्पर्शविनिर्णयः ॥ ८ ॥

अर्थ–पित्तकी नाडी स्पर्शकरनेसे गरम, कफकी शीतल, वातकी नाडी का स्पर्श मध्यम होता है यह स्पर्शका निर्णय है ॥ ८ ॥

वाताद्वक्रगतानाडीचपलापित्तवाहिनी ।
स्थिराश्लेष्मवतीज्ञेयामिश्रितेमिश्रिताभवेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–वात तिरछी बहती है इसकारण उसकी नाडी टेढी चलती है अग्नि चंचल होनेसे ऊपरको चलती है इस कारण पित्तकी नाडी ऊपर चलती है तथा चंचल होती है जल नीचेको जाता है चपल नहीं है इसकारण कफकी नाडी स्थिर है और दोषोंकेमिलनेसे नाडी मिश्रित चलती है ॥९॥

सर्पजलौकादिगतिंवदन्तिविबुधाःप्रभञ्जनेनाडीम् ।
पित्तेचकाकलावकभेकादिगतिंविदुःसुधियः ॥१०॥

अर्थ–सर्प जोंककी गतिसे वातकी तथा बिच्छूकी गतिसे भी वातकी नाडी जाननी, पित्तकी नाडी कौए, लवा और मेंडककी गतिसे चलती है ॥ १० ॥

राजहंसमयूराणांपारावतकपोतयोः ।
कुक्कुटस्यगतिंधत्तेधमनीकफसंगिनी ॥ ११ ॥

अर्थ–राजहंस, मोर, पारावत, कबूतर और कुक्कुटकी गतिसे यदि नाडी चले तो कफके विकारवाली जाननी॥११॥

मुहुःसर्पगतिंनाडींमुहुर्भेकगतिंतथा ।
वातपित्तसमुद्भूतांतांवदन्तिविचक्षणाः ॥ १२ ॥

अर्थ-यदि नाडी वारवार सर्पगति और वारंवार मेंडककी गतिसे चले तो बुद्धिमानोंने उसको वातपित्तसे उत्पन्न हुई नाडी कहाहै ॥ १२ ॥

सर्पहंसगतिंतद्वद्वातश्लेष्मगतांवदेत् ।
हरिहंसगतिंधत्तेपित्तश्लेष्मान्विताधरा ॥ १३ ॥

अर्थ-सर्प, हंसकी गतिसे चलनेवाली नाडी वात और कफकी कहनी और हंसकी गतिसे चले तो पित्त और कफकी जाननी ॥ १३ ॥

काष्ठकुट्टोयथाकाष्ठंकुट्टतेचातिवेगतः ।
स्थित्वास्थित्वातथानाडीसन्निपातेभवेद्ध्रुवम् ॥१४॥

अर्थ-जिस प्रकार काठका कूटनेवाला काष्ठकुट्टनाम पक्षी बडे वेगसे काठको कूटताहै इसप्रकार ठहर ठहरकर नाडी भयंकर सन्निपातमें चलती है ॥ १४ ॥

वाताधिक्येभवेन्नाडीप्रव्यक्तातर्जनीतले ।
पित्तेव्यक्तामध्यमायांतृतीयांगुलिगाकफे ॥ १५ ॥

अर्थ-वातकी अधिकतामें नाडी तर्जनी अंगुलीके नीचे चलती है, पित्तमें मध्यमाअंगुलीके नीचे और कफमें तीसरी अंगुलीके नीचे चलती है. तीन अंगुली धरकर नाडी देखी जाती है उससे यह क्रम जानना ॥ १५ ॥

तर्जनीमध्यमामध्येवातपित्ताधिकेस्फुटा ।
अनामिकायांतर्जन्यांव्यक्तावातकफेभवेत् ॥ १६ ॥

अर्थ-तर्जनी और मध्यमाके नीचे चलनेसे वातपि-

त्तकी अधिकता कहनी; अनामिका और तर्जनीके मध्यमें वात और कफकी नाडी जान्नी ॥ १६ ॥

मध्यमानामिकामध्येस्फुटपित्तकफेधिके ।
अंगुलित्रितयेपिस्यात्प्रव्यक्तासन्निपातिनः ॥ १७ ॥

अर्थ-मध्यमा और अनामिका अंगुलीके मध्यमें पित्त और कफकी नाडी जान्नी तीसरी अंगुलीके मध्यमें सन्निपातकी नाडी जान्नी ॥ १७ ॥

वाताद्वक्रगतिर्नाडीपित्तादुत्प्लुत्यगामिनी ।
कफान्मन्दगतिर्ज्ञेयासन्निपातादतिद्रुता ॥ १८ ॥

अर्थ-वातकी अधिकतामें नाडी वक्रगतिसे चलती है, पित्तकी अधिकतामें नाडी कूदतीहुई चलती है, कफसे मंदगति और सन्निपातमें बडी शीघ्रतासे चलती है ॥ १८ ॥

वक्रमुत्प्लुत्यचलतिधमनीवातपित्ततः ।
वहेद्वक्रंचमंदंचवातश्लेष्माधिकत्वतः ॥ १९ ॥

अर्थ-वात आर पित्तकी अधिकतासे टेढी और कूदती हुइ चलती है वात और कफकी अधिकतासे टेढी और मंदगतिसे चलती है ॥ १९ ॥

उत्प्लुत्यमंदंचलतिनाडीपित्तकफेधिके ।
स्पन्दतेचैकमानेनत्रिंशद्वारंयदाधरा ॥ २० ॥

अर्थ-पित्तकी और कफकी अधिकतामें नाडी कूदती हुई मन्द २ चलती है जब कि नाडी एकही मानसे बराबर तीसवार चले ॥ २० ॥

स्वस्थानेनतदानूनंरोगीजीवतिनान्यथा ।
स्थित्वास्थित्वावहतियासाज्ञेयाप्राणघातिनी २१ ॥

अर्थ-और अपने स्थानपर स्थितरहै तो रोगीका जीवन जाना, अन्यथा नहीं और जो नाडी रुक रुक कर चलै वह प्राणघातिनी जानो ॥ २१ ॥

जिह्मंजिह्मंकुटिलकुटिलंव्याकुलंव्याकुलंवा ।
स्थित्वास्थित्वावहतिधमनीयातिनाशंचसूक्ष्मा ॥
नित्यंकंठेस्फुरतिपुनरप्यंगुलीनांस्पृशेद्वा ।
भावैरेवंवहुविधितरैःसन्निपातादसाध्या ॥ २२ ॥

अर्थ-टेढी टेढी कुटिल वारंवार व्याकुलतासे युक्त ठहर ठहरकर चलै फिर सूक्ष्म रूपसे लय होजाय नित्य कंठमें स्फुरायमाणहो फिर कुछ कालमें अंगुलीको स्पर्शकरै इसप्रकारके अनेक भावोंसे चलनेवाली नाडी सन्निपातकी जानो यह असाध्य है ॥ २२ ॥

पूर्वंपित्तगतिंप्रभंजनगतिंश्लेष्माणमाविभ्रती ।
स्वस्थानाद्भ्रमणंमुहुर्विदधतीचक्राधिरूढेवया ॥
भीमत्वंदधतीकलापिगतिकामूक्ष्मत्वमातन्वती ।
निःसाध्यांधमनींवदन्तिमुनयोनाडीगतिज्ञानिनः२३

अर्थ-पहले पित्तकी गति फिर पवनकी गति फिर कफकी गति को धारण करै अपने स्थानसे वारंवार भ्रमती हुई चक्रकी समान भयंकरपना धारण करती हुई मोरकी चाल चलती हुई कभी अत्यन्त सूक्ष्म होती हुई नाडीके ज्ञानवाले वैद्य मुनि असाध्य कहते हैं ॥ २३ ॥

गंभीरायाभवेन्नाडीसाभवेन्मांसवाहिनी ।
ज्वरवेगेनधमनीसोष्णाकोपवतीभवेत् ॥ २४ ॥

अर्थ-गंभीरा नाडी मांसवाहिनी जानो और ज्वरके वेगसे नाडी उष्णता लिये कोपवाली होतीहै ॥ २४ ॥

कामक्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता।
मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्चनाडीमन्दतराभवेत् ॥ २५ ॥

अर्थ-कामक्रोधसे वेगवाली, चिन्तासे क्षीण और भयसे कूदतीहुई चलती है, मन्दाग्नि और क्षीण धातुवालेकी नाडी अत्यन्त मन्द चलती है ॥ २५ ॥

असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीयसी।
लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता ॥ २६ ॥

अर्थ-रुधिरसे पूर्ण कुछ गरम होतीहै आमयुक्त होनेसे भारी चलती है प्रदीप्त अग्नि होनेसे हलकी और वेगवाली होती है ॥ २६ ॥

चपलाक्षुधितस्यापितृप्तस्यवहतिस्थिरा।
शीघ्रानाडीमलापातेमध्याह्नेऽग्निसमोज्वरः ॥२७॥

अर्थ-भूंखेकी चपल और तृप्तहुएकी स्थिर चलती है मलपातमें शीघ्रगतिसे मध्याह्नमें जिसको अग्निकी समान प्रबल ज्वरहो ॥ २७ ॥

दिनैकंजीवितंतस्यद्वितीयेम्रियतेध्रुवम्।
मरणेडमरूकाराभवेदेकदिनेनच ॥ २८ ॥

अर्थ-वह एक दिन जीता है, दूसरे दिन अवश्य मरजाता है. डमरूके आकारवाली नाडी होनेसे प्राणीका दिनमें मरण होजाता है ॥ २८ ॥

अथ जिह्वापरीक्षा।

पीताजिह्वाखरस्पर्शास्फुटितामारुताधिके।
रक्ताश्यामाभवेत्पित्तेकफेशुभ्रातिपिच्छिला ॥२९॥

अर्थ-जिह्वापरीक्षा कहते हैं। पीली खरखरे स्पर्शवाली और स्फुटित जीभ वातकी अधिकतामेंहोती है लाल काले रंगकी पित्तमें और कफके विकारमें श्वेत और चिकनी जीभ होती है ॥ २९ ॥

कृष्णासकंटकाशुष्कासन्निपाताधिकेतुसा ।
मिश्रितेमिश्रिताज्ञेयारिष्टेलक्षणवर्जिता ॥ ३० ॥

अर्थ-सन्निपातकी अधिकतामें काली कांटोंसे युक्त और शुष्क होती है मिश्रितदोषोंमें मिश्रित लक्षणवाली होती है अरिष्टमें लक्षणहीन होती है ॥ ३० ॥

अथ दृक्परीक्षा।

रूक्षाधूम्रातथारौद्राचलाचांतर्ज्वलत्यपि ।
दृष्टिर्यदातदातस्यवातरोगविदोविदुः ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिस समय दृष्टि रूखी धुमैली रौद्र चलायमान अन्तरसे जलतीहुई हो तो जाननेवालोंने इसको वातरोग कहा है ॥ ३१ ॥

दीपद्वेपिचसंतप्तंपीतंपित्तेनलोचनम् ।
जलार्द्रंज्योतिषाहीनंस्निग्धंमन्दंकफेनतत् ॥ ३२ ॥

अर्थ-पित्तके विकारमें दीपक अच्छा नहीं लगता, संन्तापयुक्त पीले नेत्र होजाते हैं और कफकी अधिकतामें जलसे गीले ज्योतिसे हीन स्निग्ध और मन्द होते हैं ॥३२॥

द्वन्द्वदोषेभवेन्मिश्रवर्णंतूर्णंविलोचनम् ।
श्यामवर्णञ्चनिर्भुग्नंतन्द्रामोहसमन्वितम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-द्वन्द्वदोषमें नेत्रोंका रंगभी मिलाहोता है, श्यामवर्ण टेढे तन्द्रा और मोहसे युक्त ॥ ३३ ॥

रौद्रंचरक्तवर्णंचभवेच्चक्षुस्त्रिदोषतः ।
एकंचक्षुर्यदाभीमंद्वितीयंमीलितंभवेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-रौद्र लालवर्णके नेत्र त्रिदोषसे होते हैं जब एक नेत्र भयंकर और दूसरा मुंदाहुआ हो मिचा रहै ॥ ३४ ॥

त्रिभिर्दिनैस्तथारोगीसयातियममन्दिरम् ।
ज्योतिर्विहीनंसहसारोगिणोयस्यलोचनम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-ऐसा रोगी तीन दिनमें मरजाता है, जिस रोगी के नेत्र सहसा प्रकाशहीन होजाँय ॥ ३५ ॥

ईषत्कृष्णंसनियतंप्रयातियमशासनम् ।
सरक्तंकृष्णवर्णंचरौद्रंचप्रेक्षतेयदा ॥ ३६ ॥

अर्थ-कुछएक श्यामवर्ण हो वह अवश्य मरजाताहै जब रक्तवर्ण कृष्णवर्ण और रौद्र दृष्ट होने लगे अर्थात् लाल, काला और रौद्रवर्णके रूप वस्तुओंका दीखने लगे॥ ३६ ॥

एतैर्लिंगैर्विजानीयान्मृत्युमेवनसंशयः ।
एकदृष्टिरचैतन्योभ्रमस्फुरिततारकः ॥ ३७ ॥

अर्थ-तो इन चिह्नोंसे रोगीकी मृत्यु जाननी इसमें संदेह नहीं जिसकी एक दृष्टि होजाय अर्थात् टकटकी बांधकर देखनेलगे, भ्रमहो, नेत्रकी तारका स्फुरायमान होजाय (अचेतनता प्राप्त होजाय) ॥ ३७ ॥

एकरात्रेणनियतंपरलोकपदंव्रजेत् ॥ ३८ ॥

अर्थ-तो ऐसा रोगी एकही रात्रिमें मरजाता है ॥ ३८ ॥

अथ साध्यव्याधिनिरूपणम् ।

निद्रानाशोनिशायांप्रभवतिचतथाकंठकूपेबलासो ।
देहेदाहोतिसूक्ष्मोलघुतरधमनीप्रस्खलंतीचजिह्वा ॥
हीयंतेयस्यशीघ्रंबलदहनमनःशक्तिध्वंसेन्द्रियांगा-
स्तद्भेपज्यंवदन्तिस्मरणमिदबुधाः केवलंरामना-
म्नाम् ॥ ३९ ॥

अर्थ-रातमें नींद न आवे कंठमें घरघर शब्द श्वास रुके देहमें दाह हो नाडीकी गति सूक्ष्म और मन्दतर हो जाय जिह्वा स्खलित होजाय जिसका बलसे रहित मन हीन होजाय व्याकुलहो इंद्रियोंकी शक्ति ध्वंस होजाय विद्वानों और वैद्योंने ऐसे रोगीकी ओषधि केवल रामनामका स्मरणही कही है अर्थात् ऐसा रोगी चिकित्साके योग्य नहींहै ॥ ३९ ॥

अथ ज्वराधिकारः ।

यतस्समस्तरोगाणांज्वरोराजेतिविश्रुतः ।
अतोज्वराधिकारोत्रप्रथमंपरिलिख्यते ॥ ४० ॥

अर्थ-सम्पूर्ण रोगोंका राजा ज्वर कहा है इस कारण सब रोगोंसे पहले ज्वरका अधिकार लिखतेहैं ॥ ४० ॥

अथ वातज्वरः ।

वेपथुर्विषमोवेगःकंठोष्ठमुखशोषणम् ।
निद्रानाशःक्षवस्तम्भोगात्राणांरौक्ष्यमेवच ॥ ४१ ॥

अर्थ-कंप विषमवेग कंठ ओठ और मुखका सूखना निद्राका नाश छींकका रुकना शरीरमें रूखापन ॥ ४१ ॥

शिरोरुग्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यंगाढविड्कता ।
भवन्तिविविधावातवेदनावातसुत्तता ॥ ४२ ॥

अर्थ-शिरपीडा, शरीरमें हडफूटन, विरसना, मलका गाढा होना, नींद तथा औरभी अनेक प्रकारकी वेदना बालसे होतीहैं ॥ ४२ ॥

पिडिकोद्वेष्टनंकणस्वनोवक्त्रकषायता।
ऊरुसादोहनुस्तम्भोविश्लेषःसंधिजानुनोः ॥ ४३ ॥

अर्थ-फुनसी निकलना, कानोंमें गुन गुन शब्द सुनाई आना, मुख कसैला होना, हृदयमें पीडा, ठोढीका रहजाना, जंघाकी संधियोंका विश्लेषहोना ॥ ४३ ॥

शुष्ककासोवमिर्लोमदन्तहर्षौश्रमभ्रमौ।
अरुणंनेत्रमूत्रादितृट्प्रलापोष्णकामिता ॥ ४४ ॥

अर्थ-सूखी खांसी, वमन, रुयेंखडे होजाना, दंतहर्ष, श्रम, भ्रम, नेत्र और मूत्रादिका लाल वर्ण होजाना, प्यास लगना, बेसमझे बक उठना ॥ ४४ ॥

शूलाध्मानौजृंभणंचभवत्यनिलजेज्वरे ॥ ४५ ॥

अर्थ-शूल, अफारा, जंभाईका आना, यह लक्षण वातज्वरमें होतेहैं ॥ ४५ ॥

अथ पित्तज्वरः।

वेगस्तीक्ष्णोतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः।
कण्ठौष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥ ४६ ॥
प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्छादाहोमदस्तृषा।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक्पैत्तिकेभ्रमएवच ॥ ४७ ॥

अर्थ-तीक्ष्णवेग, अतिसार, निद्रा, थोडा वमन, कंठ, ओष्ठ, मुख, नासिका इनका पकना और प्रस्वेदका होना,

प्रलाप, मुखका स्वाद कटु होना, मूर्च्छा, दाह, मद, तृषा, विष्ठा, मूत्र, नेत्र, त्वचाका पीलाहोना, भ्रम यह लक्षण पित्तज्वरमें होते हैं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

अथ श्लेष्मज्वरः।

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता ।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तम्भस्तृप्तिरथापिवा ॥ ४८ ॥
गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोतिनिद्रता ।
अंगेषुपिडकाःशीताःप्रसेकश्छर्दितंद्रिके ॥ ४९ ॥
कण्डूःप्रलापउष्णाभिलापितावह्निमार्दवम् ।
प्रतिश्यायोरुचिःकासःकफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता ॥५०॥

अर्थ-स्तम्भपन, थमताहुआ वेग, आलस्य, मुखका स्वाद मधुर, मूत्र पुरीष श्वेतवर्ण, शरीरका जकडना तृप्ति सीहोनी॥४८॥शरीरमें भारीपन, शीत लगना, उत्क्लेद (सचर्लई), रुऐंका खड़ा होजाना, बहुत नींदका आना, अंगोंमें छोटी २ पिडिकाओंका उत्पन्न होना, शीत, प्रसेक, वमन और तन्द्राका होना ॥ ४९ ॥ खुजली, प्रलाप (बेसमझे बक उठना), गरम वस्तुकी अभिलाषा होनी, अग्निका द्रव होना (मन्दाग्नि), श्वास, अरुचि, खांसी, नेत्रोंमें श्वेतता यह लक्षण कफज्वरके हैं ॥ ५० ॥

अथ वातपित्तज्वर ।

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहःस्वप्ननाशःशिरोरुजा ।
कंठास्यशोषोवमथूरोमहर्षोरुचिस्तमः ॥ ५१ ॥
पर्वभेदश्चजृम्भाचवातपित्तज्वराकृतिः ॥

अर्थ-तृष्णा, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्राका नाश, शिरमें

पीडा, कंठ सूखना, वमन होना, रुएँका खडा होना, अरुचि, तम ॥ ५१ ॥ ग्रंथियोंमें पीडा, जँभाईका आना यह वात पित्तज्वरके लक्षण हैं ॥

अथ वातश्लेष्मज्वरः ।

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच ॥ ५२ ॥
शिरोग्रहःप्रतिश्यायःकासःस्वेदाप्रवर्त्तनम् ।
सन्तापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ ५३ ॥

अर्थ-स्तंभपना, हडफूटन, निद्रा, भारीपन, ॥ ५२ ॥ शिरमें पीडा, जुकाम (पीनस), खांसी, पसीनेका न आना, सन्ताप और मध्यवेगका होना, वातकफज्वरके लक्षण हैं ॥ ५३ ॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वरः ।

लिप्ततिक्तास्यतातन्द्रामोहःकासोरुचिस्तृषा ।
मुहुर्दाहोमुहुःशीतंपित्तश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ ५४ ॥

अर्थ-लिप्त और तीखा मुख, तन्द्रा, मोह, खांसी, अरुचि, तृषा, वारंवार गरमी और वारंवार सरदी लगे यह पित्तकफज्वरके लक्षण हैं ॥ ५४ ॥

अथ सन्निपातज्वरः ।

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसन्धिशिरोरुजा ।
सस्रावेकलुषेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने ॥ ५५ ॥

अर्थ-क्षणमें दाह, क्षणमें शीत, हड्डीसंधि और शिरमें पीडा आंसू सहित कालेलाल भीतरको घुसे नेत्र होने॥५५॥

सस्वनौसरुजौकर्णौकण्ठःशूकैरिवावृतः ॥
तन्द्रामोहौप्रलापश्चकासःश्वासोरुचिर्भ्रमः ॥ ५६ ॥

अर्थ-कानोंमें पीडा, और गुन २ शब्द सुनाई आना

तथा कंठके भीतर सीकरोमेरेकी समान घिरजाने, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, कास, श्वास, अरुचि, भ्रम, होने ॥ ५६ ॥

परिदग्धाखरस्पर्शाजिह्वास्रस्तांगतापरम् ।
ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥ ५७ ॥

अर्थ-सब ओरसे दग्धरूप और खरखरे स्पर्शवाली जीभका होना तथा अंगोंका स्खलित होना, कफसे मिलेहुए रक्त पित्तका थूकना ॥ ५७ ॥

शिरसोलोठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिराद्दर्शनमल्पशः ॥ ५८ ॥

अर्थ-शिरका डुलाना, तृष्णा, निद्राका नाश, हृदयमें पीडा, स्वेद, मूत्र, पुरीषका बहुतकालमें किञ्चित् दर्शन ५८

कृशत्वंनातिगात्राणांसततंकण्ठकूजनम् ।
कोठानांश्यावरक्तानांमण्डलानांचदर्शनम् ॥ ५९ ॥

अर्थ-शरीरका अतिकृश न होना, कण्ठमें निरन्तर शब्द होना, कोठोंके काले लाल मण्डलोंका दीखना (अर्थात् शरीरमें मंडलाकार कालेलाल मण्डलोंका होजाना)॥५९॥

मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ।
तद्वच्छीतंमहानिद्रादिवाजागरणंनिशि ॥ ६० ॥

अर्थ-मूकपन, स्रोतोंका पकना, पेटमें भारीपन, इसी प्रकार शीतका लगना, दिनमें महानिद्रा और रात्रिमें जागना ॥ ६० ॥

सदावानैववानिद्रामहास्वेदोतिनैववा ।
गीतनर्त्तनहास्यादिविकृतेहाप्रवर्तनम् ॥ ६१ ॥
चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥ ६२ ॥

अर्थ-सदा सोना, अथवा निद्राका किंचित् भी न होना महापसीनेकाआना अथवा नहीं आना, गीत, नाच, हास्यादिमें, बुरी चेष्टा करलेना॥६१॥दोषोंके चिरकालमें पाक हो जानेसे ज्वरकी आकृतिवाला सन्निपात होता है ॥६२॥

अथ ज्वरे लंघनकारणम्

ज्वरेलंघनमेवादावुपदिष्टमृतेज्वरात्
क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमादिजात् ॥ ६३ ॥

अर्थ-क्षय, पवनविकार, भय, क्रोध, काम, शोक, श्रम इन कारणोंसे जो ज्वर न हुआहो तो और ज्वरोंमें प्रथम लंघन कराना चाहिये ॥ ६३ ॥

नलंघयेन्मारुतजेज्वरेचक्षयोद्भवेतिक्षुधिमानसेच ।
नगुर्विणीदुर्बलबालवृद्धभीरूंस्तृपार्त्तानपिसोर्द्ध्ववातान् ॥

अर्थ-वातज्वर, क्षय, बुभुक्षित, गर्भवती, दुर्बल, बालक, वृद्ध, भीरु, तृषासे आर्त तथा उर्ध्ववातवाले पुरुषोंको लंघन न करावे ॥ ६४ ॥

दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता ।
नहिदोपक्षयेकश्चित्सहतेलंघनंक्वचित् ॥ ६५ ॥

अर्थ-जो मनुष्य लंघनको सहन करलेताहै यह शक्ति दोषोंहीकी है दोषक्षय होनेपर कोईभी कभी लंघनको नहीं सहसक्ता है ॥ ६५ ॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः ।
श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकप्रपद्यते ॥ ६६

अर्थ-सातरातमें वातज्वर, दशरातमें पित्तज्वर और बारहदिनमें कफज्वरका पाक होजाताहै ॥ ६६ ॥

आसप्तरात्रंतरुणंज्वरमाहुर्मनीषिणः ।
मध्यंद्वादशरात्रंतुपुराणमतउत्तरम् ॥ ६७ ॥

अर्थ-बुद्धिमानोंने ज्वरको सातरात्रितक तरुण कहाहै बारहदिनतक मध्य और इसके उपरान्त पुराना (जीर्ण) कहाहै ॥ ६७ ॥

तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणहरीयतः ।
तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-प्यास सबके अधिक महाघोर होके शीघ्रही प्राणोंको हरतीहै इसकारण प्यासेको प्राणधारणके निमित्त अवश्य पानी देना चाहिये ॥ ६८ ॥

तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुंचति ।
अतःसर्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवारयेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ-प्यासा मोहको प्राप्त होताहै और मोहित होनेसे प्राण छोडदेताहै इसकारण सबही अवस्थाओंमें जल देना निषेध करना नहीं ॥ ६९ ॥

क्षीणेचमधुमेहेचपानीयंमंदमाचरेत् ।
मूर्च्छापित्तोष्मदाहेषुविषोत्थेचमदात्यये ॥ ७० ॥

अर्थ-क्षीण और मधुप्रमेहवालेको थोडा पानी पीना उचितहै मूर्छा, पित्तोष्ण, दाह, विषके उपद्रव, मदात्यय (उन्माद) ॥ ७० ॥

श्रमक्लमपरीतेषुमार्गोत्थेवमथौतथा ।
ऊर्द्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतमंभःप्रशस्यते ॥ ७१ ॥

अर्थ-श्रम और क्लेदसे व्याप्त मार्गचलनेसे उत्पन्नहुए वमनमें रक्तपित्तके ऊर्ध्व प्राप्त होनेमें शीतलजल देना उचित है ॥ ७१ ॥

उष्णजलाधिकारः।

नवज्वरेप्रतिश्यायेपार्श्वशूलेगलग्रहे।
सद्यःशुद्धौतथाध्मानेव्याधौवातकफोद्भवे ॥ ७२ ॥

अर्थ-नवीन ज्वर, जुखाम, पार्श्वशूल, गलग्रहरोग, शीघ्रशुद्धि, अफारा, वातकफसे उत्पन्न हुई व्याधिमें ॥७२॥

अरुचिंग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ।
हिक्कायांस्नेहपानेचपिबेदुष्णजलंनरः ॥ ७३ ॥

अर्थ-अरुचि, संग्रहणी, गुल्म, श्वास, कास, विद्रधि (बद), हिचकी और स्नेहपानमें मनुष्यको गरम जल पीना चाहिये ॥ ७३ ॥

यत्क्वाथ्यमानंनिर्वेगंनिःफेनंनिर्मलंजलम्।
अर्द्धावशिष्टंभवतितदुष्णोदकमुच्यते ॥ ७४ ॥

अर्थ-जो औटाया हुआ वेगरहित फेनरहित निर्मल जल है और औटते २ आधा रहगया है वह उष्णोदक कहाता है ॥ ७४ ॥

कफमेदोनिलामघ्नंदीपनंवस्तिशोधनम्।
कासश्वासज्वरहरंपथ्यमुष्णोदकंसदा ॥ ७५ ॥

अर्थ-उष्णोदक कफ, मेद और वातरोगका हरनेवाला, दीपन, वस्तिशोधक, कास, श्वास, ज्वरका हरनेवाला सदा पथ्य है ॥ ७५ ॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्धकेनवा।
अथवाक्कथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ-आठवाँअंश शेषरखनेसे चौथा अंश अथवा आधा शेषरखनेसे अथवा औटानेसेही उष्णोदक सिद्ध होताहै ७६

तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनंतुपित्तजित् ।
त्रिपादहीनंश्लेष्मघ्नंपाचनंदीपनंलघु ॥ ७७ ॥

अर्थ-चौथाई कम होजानेसे वातको दूर करता है आधा रहनेसे पित्तको जीतता है त्रिपाद हीन होनेसे कफनाशक, पाचन, दीपन और लघु होजाता है ॥ ७७ ॥

द्वन्द्वजेसन्निपातेचज्वरेपथ्यंतदार्तिजित् ॥
शारदंचार्द्धपादोनंपादहीनंतुहेमनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-द्वन्द्वज और सन्निपातज्वरमें उष्णोदक पथ्य और रोगनाशक है, शरद्ऋतुमें अर्द्धपादहीन हिमऋतुमें चौथाई कम ॥ ७८ ॥

शिशिरेचवसन्तेचग्रीष्मेचार्द्धावशेषितम् ।
विपरीतेऋतौतद्वत्प्रावृष्यष्टावशेषितम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-शिशिर वसन्त और ग्रीष्ममें आधारहाहुआ पथ्य है,ऋतुके बदलनेमें और वर्षाऋतुमें अष्टमांश शेष रहा जल देना चाहिये ॥ ७९ ॥

ज्वरादौलंघनंप्रोक्तंज्वरमध्येतुपाचनम् ।
ज्वरान्तेरेचनंदद्यादेतज्ज्वरचिकित्सितम् ॥ ८० ॥

अर्थ-ज्वरकी आदिमें लंघन करावे, मध्यमें पाचन दे, ज्वरान्तमें रेचनदे यह ज्वरकी चिकित्सा है ॥ ८० ॥

नागरंदेवकाष्ठंचधान्याकंबृहतीद्वयम् ।
दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितानांज्वरापहम् ॥ ८१ ॥

अर्थ-सोंठ, देवदारु, धनियां, दोनों कटेरी यह बराबर भाग छदाम २भर लेकर ज्वरपाचनको ज्वरवालोंको इसका पाचन देना चाहिये, यह ज्वर दूरकरताहै ॥ ८१ ॥

किराताब्दामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
सस्थिराकलसीविश्वैःक्काथोवातज्वरापहः ॥ ८२ ॥

अर्थ-चिरायता, नागरमोथा, गुरच, नेत्रवाला, दोना कटेरी, गोखरू, शालपर्णी, पिठवन, सोंठ यह सब बराबरले इनका काढा देनेसे वातज्वर दूर होता है ॥ ८२ ॥

कट्फलेन्द्रयवारिष्टतिक्तामुस्तैः शृतंजलम् ।
पाचनंदशमेह्निस्यात्तीव्रेपित्तज्वरेनृणाम् ॥ ८३ ॥

अर्थ-कायफल, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, कुटकी, नागर मोथा यह जलमें औटाकर देनेसे दशमें दिन तीव्र पित्तज्वर भी शान्त होजाता है ॥ ८३ ॥

गुडूचीनिंबधान्याकंपद्मकंचन्दनान्वितम् ।
एपसर्वज्वरंहन्तिगुडूच्यादिस्तुपाचनः ॥ ८४ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमकी छाल, धनियाँ, पद्माक, लाल-चन्दन यह गुडूची आदिका पाचन देनेसे सम्पूर्ण ज्वरको दूर करता है ॥ ८४ ॥

हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः ।
बीजपूरशिफापथ्यानागरग्रन्थिकैःशृतम् ॥ ८५ ॥
सक्षारंपाचनंश्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे ॥ ८६ ॥

अर्थ-बिजौरेकी जड, सोंफ, छोटीहरड, सोंठ, पीपलामूल इनका काढाकर जवाखार मिलाय बारह दिनके उपरान्त कफज्वरमें, देनेसे ज्वर पचता है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

दुरालभापर्प्पटकप्रियंगु-
भूनिम्बवासाकटुरोहिणीनाम् ॥
क्काथंपिबेच्छर्करयासमेतं
तृष्णान्वितेपित्तभवज्वरेऽपि ॥ ८७ ॥

अर्थ-जवासा, पित्तपापडा, फूलप्रियंगु,भूनिम्ब, अडूसा, कुटकी इनका काढा मिश्री डालकर पिये तो तृष्णा और पित्तज्वरकी शान्ति होतीहै ॥ ८७ ॥

पटोलपत्रनिःक्काथोमधुनामधुरीकृतः ।
तीव्रपित्तज्वरामर्दीपित्ततृड्दाहनाशनः ॥ ८८ ॥

अर्थ-पटोलपत्रके काढेमें शहद डालकर पीनेसे तीव्र पित्तज्वर, पित्त, तृषा, दाहका नाश करताहै ॥ ८८ ॥

गुडूच्यामलकैर्युक्तः केवलोवापिपर्प्पटः ।
पित्तज्वरंहरेत्तूर्णंदाहशोषंभ्रमान्वितम् ॥ ८९ ॥

अर्थ-गिलोय आमलेके साथ केवल पित्तपापडा पान करनेसे शीघ्रही पित्तज्वर, दाह, शोष और भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ ८९ ॥

लोध्रामृतोत्पलापद्मसारिवानांसशर्करः ।
क्काथः पित्तज्वरंहन्यादथवापर्प्पटोद्भवः ॥ ९० ॥

अर्थ-लोध, गिलोय, नीलोफर, पुहकरमूल, सारिवा इनका काथ कर मिश्री डालकर पानकरनेसे पित्तज्वर नष्ट होताहै अथवा पित्तपापडेके साथ मिश्री पान करे ॥ ९० ॥

पर्प्पटामृतधात्रीणांक्काथः पित्तज्वरंजयेत् ।
द्राक्षारग्वधयोश्चापिकाश्मर्यस्याथवापुनः ॥ ९१ ॥

अर्थ-पित्तपापडा, गिलोय, आमला इनका काढा कर पीनेसे पित्तज्वर नष्ट होताहै। दाख अमलतास अथवा खंभारीके काढेसे पित्तज्वरका नाश होता है ॥ ९१ ॥

एषपर्प्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः ।
किंपुनर्यदियुंजीतचंदनोदीच्यनागरैः ॥ ९२ ॥

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको नाश करताहै। यदि लाल चंदन नेत्रवाला और सोंठ साथ दिया जाय तो क्या कहना है ॥ ९२ ॥

विश्वपर्पटकोशीरधायचंदनसाधितम् ।
दद्यात्सुशीतलंवारितृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥ ९३ ॥

सोंठ, पित्तपापडा, उशीर (खस), धनियां, लाल चंदनसे सिद्ध किया काढा शीतलकर देनेसे प्यास, छर्दि, ज्वर, दाह दूर होताहै ॥ ९३ ॥

पर्प्पटाब्दामृतोदीच्यकिरातैस्साधितंजलम् ।
पंचभद्रमिदंप्रोक्तंवातपित्तज्वरापहम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-पित्तपापडा, नागरमोथा, गिलोय, नेत्रवाला भुनिंबसे साधित किया जल पंचभद्र कहलाताहै । यह वातपित्तज्वरका दूर करनेवाला है ॥ ९४ ॥

त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षाटरूपकैः ।
शृतमंबुहरेत्तूर्णंवातपित्तोद्भवंज्वरम् ॥ ९५ ॥

अर्थ-त्रिफला, सेमल, रायसन, अमलतास, अडूसा इनको बराबर ले काढा कर पिलानेसे वातपित्तज्वर दूर होता है ॥ ९५ ॥

क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकषायःपौष्करस्यच ।
कफवातादिकेपेयोज्वरेवापित्रिदोषजे ॥ ९६ ॥

अर्थ-भटकटैया, सोंठ, गिलोय तथा पुहकरमूलका काढा कफवातकी अधिकतामें तथा, त्रिदोषज्वरमें देना चाहिये ॥ ९६ ॥

आरग्वधकणामूलमुस्तातिक्ताभयाकृतः ।
क्वाथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवम् ॥ ९७ ॥

अर्थ-अमलतासका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, बडी हरड, इनका काढा पान करनेसे शीघ्रही वातकफज्वर दूर होता है ॥ ९७ ॥

अमृतारिष्टकटुकामुस्तेन्द्रयवनागरैः ।
पटोलचंदनाभ्यांचशृतंपिप्पलिचूर्णयुक् ॥ ९८ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, पटोलपात, लाल चन्दन इनका काढा पीपलके चूर्ण सहित पीनेसे ॥ ९८ ॥

अमृताष्टकमेतत्तुपित्तश्लेष्मज्वरापहम् ।
पटोलंचंदनंमूर्वापाठातिक्तामृतागणः ॥ ९९ ॥

अर्थ-यह अमृताष्टक पित्त कफ ज्वरका दूर करनेवाला है। पटोलपात, लाल चन्दन, मूर्वा, पाठा, कुटकी, गिलोय यह लेकर ॥ ९९ ॥

पित्तश्लेष्मज्वरच्छर्दिदाहकंडूविषापहः ।
पटोलंपिचुमंदंचत्रिफलामधुकंबला ॥ १०० ॥

अर्थ-इन औषधोंका काढा पित्तश्लेष्मज्वर, छर्दि, दाह, खुजली और विषका दूर करनेवाला है। पटोलपात, नीमकी छाल, त्रिफला, मुलेटी, खरैटी ॥ १०० ॥

साधितोयंकषायःस्यात्पित्तश्लेष्मोद्भवेज्वरे ॥ १०१ ॥

अर्थ-इनका काढा पित्तश्लेष्मज्वरमें देना चाहिये ॥ १०१ ॥

रामायणे लंकाकांडे ।

लंकायामुत्तरेकोणेकुमुदोनामवानरः ।
तस्यस्मरणमात्रेणनश्यत्येकाहिकोज्वरः ॥ १०२ ॥

अथ-मंत्र । लंकाके उत्तर कोनमें कुमुद नाम वानरहै उस के नामस्मरणमात्रसे प्रतिदिन आनेवाला ज्वर नष्ट होता है ॥ १०२ ॥

अयंश्लोकःपिप्पलपत्रपृष्ठभागेसमतया
मण्डलाकारेणलिखित्वाज्वरदिवसेज्वरा
गमनात्पूर्वमेवप्रदर्शनीयः ॥ १०३ ॥

अर्थ-यह श्लोक पीपलके पत्तेकी पीठपर समानतासे मण्डलाकारसे लिखै, ज्वरके दिन ज्वर आनेसे पहले दिखलाना चाहिये ॥ १०३ ॥

पटोलारिष्टमृद्वीकाशम्याकत्रिफलावृषैः ।
क्वाथएकाहिकंहन्तिशर्करामधुसंयुतः ॥ १०४ ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नीमकीछाल, दाख, साया, त्रिफला, अडूसा इनका काढा मिश्री, शहत मिलाकर पीवै तो एकाहिक ज्वर दूर होता है ॥ १०४ ॥

द्राक्षापटोलनिम्बाब्दशक्राह्वत्रिफलाशृतम् ।
जलंजंतुःपिबेच्छीतमन्येद्युज्वरशान्तये ॥ १०५ ॥

अर्थ-मुनक्का, पटोलपत्र, नीमकीछाल, नागरमोथा, इन्द्रजौ, हरड, बहेडा, आमला इनका काढा कर पीनेसे दूसरें दिन आनेवाला ज्वर शान्त होता है ॥ १०५ ॥

पटोलेन्द्रयवानंतापथ्यानंतामृताजलम् ।
ज्वरंसततकंपानान्निहन्त्याशुप्रयोजितम् ॥ १०६ ॥

अर्थ-पटोल (परवल), इन्द्रजौ, जवासा, हरड, जंवासा, गिलोय इनका काढा कर पीनेसे शीघ्र निरन्तर आनेवाला ज्वर शान्त होजाताहै ॥ १०६ ॥

उशीरंचन्दनंमुस्तंगुडूचीधान्यनागरम् ।
अम्भसाक्वथितंपेयंशर्करामधुयोजितम् ॥
ज्वरेतृतीयकेपुंसांतृष्णादाहसमन्विते ॥ १०७ ॥

अर्थ-खस, लाल चन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनियाँ, सोंठ इनका काढाकर मिश्री और शहद मिलाकर पीवे तो तृष्णा दाहवाली तिजारीको शान्त करता है ॥ १०७ ॥

लंकाधीश्वरदर्पहाजनकजाशोकांतकृल्लक्ष्मण-
प्राणत्राणकरोजितेन्द्रियगणःसश्रीहनूमान्भटः ।
एतैर्नामभिरादराद्रुपसियोनिद्रालयेकीर्त्तये-
त्तस्यैवोत्तरतिद्रुतंक्षणगतोनित्यंतृतीयज्वरः १०८॥

अर्थ-अथवा यह लिखा श्लोक विचारकर पढ़े । रावणके दर्पहरनेवाले, जानकीके शोकनाशक लक्ष्मणके प्राणदाता, जितेन्द्रिय, महावीर इन नामोंसे जो आदरपूर्वक प्रातःकाल और रात्रिको सोते समय कीर्तन करता है उसका तीसरे दिन आनेवाला ज्वर शान्त होता है ॥१०८॥

प्रातश्श्लोकाश्चपाठेनतृतीयज्वरनाशकाः ।
स्थिरासामलकीदारुशिवावृषमहौषधैः ॥ १०९ ॥
शृतशीतंजलंदद्यात्सितामधुविमिश्रितम् ।
चातुर्थिकज्वरेतीव्रेमंदेचैवाथपावके ॥ ११० ॥

---

१ जवासा और औषधियोंसे दूसरे ।

अर्थ-अथवा प्रातःकालमें पठनीय श्लोकोंके पाठ करनेसे तिजारी नष्ट होती है.शालपर्णी, आंवला, देवदारु, हरड, अडूसा और सोंठ इनका काढाकर शहत और मिश्री मिलाकर पीनेसे कठिन चौथिया ज्वर और मन्दाग्नि दूर होती है ॥ १०९ ॥ ११० ॥

अगस्तिपत्रस्वरसेननस्यंनिहन्तिचातुर्थिकमुग्रवीर्यम् ॥

अर्थ-अगस्त वृक्षके पत्तेकी नस्य देनेसे कठिन चातुर्थिक ज्वर नष्टहोजाता है ॥ ११ ॥

मुस्ताक्षुद्रामृताशुण्ठीधात्रीक्वाथःसमाक्षिकः ।
पिप्पलीचूर्णयुक्सर्वविषमज्वरनाशनः ॥ १२ ॥

अर्थ-नागरमोथा, कटेरी, गिलोय, सोंठ और आमले इन पांच औषधोंका काढा शहत और पीपलका चूर्ण डालकर पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥ १२ ॥

जीरकंगुडसंमिश्रंविषमज्वरनाशनम् ॥
अग्निमांद्यंजयेच्छीघ्रंवातरोगापहंमतम् ॥ १३ ॥
मधुनावाभयालीढाहन्त्याशुविषमज्वरम् ।
क्षीरेणपंचवृद्ध्याचदुग्धान्नाशीकणांपिबेत् ॥ १४ ॥

अर्थ-जीरा और गुड मिलाकर खानेसे विषमज्वर दूर होता है इससे मन्दाग्नि और वातरोगदूर होताहै ॥१३॥ शहदके साथ हरड खानेसे विषमज्वर दूरहोताहै दूधके साथ, क्रमसे बढाताहुआ पांचसे प्रारम्भकरके, पीपलको पानकरे ॥ १४ ॥

यावत्पूर्णंशतंतस्यास्तावत्तैवापकर्पयेत् ॥
वातास्रश्वासपाण्डुर्शोगुल्मशोथोदरापहम् ॥ १५ ।

अर्थ-पीपल सौतक बराबर बढाता जाय सो पूर्णहो जानेसे उसीप्रकार क्रमसे कमतीकरता जाय तो वात अस्र, श्वास, पाण्डु, बवासीर, गुल्म, शोथ, और उदररोग दूर होताहै ॥ १५ ॥

विषमज्वरजिद्वृष्यंपिप्पलीवर्द्धमानकम् ।
भृङ्गराजजटाबद्धाकर्णेरात्रिज्वरापहा ॥ १६ ॥

अर्थ-यह वर्द्धमान पिप्पली विषमज्वरको दूर करनेवाली और बलको बढाती है भांगरेकी जटाकानमें बांधनेसे रात्रिमें आने वाला ज्वर नष्ट होताहै ॥ १६ ॥

सर्वज्वरहरीश्वेतमंदारस्यचमूलिका ।
तुरंगरिपुमूलंवाश्वेतंशीतज्वरापहम् ॥ १७ ॥

अर्थ-श्वेत मन्दारकी जड भी सम्पूर्ण ज्वर दूर करती है तथा कनेरकी जड वा श्वेत कनेरकी जड शीतज्वरको हरने-वाली है ॥ १७ ॥

विवस्त्रेणोद्धृतादेवीमूलिकाकर्णबंधनात् ।
चातुर्थिकज्वरंहन्तिद्रोणपुष्पीरसांजनात् ॥ १८ ॥

अर्थ-नग्नहोकर सहदेवीकी जडको कानमें बांधनेसे वा गूमा घासका रस आंखोंमें आंजनेसे चौथियाज्वर नष्ट होताहै ॥ १८ ॥

कटुकारोहिणीमुस्तंपिप्पलीमूलमेवच ।
हरीतकीचतत्तोयमामाशयगतेज्वरे ॥ १९ ॥

अर्थ-कुटकी, हरड, नागरमोथा, पीपलामूल, हरडका काढा आमाशयमें प्राप्तहुए ज्वरको दूरकरता है ॥ १९ ॥

पाकलाह्वश्वगंधाचशतपुष्पासर्षपैस्समम् ।
एतदुद्वूलनंश्रेष्ठंवातपित्तज्वरापहम् ॥ १२० ॥

अर्थ-कूठ, असगंध, सौंफ, सरसाका उद्धूलन (अर्थात इनका चूर्णकर शरीरमें मलना) वातपित्तज्वर नाशकरने में श्रेष्ठ है ॥ १२० ॥

कट्फलंपौष्करंकृष्णाशृंगीचमधुनासह ।
श्वासकासज्वरहरःश्रेष्ठोलेहःकफांतकृत् ॥ २१ ॥

अर्थ-कायफल, पुष्करमूल, पीपल, काकडासींगी इनका चूर्ण बनाकर शहदके साथ चाटनेसे श्वास खाँसी ज्वर और कफ दूर होता है ॥ २१ ॥

शृतशीतमथितपेपितमदनफलालेपनंसद्यः ।
अपनयतिदाहमुग्रंज्वरजंहस्तांघ्रिमूर्द्धतले ॥ २२ ॥

अर्थ-मैनफलको पीसकर औटावे फिर उसे ठंडाकरके लेप करे तो ज्वरका अतिदाह, नष्ट होता है इसका मालिस हथेली तलुए और शिरमें करना चाहिये ॥ २२ ॥

उत्तानसुप्तस्यगभीरमध्यं
कांस्यादिपात्रंविनिधायनाभौ ॥
तत्रांबुधाराबहुलापतन्ती
निहन्तिदाहंत्वरितंसुशीता ॥ २३ ॥
बदरीपल्लवोत्थेनफेनेनारिष्टकेनवा ॥ २४ ॥

अर्थ-पुरुषको सीधा लिटाकर उसकी नाभीपर बीचमें गहरा इसप्रकारका एक कांसीका पात्र रखकर उसके ऊपर शीतलजलकी धारा छोडे तो बहुत शीघ्र दाह दूर होकर शीतलता होती है ॥ २३ ॥ तथा बेरीके पत्ते पानीमें डालकर मथे उससे उठे फेन को अंगमें लगावे तो दाह शान्तहो ॥ २४ ॥

अथ चूर्णानि ।

धात्रीशिवासैन्धवचित्रकाणां
कणायुतानांसमभागचूर्णम् ॥
जीर्णज्वरारोचकवह्निमान्द्ये
सविड्ग्रहेशस्तमितिप्रतिज्ञा ॥ २५ ॥

अर्थ-(चूर्ण) आमला, हरड, सेंधानमक, चीता, पीपल यह, सब औषधि बराबर भागलेकर इनका चूर्ण बना लें यह जीर्णज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, दस्तका न होना इतने रोगोंको दूर करना है यह प्रतिज्ञा है ॥ २५ ॥

तालीसोपणविश्वपिप्पलितुगाः कर्षाभिवृद्धास्त्रुटिः
कर्षार्द्धात्वगपिप्रकामधवलाद्वात्रिंशकर्षासिता ॥
तालीसाद्यमिदंसुचूर्णमरुचाबाध्मानमन्दानलः
श्वासच्छर्द्यतिसारशोषणसरप्लीहज्वरेशस्यते ॥ २६ ॥

अर्थ-तालिसपत्र १ तोला, कालीमिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले, वंशलोचन ५ तोले, दालचीनी छोटी इलाची छः छः मासे, मिश्री ३२ तोले इन सबको कूट पीस चूर्णकरे यह तालीसादि चूर्ण है यह अरुचि, अफारा, मन्दाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोष, संग्रहणी, प्लीहा और ज्वरको शान्त करना है ॥ २६ ॥

अथ तैलम् ।

लाक्षाहरिद्रामंजिष्ठाकल्कैस्तैलंविपाचयेत् ।
षड्गुणेनारनालेनदाहशीतज्वरापहम् ॥ २७ ॥

अर्थ-लाख, हल्दी, मँजीठ इनकी लुगदीकर औषधियोंसे चौगुना तेल ले छः गुनी कांजीमें सिद्ध करे यह मलनेसे दाह और शीतज्वरका नाश करता है ॥ २७ ॥

लाक्षामूर्वाहरिद्रेद्वेमंजिष्ठाचेन्द्रवारुणी ।
बृहतीसैन्धवंकुष्टंरास्नामांसीशतावरी ॥ २८ ॥
आरनालाढकेनात्रतैलप्रस्थंविपाचयेत् ।
तैलमंगारकंनामसर्वज्वरविनाशनम् ॥ २९ ॥

अर्थ-लाख, मूर्वा, हलदी. दारुहलदी, मँजीठ, इन्द्रायन, भटकटैया, सेंधा, कूठ, रास्ना, जटामांसी, शतावरी यह औषध कूट २५६ तोले कांजीमें ६४ तोले तेल सिद्ध करले यह अंगारकनाम तेल सब ज्वरोंका नाश करता है २८॥२९॥

अथ रस ।

शुद्धसूतंविपंगंधंधूर्त्तबीजंत्रिभिः समम् ।
चतुर्णांद्विगुणंव्योपंहेमक्षीरीविभावितम् ॥ १३० ॥
चतुर्वारंघर्मशुष्कंचूर्णंगुंजाद्वयोन्मितम् ।
जम्बीरकस्यमज्जाभिरार्द्रकस्यरसेनवा ॥ ३१ ॥
महाज्वरांकुशोनामसमस्तज्वरनाशनः ।
एकाहिकंद्व्याहिकंवात्र्याहिकंवाचतुर्थकम् ।
विषमंचत्रिदोपंचहन्तिसद्योनसंशयः ॥ ३२ ॥

अर्थ-शुद्ध पारा ३मासे, शुद्ध कराहुआ विष तीन मासे, गंधक तीन मासे, धत्तूरेके बीज ३मासे इन चारोंसे दूना त्रिकुटा ले चूकेकी भावना दियाहुआ यह चार बार धूपमें सुखावै इन सबको एकत्र कर चूर्ण करे जम्बीरी अथवा अदरखके

रसमें दोरत्ती दे यह महाज्वरांकुश रस सम्पूर्ण ज्वर दूर करता है एकांतरा, तिजारी, चातुर्थिकज्वर, विषमज्वर त्रिदोषज्वर सब नष्ट होजाते हैं इसमें संदेह नहीं ॥१३०॥३१॥३२॥

अथ सन्निपातचिकित्सा ।

त्रिरात्रंपंचरात्रंवादशरात्रमथापिवा ।
लंघनंसन्निपातेषुकुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥ ३३ ॥

अर्थ-तीनदिन पांचदिन दशदिन सन्निपातमें लंघन कराने चाहिये जबतक आरोग्यता नहो ॥ ३३ ॥

शालिपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
बिल्वाग्निमंथस्योनाकपाटलाकाश्मरीयुतैः ॥ ३४ ॥
दशमूलमिदंख्यातंक्वथितंतज्जलंपिवेत् ।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंसन्निपातज्वरापहम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-शालपर्णी, पिठवन, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, गोखरु, बेलगिरी, अरनी, टेंटू, कंभारी, और पाढल यह दशमूलका काढा पीपलीका चूर्ण डालकर पीवै तो सन्निपातज्वर दूर होता है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

भूनिंबदारुदशमूलमहौषधाब्द-
तिक्तेन्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः ।
तन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहमोह-
श्वासादियुक्तमखिलंज्वरमाशुहन्यात् ॥ ३६ ॥

अर्थ-भूनिम्ब (चिरायता), देवदारु, दशमूल, सोंठ, कुटकी, इन्द्रजो, धनियां, गजपीपल इनका काढा कर पिलानेसे तन्द्रा, प्रलाप, खांसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास और सम्पूर्ण ज्वर शीघ्र दूर होतेहैं ॥ ३६ ॥

भार्ङ्गीभूनिम्बनिंबैर्जलदकटुवचाव्योपवासाविशाला
रास्नानंतापटोलीसुरतरुरजनीपाटलाटिंटुकीभिः ॥
ब्राह्मीदार्वीगुडूचीत्रिवृदतिविषयापुष्करत्रायमाणैः
पाठाव्याध्रीकलिंगैस्त्रिफलसठियुतैःकल्पितैस्तुल्यभागैः

अर्थ-भारंगी, चिरायता, नीमकी छाल, नागरमोथा, कुटकी, वच, त्रिकुटा, (सोंठ, मिर्च, पीपल), अडूसा, इन्द्रायन, रास्ना, जवासा, पटोलपात, देवदारु, हलदी, पाढल, जलसिरस, ब्राह्मी, दारुहल्दी, गिलोय, श्वेत निशोथ, अतीस, पुष्करमूल, त्रायमाण, पाठ, इन्द्रजौ, हरड, बहेडा, आमला और कचूर यह सब बराबर भागले काढाकरे॥३७॥

क्वाथोद्वात्रिंशकाख्यस्त्रिकदशकलितान्सन्निपातान्निहंति
श्वासंशूलंचहिक्कांश्वसनगुदरुजाध्मानमन्यारुजश्च ॥
ऊरुस्तंभांत्रवृद्धीगलगदमरुतंसर्वसंधिग्रहार्तिं
हन्यादेकोपिसिंहोगजनिवहमिवप्रस्फुरद्वारिधारम् ३८

अर्थ-यह द्वात्रिंशक नामवाला क्वाथ तेरह प्रकारके सन्निपातोंको दूर करता है, श्वास, शूल, हिचकी, गुदरोग, अफारा तथा दूसरे रोग, ऊरुस्तंभ, अंत्रवृद्धि, गलरोग, वातरोग, संधिपीडा इत्यादि रोगोंको यह एकही क्वाथ इसप्रकार दूर करता है जैसे एकही सिंह अनेक हाथियोंको नष्ट करता है ॥ ३८ ॥

दार्व्यंवुदौतिक्तफलत्रिकंच
क्षुद्रापटोलीरजनीसनिंबम् ॥
क्वाथंविदद्याज्ज्वरसन्निपाते
निश्चेतनेपुंसिविबोधनाय ॥ ३९ ॥

अर्थ-देवदारु, नागरमोथा, कुटकी, त्रिफला, कटेरी, दारुहलदी, नीमकी छाल, इनका काढा कर सन्निपातसें अचेत हुए पुरुषके ज्ञानके निमित्त देना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथावलीहिका ।

कट्फलंपौष्करंशृंगीव्योषंजासश्चकारवी ।
श्लक्ष्णंचूर्णीकृतंह्येतन्मधुनासहलेहयेत् ॥ १४० ॥
एषावलेहिकाहंतिसन्निपातंसुदारुणम् ।
हिक्कांश्वासंचकासंचकण्ठरोधंचघर्घरम् ॥ ४१ ॥
एतद्योज्यंकफोद्रेकेचूर्णमार्द्रकजैरसैः ।
किराततंनागरंमुस्तंगुडूचीचेत्ययंगणः ॥ ४२ ॥

अर्थ-कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासींगी, त्रिकटु (सोंठ मिर्च पीपल), अजवायन इनका चूर्णकर शहतके साथ चाटे । यह अवलेहिका दारुण सन्निपातको दूर करतीहै. हिचकी, श्वास, कास, कंठरोध, घर्घरको दूर करती है, जब कफकी अधिकता हो तो इन औषधियोंका चूर्ण कर अद्रखके रसमें चाटे अथवा चिरायता, सोंठ, नागरमोथा गिलोय यह औषधी सेवन करे ॥ १४० ॥ ४१॥ ४२॥

अथोद्धूलनम् ।

भूनिंबकारवीतिक्तावचाकट्फलजंरजः ।
उद्धूलनंत्रिदोषोत्थेस्वेदाभिष्यंदिनिज्वरे ॥ ४३ ॥

अर्थ-चिरायता, अजवायन, कुटकी, बच, कायफल इनका चूर्ण कर उद्धूलन करनेसे त्रिदोष, स्वेद, अभिष्यन्दि ज्वरमें हितकारक है ॥ ४३ ॥

मरीचंपिप्पलीशुण्ठीपथ्यालोध्रंसपुष्करम् ।
भूनिंबंकटुकाकुष्ठंकारवीन्द्रयवाःशटी ॥ ४४ ॥

अर्थ-काली मिर्च, पीपल, सोंठ, हरड, लोध, पुष्करमूल, चिरायता, कुटकी, कूठ, अजवायन, इन्द्रजौ, कचूर ४४ ॥

एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ।
प्रस्वेदेकंठरोधेचसंधिमर्दनमिष्यते ॥
एतदुद्धूलनंश्रेष्ठंसन्निपातहरंपरम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-यह बराबर भाग लेकर इनका बारीक चूर्ण करले प्रस्वेद, कंठरोध, संधिपीडामें हितकारी है यह उद्धूलन अत्यन्त श्रेष्ठ और सन्निपातका हरनेवाला है ॥ ४५ ॥

स्वेदोद्गमेभ्रष्टकुलत्थचूर्णैरुद्धूलनंशस्तमितिब्रुवन्ति ४६॥

अर्थ-जब बहुत पसीना आवै तो भुनी कुलथीके चूर्णसे उद्धूलन करना परम श्रेष्ठ है ॥ ४६ ॥

अथ नस्यम् ।

मधूकसारसिन्धूत्थवचोपणसमंकृतम् ।
श्लक्ष्णमपिचनस्यंहिकुर्यात्संज्ञाप्रबोधकम् ॥ ४७ ॥

अर्थ-महुएका सार, सैंधानिमक, वच, मिर्चकाली इन सबको बराबर ले गरम पानीमें पीस नस्य देनेसे अचेतन मनुष्यको संज्ञा प्राप्त होती है ॥ ४७ ॥

अथ कर्णिकसन्निपातः ।

ज्वरस्यपूर्वंज्वरमध्यतोवा
ज्वरांततोवाश्रुतिमूलशोथः ।
क्रमादसाध्यःखलुकृच्छ्रसाध्यः
सुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४८ ॥

अर्थ-कर्णिक सान्निपातका लक्षण-सन्निपात ज्वरसे पहले, मध्यमें वा अन्तमें कर्णके मूलमें सूजन होती है, यह क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होती है, ऐसा मुनिजन कहते ह ॥ ४८ ॥

कुलत्थंकट्फलंशुण्ठीकारवीचसमांशका ।
सुखोष्णंलेपनंकार्यंकर्णमूलेमुहुर्मुहुः ॥ ४९ ॥

अर्थ-कुलथी, कायफल, सोंठ, अजवायन यह सब बराबर किंचित गरम जलके साथ कानकी जडमें वारंवार लेप करे ॥ ४९ ॥

बीजपूरकमूलानिअग्निमंथस्तथैवच ।
नागरंदेवकाष्ठंचरास्नाचित्रकपेशितम् ॥ १५० ॥
प्रलेपनमिदंश्रेष्ठंकर्णशोथविनाशनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-बिजौरा, नींबूकी जड, अरणी, सोंठ, देवदारु, रास्ना, चित्रक इन सबको पीसकर कर्णमूलपर लेप करे तो सूजन दूरहो ॥ १५० ॥ ५१ ॥

अथ सन्निपातरस ।

त्र्यूषणंपंचलवणंशतपुष्पाद्विजीरकम् ।
क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेषांपलत्रयम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, पांचोंनोन, सौंफ, दोनों जीरे, तीनों क्षार यह सब बराबर भाग लेकर इनका चूर्णकर तीन पल ले ॥ ५२ ॥

शुद्धसूतंमृतंचाभ्रंगंधकंचपलंपलम् ॥
आर्द्रकस्यरसेखल्वेदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ५३ ॥

अर्थ-शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, गंधक यह एक २ पल लेकर एक दिन पर्यन्त अद्रखके रसमें खरल करे ॥ ५३ ॥

वीरभद्रोरसः ख्यातोमाषैकःसन्निपातजित् ।
चित्रकार्द्रकसिंधूत्थमनुपानजलैःसह ॥ ५४ ॥

अर्थ-यह वीरभद्ररस है एक उरदके बराबर खानेसे सन्निपात दूर होता है इसके ऊपर चित्रक, अदरख, सेंधानोंन जलके. साथ पिये ॥ ५४ ॥

पथ्यंक्षीरौदनंदेयंद्विवारंचरसोहितः ॥ ५५ ॥

अर्थ-तथा दूधभातका पथ्य दोबार दे तो हितकरै ५५॥

ज्वरस्य दशोपद्रवाः ।

श्वासोमूर्च्छारुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसारविड्ग्रहाः ।
हिक्काकासांगभेदाश्चज्वरस्योपद्रवादश ॥ ५६ ॥

अर्थ-श्वास, मूर्छा, अरुचि, छर्दि, तृष्णा, अतिसार, दस्तका न आना, हिचकी, खांसी, हडफूटन यह ज्वरके दश उपद्रव हैं ॥ ५६ ॥

त्रिकटुशटीघनशृंगीगर्दभशाकंचपौष्करंसपदि ।
श्वासंजयति पयोधरसुधालतामूलजलपीतम् ॥५७॥

अर्थ-त्रिकुटा, कपूर, नागरमोथा, काकडासींगी, गर्दभशाक (भारंगी)पुष्करमूल यह कसेरु, गिलोय, मालकांगनी, पीपलामूलके साथ पीनेसे श्वास ठीक होताहै ॥५७॥

मूर्च्छायामिहकृतमालहारहूराकट्वीभिस्सन-
लदपर्पटाभयाभिः । संशीतंजलमिति सिद्ध-
मिष्टभुक्तं लेहोवामधुत्रिवृतासिताभयाभिः ॥५८॥

अर्थ-मूर्छामें अमलतासका गूदा, मुनका, कुटकी, खस, पित्तपापडा, हरड इनका चूर्णकर शीतल जलके साथ सेवन करनेसे अथवा शहत, निशोथ, मिश्री हरड यह चाटनेसे मूर्छा दूर होतीहै ॥ ५८ ॥

अरुचौतुतिक्तकरसैरसकृत्कवलग्रहस्तथाम्लरसैः ॥
मधुलवणमातुलुंगीफलकेसरधारणंवक्त्रे ॥ ५९ ॥

अर्थ-अरुचिमें तिक्तरस अथवा अम्लरसका कवल (ग्रास) धारण करना, अथवा शहद, लवण, बिजोरा, नींबू और नारियलकी छाल मुखमें धारण करनी चाहिये ॥ ५९ ॥

मयूरपिच्छस्यमषीसुकृष्णा
मध्वन्वितावाकतुकासधातुः ।
क्वाथोगुडूच्याः समधुः सुशीतः
पीतः प्रशान्तिवमनस्यकुर्यात् ॥ १६० ॥

अर्थ-मोरपंखकी चन्द्रिकाको जलाकर शहदके सा चाटे अथवा कुटकीका सेवन करे अथवा शहद डाल कर गिलोयका काढा शीतल कर पिये तो वमनकी शान्ति होतीहै ॥ १६० ॥

दंतशठबीजपूरकदाडिमबदरैः सचुक्रैर्वदने ।
लेपोजयतिपिपासामथरजतगुटीमुखांतःस्था॥ ६१ ।

अर्थ-जम्भीरी नींबू, बिजोरानींबू, अनार, बेर, चूक (अम्लवेत) इनका लेप मुखमें करनेसे पिपासा दूर होतीहै अथवा चांदीकी डेली मुखमें डालनेसे प्यास शान्त होतीहै ॥ ६१ ॥

पाठामृतापर्प्पटमुस्तविश्वाकिराततिक्तेन्द्रयवा-
न्विपाच्य । पिबञ्जयत्येवजवेनसर्वज्वरातिसारान-
तिदुर्निवारान् ॥ ६२ ॥

अर्थ-पाढ, गिलोय, पित्तपापडा, मोथा, सोंठ, चिरायता, कुटकी, इन्द्रजौ इनको बराबर ले इनका काढा करदेनेसे कठिन और दुर्निवार ज्वरातिसार दूर होताहै ६२।

१ नीमर, गिलोय, अडूस आदि ।

विबंधेवातजित्कर्मकुर्यादन्नानुलोमनम् ।
मलंप्रवर्त्तयेदाशुतीक्ष्णाभिःफलवर्त्तिभिः ॥ ६३ ॥

अर्थ-यदि विबंध अर्थात रोगीको दस्त न आताहो वात पेटमें घुमड रहीहो तो वातजित् और वातको नीचेकी ओर प्रवृत्त करनेवाले कर्म करने चाहिये और फलवर्ती अर्थात हाथके अँगूठेके प्रमाण मोटी और चिकनी मलके प्रवृत्त करनेवाली वर्ती गुदामें घी लगाकर प्रवेश करै । तीक्ष्ण फलवर्ती द्वारा शीघ्र मलको बाहर निकालै ॥ ६३ ॥

नीरेणसिंधूत्थरजोतिसूक्ष्मं
नस्येननूनंविनिहन्तिहिक्काम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-जलमें थोडा समुद्रलवण डालकर नास लेनेसे हिचकी दूर होतीहै ॥ ६४ ॥

कासेकणाकणामूलकलिंगफलजंरजः ।
सविश्वभेषजंलिह्यान्मधुनावावृषाद्रसम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-खांसीमें पीपल, पीपलामूल, इन्द्रजौ, बहेडा और सोंठ इनको बराबर ले शहदके साथ अथवा विसौंटेके रससे सेवन करनेसे खांसी दूर होतीहै ॥ ६५ ॥

दाहेज्वराविरोधेनयथाशास्त्रंहिमोविधिः ।
ज्वरेशान्तेप्रणश्यन्तिसद्यःसर्वेप्युपद्रवाः ॥ ६६ ॥

अर्थ-ज्वरदाहमें ज्वर बिगड न जाय इस प्रकार शास्त्रानुसार हिम (शीतल औषधी) की विधि करनी चाहियें ज्वरके शान्त होनेमें सब उपद्रव शान्त होजातेहैं ॥ ६६ ॥

विष्णुंसहस्रमूर्धानंचराचरपतिंप्रभुम् ।
स्तुवन्नाम्नांसहस्रेणज्वरान्सर्वानपोहति ॥१६७॥

इतिश्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते
वैद्यरत्ने प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

अर्थ-विष्णु सहस्र शिर चराचरपति प्रभु नारायणकी सहस्रनामसे स्तुति करनेसे सब ज्वर नष्ट होजाते हैं १६७॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-मिश्रकृतभाषाटीकायां प्रथम प्रकाशः ॥ १ ॥

अथातीसारः ।

संशम्यापांधातुरग्निंप्रवृद्धः
शकृन्मिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः ।
सरत्यतीवातिसारंतमाहु-
र्व्याधिंघोरंपड्विधंतंवदन्ति ॥ १ ॥

अर्थ-जलके धातु जो कफ, रस, मूत्र, स्वेद, मेद, पित्त और रक्त इत्यादि अधिक बढकर जठराग्निको मन्दकर वायुसे प्रेरित मलको वारंवार गिराते हैं इस घोर व्याधिका नाम वैद्योंने अतीसार कहाहै. एक एक दोषसे तीन, एक सन्निपातसे, एक शोकसे, एक आमसे इस प्रकार छः प्रकारका है ॥ १ ॥

नागरंधान्यमुस्तंचवालकंबिल्वमेवच ।
आमशूलविबंधघ्नंपाचनंवह्निदीपनम् ॥ २ ॥

अर्थ-सोंठ, धनियाँ, नागरमोथा, नेत्रवाला, बेलगिरी इन औषधोंका पाचन देनेसे आमशूल विबन्ध दूर होताहै, यह पाचन और अग्नि दीप्त करनेवाला है ॥ २ ॥

पित्तेधान्यचतुष्कंतुशुंठीत्यागाद्ददंतिहि ।
ह्रीबेरातिविषामुस्तबिल्वनागरधान्यकम् ॥ ३ ॥

अर्थ-यदि पित्तसे अतिसार हो तो धनियाँ आदि चार औषधी लेनी सोंठ न डालनी ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा, बेलकी गिरी, सोंठ, धनियाँ ॥ ३ ॥

पिबेत्पिच्छाविबंधघ्नंशूलदोषमपाचनम् ।
सरक्तंहन्त्यतीसारंसज्वरंवाथविज्वरम् ॥ ४ ॥

अर्थ-इसके पान करनेसे विबंध, शूलदोष और अपाचन दूर होताहै, रक्तातीसार ज्वरके सहित अथवा बिनाज्वरके हो वह दूर होताहै ॥ ४ ॥

कुटजोवह्निचूर्णश्चमधुनासहलेहितम् ।
चिरोत्थितमतीसारंपक्वंपित्तास्रजंजयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ-कुरैया, चीतेका चूर्ण कर शहद के साथ चाटनेसे चिरकालसे हुए अतिसार और पक्व पित्तातिसार को दूर करता है ॥ ५ ॥

कुटजातिविषामुस्तंवालकंलोध्रचंदनम् ।
धातकीदाडिमंपाठाक्वाथंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-कुरैया, अतीस, नागरमोथा, सुगंधवाला, लोध, लाल चन्दन, धवईके फूल, दाडमी, पाढ इनका काढा कर शहद के साथ पीनेसे ॥ ६ ॥

दाहेरक्तेसशूलेचआमरोगेचदुस्तरे ।
कुटजाष्टमिदंख्यातंसर्वातीसारनाशनम् ॥ ७ ॥

अर्थ-दाह, रक्तशूल, दुस्तर आमरोग दूर होते हैं, यह कुटजाष्टक सब अतीसारोंका नाश करनेवाला है ॥ ७ ॥

स्निग्धंघनंकुटजवल्कमजंतुजग्ध-
मादायतत्क्षणमतीवचपोथयित्वा ।

जंबूपलाशपुटतंडुलतोयसिक्तं
बद्धंकुशेनचबहिर्वनपंकलिप्तम् ॥ ८ ॥

अर्थ-कुरैयाकी छाल चिकनी मोटी कठिन कीडे आदिकी खाई न होय वह ताजी लेकर कूटे फिर उसके गूदीको जामुनके पत्तोंमें लपेट उसपर ढाकके पत्ते लपेटकर चावलके धोवनसे पले और लुगदीको छिडकर फिर लपेट बाहर कुशसे लपेट ऊपर गाढीमट्टीका लपेट करे ॥ ८ ॥

सुस्विन्नमेतदवपीडचरसंगृहीत्वा
क्षौद्रेणयुक्तमतिसारवतेप्रदद्यात् ।
कृष्णात्रिपुत्रमतपूजितएषयोगः
सर्वातिसारहरणेस्वयमेवराजा ॥ ९ ॥

अर्थ-फिर इस गोलेको पुटपाकके अनुसार पकावे जब पक जाय तब उसको निचोडके रस निकाल ले और सहद मिलाकर परिभाषामें कही मात्राके अनुसार अतिसारवालेको देना यह कुटजपुटपाकका योग सब अतिसारोंके हरनेमें स्वयं राजा है यह कृष्णात्रिपुत्रका श्रेष्ठ मत है ॥ ९ ॥

एरण्डमूलस्वरसेनशुण्ठ्याः
कल्कंसुपिष्टंपुटपाकयोगे ।
क्षौद्रेणलीढंविनिहन्तिशीघ्र-
मामातिसाररुचिशूलमुग्रम् ॥ १० ॥

अर्थ-अण्डकी जडके स्वरसमें सोंठका कल्क पुटपाकके योगसे पीसकर बनावे यह सहदके साथ चाटनेसे आमातिसार अरुचि और शूलको दूरःकरना है ॥ १० ॥

यथाश्रुतं भवेद्वारितथानीमारनाशनम् ॥ ११ ॥

अर्थ-जितना औटाहुआ जलहो इसी प्रकार अतिसारका नाश होता है ॥ ११ ॥

अथ संग्रहणी।

अतीसारेनिवृत्तेपिमंदाग्नेरहिताशिनः।
भूयःसंदूषितोवह्निर्ग्रहणीमपिदूषयेत् ॥ १२ ॥
सादुष्टाबहुशोभुक्तमाममेवविमुंचति।
पक्वंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धंमुहुर्द्रवम् ॥ १३ ॥

अर्थ-अतीसार निवृत्त होनेपर अथवा मध्यहीमें जो मन्दाग्निवाला पुरुष अहित पदार्थोंका सेवन करलेता है, तो उस आहारसे दूषितहो अग्नि ग्रहणीको दूषित करता है, (पक्वाशय और आमाशयके बीचमें एक अन्न ग्रहण करनेवाली आंतको ग्रहणी कहते हैं) वह वातादि दोषसे दुष्ट हुई ग्रहणी भोजन किये आहारको कच्चाही बहुतसा बाहर निकला देती है, अथवा पीडा और दुर्गन्धि सहित पकेको भी कभी बँधा और कभी पतला गिराती हैं इसे ग्रहणी कहते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

धान्यबिल्वबलाशुण्ठीशालिपर्णीशृतंजलम्।
स्याद्वातग्रहणीदोषे सानाहेसपरिग्रहे ॥ १४ ॥

अर्थ-धनियाँ,बेलगिरी वरिआरी, सोंठ, शालपर्णी इनका काढाकर देनेसे वात अतिसार आनाह रोग दूरहोते हैं१४॥

मुस्तावालकलोध्रवत्सकवृकीविश्वारलश्रीमदा-
लज्जामोचरसाभ्रकौटजविषाचूर्णस्तुगंगाधरः।
पीतस्तंदुलवारिमाक्षिकयुतःकर्षोन्मितोवाह्निका-
मुग्रांचग्रहणींनिहन्तिसहसासर्वातिसारामयान् १५॥

अर्थ-नागरमोथा. नेत्रबाला. लोध. कुरैयाकी छाल.पाठा.

सोंठ (अरलु) टेंट, बेलकी गिरी, लज्जालु, मोचरस, आमकी गुठली , इन्द्रजौ, अतीस, इनको बराबर ले गंगाधर चूर्ण बनावे यह चूर्ण चावलोंके धोवनके साथ शहद मिलाकर एककर्ष मात्र पान करनेसे तीक्ष्ण संग्रहणी और सब अतीसारके रोगोंको शान्त करता है ॥ १५ ॥

नागरातिविषामुस्तंधातकीसरसांजनम् ।
वत्सकत्वक्फलंबिल्वंपाठाकटुकरोहिणीम् ॥ १६ ॥
पिवेत्समांशतश्चूर्णंसक्षौद्रंतंदुलांबुना ।
पैत्तिकेग्रहणीदोषेरक्तंयच्चोपवेश्यते ॥ १७ ॥
अर्शांस्यथगुदेशूलंजयेच्चैवप्रवाहिकाम् ।
नागराद्यमिदंचूर्णंकृष्णात्रेयेणपूजितम् ॥ १८ ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा, धवईके फूल, रसोत, कुरैयाकी छाल, इन्द्रजौ, पाठ, बेलगिरी और कुटकी इनका चूर्ण चावलके धोवन और शहदके साथ पिये तो रक्तसहित पित्तग्रहणी नष्ट हो यह नागरादिचूर्ण कृष्णात्रेयनें कहा है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

शुद्धाहिफेनवलिसूतकपर्दभस्म-
हालाहलोपणविशुद्धसुवर्णबीजैः ॥
अंभोधिपंक्तिकरशैलधराष्टविंश-
त्यंशैर्विचूर्णिततमंग्रहणीकपाटः ॥ १९ ॥

अर्थ-शुद्ध अफीम ४ भाग, गंधक १० भाग, पारा २ भाग, कौडीकी भस्म ७ भाग, हालाहल १ भाग, शुद्ध धतूरेके बीज २० भागले सबका चूर्ण करे तो यह ग्रहणीकपाटरस हो ॥ १९ ॥

वल्लोस्यहन्तिमधुनासहजीरकेण
भुक्तोतिसारमपिसंग्रहणीसुदग्राम्।
आमंविपाच्यसहसाजनयत्यवश्यं
वैश्वानरंजठरवर्त्तिनमार्तिभाजः ॥ २० ॥

अर्थ-दो रत्ती रस शहद और जीरेके साथ सेवन करनेसे प्रबल संग्रहणी और अतिसारको दूरकर आमको पचाय अग्निको प्रज्वलित करता है ॥ २० ॥

भैषज्यमेकतःसर्वंग्रहण्यांतक्रमेकतः।
पथ्यंमधुरपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपनम् ॥ २१ ॥

अर्थ-संग्रहणीमें सर्व औषधि एक ओर और तक्र एक ओर है यह पथ्य पचनेमें मधुर और पित्तका कोप करनेवालाभी नहीं है ॥ २१ ॥

कषायोष्णविपाकित्वाद्वैशद्याचकफेहितम्।
वातेस्वाद्वम्लसांद्रत्वात्सद्यःक्रमविदाहितत् ॥ २२ ॥

अर्थ-यह कषाय उष्णविपाकी होनेसे तथा विशद होनेसे कफमें हितकारक है, वातमें स्वादु तथा अम्ल सान्द्र होनेसे तत्काल क्रम और दाहको दूर करता है ॥ २२ ॥

तावत्संवर्द्धयेत्तक्रंयावत्स्याद्बद्धविड्कता।
ततस्तद्ध्रासयित्वातदन्नंसंभोजयेत्क्रमात् ॥ २३ ॥

अर्थ-तबतक मट्ठेको बढाता रहे जबतक मलबन्धहो फिर उसे न्यून करताहुआ क्रमसे अन्नका सेवन करे ॥ २३ ॥

अथार्शः।

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चशोणितात्सहजानिच।
अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये ॥ २४ ॥

अर्थ-पृथक् २ तीनों दोष तीनों मिलके एक चौथा तथा रक्तसे पांचवा और सहज छटवाँ इस प्रकार बवासीर रोग छः प्रकारका है ॥ २४ ॥

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन् ।
मांसांकुरानपानादौकुर्वंत्यर्शांसिताञ्जगुः ॥ २५ ॥

अर्थ-त्वचा मांस और मेदको दूषित करके वातादि दोष अनेक प्रकारके मांसके अंकुरोंको गुदाआदिमें उत्पन्न करतेहैं उन अंकुरोंको अर्श कहतेहैं यह नासिका आदिमें भी होता है ॥ २५ ॥

मरिचमहौषधिचित्रकसूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः ।
सर्वसमोगुडभागःप्रोक्तोयंमोदकःप्रसिद्धफलः ॥
ज्वलनंज्वलयतिजाठरमुन्मूलयतिप्रभृतिगुल्मगदान् ।
निःशेपयतिश्लीपदमर्शांसिचनाशयत्याशु ॥ २६ ॥

अर्थ-कालीमिर्च १ भाग, सोंठ २ भाग, चित्रक ४ भाग जिमीकंद ८ भाग ऐसे एकसे एक दूना लेकर सबके समान १५ भाग गुड लेकर लड्डू बना सेवन करे। यह सूरण मोदक जठराग्निको प्रदीप्त करता है गुल्म और शूलादि श्लीपद और अर्शरोगोंको दूर करता है ॥ २६ ॥

शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलं
चूर्णीकृतंक्रमविवर्द्धितमेतदंत्यात ।
खादेन्नरःसमसितंगुदजाग्निमान्द्य-
गुल्मारुचिश्वसनकण्ठहृदामयेषु ॥ २७ ॥

अर्थ-सोंठ १ भाग, पीपल २ भाग, कालीमिर्च ३ भाग, नागकेशर ४ भाग, तेजपात ५, दालचीनी ६, तज ७, इला-

यची छोटी ८ भाग इसप्रकार क्रमसे बढ़ायेहुए इन औष-धोंका चूर्णकर उसकी बराबर मिश्री मिलाकर खाय तो बवासीर, मन्दाग्नि, गुल्म, अरुचि, श्वास, कंठरोग, हृदयरोग यह दूर होते हैं ॥ २७ ॥

चूर्णीकृताःषोडशसूरणस्यभागास्तदर्द्धंनवचित्रकस्य ।
महौषधार्द्धमरिचस्यचैकोगुडेनदुर्नामजयायपिण्डी २८

अर्थ-जिमीकंद चूर्णकिया हुआ १६ भाग, चीता आठ भाग, सोंठ २ भाग, काली मिर्च एकभाग यह एकत्र कर गुडके साथ खानेसे बवासीर रोग दूर होता है ॥ २८ ॥

तक्रंसकृष्णंपिबतांनराणांदुर्नामनामश्रवणंकुतःस्यात् ।
यथासर्वाणिकुष्ठानिहतःखदिरबीजकौ ।
तथैवार्शांसिसर्वाणिवृक्षकारुष्करौहतः ॥ २९ ॥

अर्थ-जो मनुष्य मट्ठेमें काली मिर्च डालकर पीते हैं उनको बवासीर नहीं रहती जिस प्रकार खैरसार, विजय-सार, सब कुष्ठोंको दूर करतेहैं, इसीप्रकार कुडे और भिला-वेका प्रयोग सब प्रकारसे अर्शरोग दूर करता है ॥ २९ ॥

हरिद्रायाःप्रयोगेणप्रमेहाइवषोडश ।
क्षाराग्निभ्यांनिवर्त्ततेतथाद्दश्यागुदोद्भवाः ॥३०॥

अर्थ-जैसे हरिद्राके प्रयोगसे सोलह प्रमेह नष्ट होते हैं इसीप्रकार क्षार और अग्निके प्रयोगसे बवासीरके मस्से नष्ट होजाते हैं ॥ ३० ॥

मृल्लिप्तंसौरणंकन्दंपक्त्वाग्नौपुटपाकवत् ।
दद्यात्सतैललवणंदुर्नामविनिवृत्तये ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिमीकंदको मिट्टीमें लपेटकर पुटपाककी विधिसे पकावे उसमें तेल और लवण मिलाकर देनेसे गुदाके मस्से नष्ट होते हैं ॥ ३१ ॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशारनवनीतशर्कराभ्यासात् ।
केशरदधिमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यंतिरक्तवहाः ३२॥

अर्थ-काल तिल और मक्खनके नित्य अभ्याससे तथा नागकेशर मक्खन मिश्रीके नित्य अभ्याससे अथवा दहीके पानी और मट्ठाके नित्य अभ्याससे बवासीरके मस्से शान्त होते हैं ॥ ३२ ॥

देवदालीकषायेणशौचमाचरतांनृणाम् ।
किंवातद्धूमसेवाभिःकुतःस्याद्गुदजांकुरः ॥ ३३ ॥

अर्थ-अथवा बन्दालीके काढेसे शौच करनेसे अथवा उसका धूम देनेसे बवासीरके मस्से नहीं रहते ॥ ३३ ॥

सिन्धूत्थंदेवदाल्याश्चबीजंकांजिकपेषितम् ।
गुदांकुरान्प्रलेपेनपातयेदुल्बणानपि ॥ ३४ ॥

अर्थ-सेंधालवण बन्दालके बीज कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे कठिन बवासीरके मस्से भी नष्ट होजातेहैं ३४

अथाजीर्णम् ।

प्रकृत्यारसशेषाद्वात्रिभिर्दोषैरपाकृतः ।
भवन्तिषड्जीर्णानिविषम्यादशनस्यच ॥ ३५ ॥
व्योषसिंधूत्थवलिभिरेकद्वित्रिलवैःकृतः ।
निंबाम्बुमर्दितंगाढंनाम्नाक्षुद्बोधनोरसः ॥ ३६ ॥
सपादटंकमात्रोयंभुक्तःक्षुत्कारकोभृशम् ।
आलिप्यजठरंप्राज्ञोहिंगुत्र्यूषणसैन्धवैः ॥ ३७ ॥

पथ्यापिप्पलिसंयुक्तंचूर्णंसौवर्चलंपिबेत्।
मस्तुनोष्णोदकेनाथमत्त्वादोषगतिंभिषक् ॥ ३८ ॥

अर्थ-स्वभावसे रस शेष रहनेसे तीनों दोषोंके विकारसे अथवा भोजनके विपरीत पनेसे अजीर्ण होता है, वह अजीर्ण छः प्रकारके हैं सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों एक तोला, सैंधानोन २ तोले गंधक ३ तोले, इन सबको कूट पीस नींबूके रसमें खरल करै यह क्षुद्बोधन रसहै इसके खानेसे भूख बढती है ३ मासेकी मात्रा है इससे बहुत भूख लगती है बुद्धिमान पेटके ऊपर हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, सैंधानोन गरम पानीसे पेटके ऊपर लेप करके दिनमें सो रहै तो सब अजीर्ण शान्त होजाता है। हरड, पीपल, सोंचरलौनका चूरन दहीकेपानीसे अथवा गरम पानीसे दोषका बलाबल देख पीनेको दे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

चतुर्विधमजीर्णंचमंदानलमथारुचिम्।
आध्मानंवातगुल्मंचशूलंचाशुनियच्छति ॥ ३९ ॥

अर्थ-इससे चारों प्रकारका अजीर्ण मन्दाग्नि अरुचि अफारा वात गुल्म और शूलका शीघ्र ही नाश होताहै ३९

त्रिकटुकमजमोदंसैन्धवंजीरके द्वे
समधरणिधृतानामष्टमोहिंगुभागः।
प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेत-
ज्जनयतिजठराग्निंवातरोगान्निहंति ॥ ४० ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, सैंधानमक, दोनों जीरे यह समान भाग ले इनसे आठवाँ भाग भूनी हींग ले यह चूर्ण घृतके साथ पहले ग्रासमें खाय तो जठराग्नि तीव्र होकर वातरोगों को दूर करती है ॥ ४० ॥

हिंगुभागोभवेदेकोवचाचद्विगुणामता ।
पिप्पलीत्रिगुणाज्ञेयाशृंगवेरंचतुर्गुणम् ॥ ५१ ॥
यवानीस्यात्पंचगुणाषड्गुणाचहरीतकी ।
चित्रकंसप्तगुणितंकुष्ठंचाष्टगुणंमतम् ॥ ५२ ॥
एतद्वातहरंचूर्णंपीतमामप्रशान्तये ।
पिबेद्दधामस्तुनावासुरयाकोष्णवारिणा ॥ ५३ ॥

अर्थ-हींग एकभाग, वच दो भाग, पीपली तीनभाग, अदरख चारभाग, अजवायन पांचभाग, हरड छःभाग, चीता सातभाग, कूठ आठभाग, यह औषधी एकत्र कर चूर्ण बनावै, यह चूर्ण वातहर, आमनाशक है. इसको दही के पानी अथवा गरम जलके साथ ले अथवा सुरा या लह सनके साथ ले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

सोदावर्त्तमजीर्णचप्लीहानमुदरंतथा ।
अंगानियस्यशीर्यन्तेविषंवायेनभक्षितम् ॥ ५४ ॥

अर्थ-उदावर्त,अजीर्ण,प्लीहा,उदररोग नष्ट होते हैं, जिसके अंग विशीर्ण होते हों अथवा जिसने विष भक्षण किया हो ५४

चूर्णमग्निमुखंनामसर्वोपद्रवमाहरेत् ।
हरीतकीभक्ष्यमाणानागरेणगुडेनवा ॥ ५५ ॥

अर्थ-यह अग्निमुखनाम चूर्ण सब उपद्रव दूर करता है। सोंठ और गुडके साथ हरड खानेसे ॥ ५५ ॥

सैन्धवोपहितावापिशीतत्वेनाग्निदीपनी ।
शुंठीचूर्णसमायुक्तंयवक्षारंसमालिहेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ-वा सैंधवके साथ खानेसे शीतमें अग्नि दीप्त करती है। जो सोंठके चूर्णके साथ जवाखार ॥ ५६ ॥

सर्पिषाप्रातरुत्थायनरोवह्निप्रदीपनम् ।
विजयापिप्पलीशुंठीत्रिसमंपरिकीर्त्तितम् ॥
अग्निसंदीपनंनृणांत्रिदोषामयनाशनम् ॥ ५७ ॥
सैन्धवसमूलमगधाचव्यानलनामहरीतक्यः ॥
क्रमवृद्धाग्निविवृद्धिंकरोतिवडवानलंचूर्णम्॥ ५८ ॥

अर्थ-घीके साथ प्रातःकाल उठकर खाय तो अग्नि प्रदीप्त होतीहै, भंग, पीपल, सोंठ यह मनुष्योंके त्रिदोष शान्त करने वाली हैं और अग्नि दीप्त करती हैं. यह तीनों बराबर लेकर सेवन करै. सैंधानिमक १ भाग, पीपलामूल २ भाग, पीपल ३ भाग, चव्य ४ भाग, चीतेकी छाल ५ भाग और जंगी हरड ६ भाग, इस क्रमसे इन औषधियोंका चूर्ण बनावै. यह वडवानल चूर्ण अग्निको बढाता है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

पथ्यानागरपिप्पलीसरुचकैःश्यामान्वितैःपंचभि-
श्चूर्णंपंचसमंसमस्तरुचिकृत्कामाग्निसंदीपनम् ॥
प्राणोत्साहविवर्द्धनंरुचिकरंप्लीहापहंगुल्मनुत् ।
प्रत्याध्मानगरोदरार्शशमनंचामेनिलेपूजितम् ॥५९॥

अर्थ-हरड, सोंठ, पीपल, काला नोंन, पीपलमूल यह पांचो वस्तु बराबर ले इनका चूर्ण कर सेवन करनेसे रुचि करनेवाला तथा कामाग्निको दीप्त करनेवाला है. प्राणमें उत्साह बढानेवाला, रुचि करनेवाला, प्लीहा गुल्म हरनेवाला प्रत्याध्मान गर उदर अर्शको शान्त करता, आम और वात रोगमें श्रेष्ठहै ॥ ५९ ॥

शुद्धंसूतंगंधकंचपलमानंपृथक्पृथक् ।
हरीतकीचद्विपलानागरस्त्रिपलःस्मृतः ॥ ६० ॥

कृष्णाचमरिचंतद्वत्तिंसधूत्थंत्रिपलंपृथक् ।
चतुष्पलाचविजयामर्द्दयेन्निम्बुकद्रवैः ॥ ६१ ॥
पुटानिसप्तदेयानिघर्ममध्येपृथक्पृथक् ।
अजीर्णारिरयंप्रोक्तःसद्योदीपनपाचनः ॥
भक्षयेद्द्विगुणंभक्ष्यंपाचयेद्रेचयेदपि ॥ ६२ ॥

अर्थ–शुद्धपारा४ तोले, गंधक५तोले, हरड८तोले, सोंठ १२ तोले, पीपल, मिर्च, सेंधानोन प्रत्येक बारह २ तोले, भांग १६ तोले इन सबका चूर्णकर धूपमें नींबूके रसकी सात पुटदे यह अजीर्णारि रस दीपन पाचनहै इसके सेवनसे मनुष्य दूना भोजन करनेलगताहै यह दस्तावर भी है ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

अथ विसूचिका ।

सूचीभिरिवगात्राणितुदन्संतिष्ठतेऽनिलः ।
यस्याजीर्णेनसावैद्यैर्विसूचीतिनिगद्यते ॥ ६३ ॥

अर्थ–जिस अजीर्णमें अंगमें वायु रहकर सुई छेदनेकीसी पीडा करै, वह उसको विसूचिका कहते हैं. इस रोगमें अपरिमित आहारवाले भ्रमित होते हैं ॥ ६३ ॥

दुष्टंतुभुक्तंकफमारुताभ्यां
प्रवर्त्तते नोर्द्धमधश्चयस्य ।
विलंबिकांतांभृशदुश्चिकित्स्या-
माचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः ॥ ६४ ॥

कुष्टसैन्धवयोःकल्कश्चुक्रतैलसमन्वितः।
विसूच्यांमर्दनंकोष्णंखलीशूलनिवारणम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-कूठ और सैंधवके कल्कमें चूका और तेल मिला कर विसूचिका रोगमें गरम २ मर्दन करे, यह खल्ली और शूलका नाशक है ॥ ६५ ॥

मातुलुंगीजटाव्योपनिशाबीजंकरंजकम्।
कांजिकेनांजनहन्याद्विसूचीमतिदारुणाम् ॥ ६६ ॥

अर्थ-बिजौरेकी जड, सोंठ, मिर्च, पीपल, हलदी, करंजके बीज इनका चूर्णकर कांजीके रसकी भावना दे गोलीकर छायामें सुखाय नेत्रोंमें अंजन करनेसे दारुण विसूचिकारोग शान्त होता है ॥ ६६ ॥

पथ्यावचाहिंगुकलिंगभृंगैः
सौवर्चलैःसातिविषैःसुचूर्णम्।
तुषांबुपीतंविनिहंत्यजीर्णं
शूलंविसूचीमरुचिंचसद्यः ॥ ६७ ॥

अर्थ-हरड, वच, हिंगु, इन्द्रजौ, भांगरा, सोंचरलोन और अतीस, धानकी भूसीके जलके साथ इस चूर्णको सेवन करनेसे शूल विसूचिका और अरुचि दूर होती है ६७॥

अथ कृमि.।

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःश्वसनंभ्रमः।
भक्तद्वेषोतिसारश्चसंजातकृमिलक्षणम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-पेटमें कृमि हुओंका लक्षण कहते हैं:- अंगमें ज्वर, शरीरका रंग विरंग, शूल, हृदयमें पीडाके भ्रम, अन्नमें द्वेष तथा अतिसार यह पेटमें कृमि होनेके लक्षण हैं ॥ ६८ ॥

दाडिमीत्वक्कृतःक्वाथस्तिलतैलेनसंयुतः ।
त्रिदिनात्पातयत्येवकोष्ठतःक्रिमिजालकम् ॥ ६९ ॥

अर्थ-दाडिमीके छिलकेका क्वाथ, तिलके तेलसे संयुक्तकर पानकरनेसे तीन दिनमें पेटसे कीडा निकालदेता है ॥६९॥

पारसीकयवानीकाःपीताःपर्युपितवारिणाप्रातः ।
गुडपूर्वाःकृमिजालंकोष्ठगतंपातयंत्याशु ॥ ७० ॥

अर्थ-प्रातःकाल उठकर गुड खाना फिर कुछ देरमें बासी पानीमें बांटकर खुरासानी अजवायन पिये तो कोठेसे उत्पन्न हुए कृमिको गिरा देता है ॥ ७० ॥

पालाशबीजस्यरसंपिवेद्वामधुसंयुतम् ।
लेह्यात्क्षौद्रेणवैडंगंचूर्णंवाक्रिमिकृंतनम् ॥ ७१ ॥

अर्थ-पालाशके बीजोंका रस शहदके साथ पिये अथवा बीजोंको बांटकर मट्ठेके साथ पियें तो कृमिरोगका नाश होगा ॥ ७१ ॥

अथ पाण्डुरोगः ।

पाण्डुरःश्वासकासार्त्तःपीतत्वङ्नखलोचनः ।
वम्यग्निसादश्वयथुसहितःपांडुरोगवान् ॥ ७२ ॥

अर्थ-श्वास काससे आर्त्तहुआ, पीतशरीर, नख और पीले नेत्रवाला, वमी, अग्निकी मन्दता, शोथयुक्त पुरुष पाण्डुरोगी कहाजाता है, वातादिदोष रक्तमें प्राप्तहो त्वचाको पाण्डुरंगको करदेते हैं ॥ ७२ ॥

द्विपञ्चमूलीक्वथितंसविश्वं
कफात्मकेपाण्डुगदेपिवेत्तम् ।

ज्वरेतिसारेश्वयथौग्रहण्यां
कासेऽरुचौकंठहृदामयेषु ॥ ७३ ॥

अर्थ-दशमूलको लेकर उसमें सोंठ मिलाय इनका काढा कर कफसे उत्पन्न हुए पाण्डुरोगमें पानकरे तो यह ज्वर, अतिसार, सूजन, संग्रहणी, कास, अरुचि, हृदयादि रोगोंमें हितकारी है ॥ ७३ ॥

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यानिम्बस्यवारसम् ।
प्रातःप्रातर्मधुयुतंकामलार्त्तःपिबेन्नरः ॥ ७४ ॥

अर्थ-त्रिफला, गिलोय, दारुहलदी, नीमका रस, प्रातः काल शहत मिलाकर पीनेसे कामलारोग नाश होता है ७४॥

अथ रक्तपित्तम् ।

क्षारकट्वम्लतीक्ष्णादेर्दग्धंपित्तंदहत्यसृक् ।
तदूर्ध्वाधोविलैर्यातिरक्तपित्तंतदुच्यते ॥ ७५ ॥

अर्थ-कटु अम्ल पदार्थ तथा तीक्ष्णक्षार आदिके सेवन करनेसे दग्ध होकर पित्त रुधिरको जलाता है तब वह रक्त ऊर्ध्व वा अधो अथवा दोनों मार्गसे निकलने लगता है, ऊर्ध्वगामी नासिका नेत्र कान मुखसे और अधोगामी लिंगयोनि गुदासे निकलता है ॥ ७५ ॥

पक्वोदुंबरकाश्मर्यपथ्याखर्जूरगोस्तनी ।
मधुनाहंतिसंलीढारक्तपित्तंनसंशयः ॥ ७६ ॥

अर्थ-पक्के कठूमरके फलका रस शहदके संग पिये खंभारी हरड, छुहारा अथवा दाख इनको शहदसे चाटे तो अवश्य रक्तपित्त शान्त होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ७६ ॥

मध्वाटरूषकरणैर्यदितुल्यभागौ
कृत्वानरःपिवतिपुण्यतरःप्रभाते ।
तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्य-
माशुप्रशाम्यतिजलैरिववह्निपुंजः ॥ ७७ ॥

अर्थ–शहद, अडूसा इन दोनोंको बराबर भाग लेकर जो मनुष्य प्रातःकालमें पान करता है उसका दारुण रक्तपित्तभी अवश्य शीघ्रतासे शान्त होजाता है, जैसे जलसे अग्नि शान्त होजाती है ॥ ७७ ॥

चन्दनंनलदंलोध्रमुशीरंपद्मकेशरम् ।
नागपुष्पंचविल्वंचभद्रमुस्तंसशर्करम् ॥ ७८ ॥
ह्रीबेरंचैवपाठाचकुटजोत्पलमेवच ।
शृंगवेरंचातिविषाधातकीसररसांजनम् ॥ ७९ ॥
आम्रास्थिजम्बूसारास्थितथामोचरसोपिच ।
नीलोत्पलंसमंगाचसूक्ष्मेलादाडिमीत्वचम् ८०॥
चतुर्विंशतिरेतानिसमभागानिकारयेत् ।
तंडुलोदकसंयुक्तंमधुनासहयोजयेत् ॥ ८१ ॥

अर्थ–लालचन्दन, जटामांसी, लोध, खस, कमलफूलका केसर नागकेसर वेलगिरी, नागरमोथा, मिश्री, ह्वीबेर, सोनापाठा, कुरैया, कमल, सोंठ, अतीस, धवके फूल, रसौत आमकी गुठली, जामुनकासार गुठली, मोचरस, नीलकमल, मंजीठ, छोटीइलायची, अनारका छिलका, इन चौंवीस औषधियोंको बराबर भागले और चावलके जलके संग शहदके साथ चाटे ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥

योगंलोहितपित्तानामर्शसांज्वरिणांतथा ।
मूर्च्छामदोपसृष्टानांतृष्णार्त्तानांप्रदापयेत् ॥ ८२ ॥

अतीसारंतथाछर्दिंस्त्रीणांचापिरजोग्रहे।
प्रच्युतानांचगर्भाणांस्थापनंपरिशिष्यते।
अश्विनोःसंमतोयोगोरक्तपित्तनिबर्हणः ॥८३॥

अर्थ-यह योग रक्तपित्त, अर्श,, ज्वर, मूर्छा, मद, तृष्णाको दूर करता है। अतिसार, छर्दि, स्त्रियोंको रजोधर्म न होता हो तथा गर्भ गिरताहो तो उसका स्थापन होजाता है, यह आश्विनेय संमत रक्तपित्तविनाशी योग रक्तपित्तका नाशकरनेवाला है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

अथ कासः।

प्राणोह्युदानमन्वेत्ययदोर्द्धमुपसर्प्पति ॥
तदासंजायतेकासःकंठहृन्नाभिकर्षणः ॥ ८४ ॥

अर्थ-जब अपने दोषोंसे कोपको प्राप्तहो प्राण उदानको साथ मिलकर ऊपरको गमन करताहै तब कंठ हृदय नाभि को आकर्षण कर खांसी उत्पन्न होतीहै ॥ ८४ ॥

पंचमूलीकृतःक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः॥
रसान्नमश्नतोनित्यंवातःकासश्चनश्यति॥ ८५ ॥

अर्थ-शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटीकटेरी, बडीकटेरी और गोखरू इन पांचोंकी जडको कूट पीपलीका चूर्ण मिलाय खानेसे वातकी खांसी दूर होती है ॥ ८५ ॥

हरीतकीकणाशुंठीमरिचंगुडसंयुतम्।
कासघ्नोमोदकःप्रोक्तःसचानलप्रदीपनः ॥ ८६ ॥

अर्थ-हरड, पीपल, सोंठ, मिर्च, गुड इनको बराबर लेकर मोदक बना ले यह कासहर मोदक है और अग्निको दीप्त करता है ॥ ८६ ॥

कट्फलंकत्तृणंभार्ङ्गीमुस्तंधान्यंवचाभया।
शुंठीपर्प्पटकंशृंगीसुराह्वंचजलेशृतम् ॥ ८७ ॥

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसंमिता ।
अर्द्धकर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मंचदाडिमान् ॥ ८८ ॥
एतच्चूर्णीकृतंयुंज्यादष्टकर्षगुडेनहि ।
शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्त्रेविधारयेत् ॥
अस्याःप्रभावात्सर्वेपिकासायांत्येवसंक्षयम् ॥८९॥

अर्थ-कायफल, पिठवन, भारंगी, मोथा, धनियाँ, वच, हरड, सोंठ, पित्तपापडा, काकडाशृंगी, देवदारु इन को जलमें औटाकर फिर उसमें मिर्च १ कर्ष, पिप्पली एककर्ष, जवाखार आधा कर्ष, दाडिम दोकर्ष, यह सब चूर्णकर आठकर्ष गुड मिलावै, शाण (४ मासे) प्रमाण गुटिका बनाकर मुखमें धरै, इसके प्रभावसे सब कास क्षय होजाती है ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

लवंगजातीफलपिप्पलीनां
भागान्प्रकल्प्याक्षसमानमानान् ।
पलार्द्धमेकंमरिचस्यदत्त्वा
पलानिचत्वारिमहौषधस्य ॥ ९० ॥

अर्थ-लौंग, जायफल, पीपल इनको बराबर भाग ले उसमें आधे पल काली मिर्च और चार पल सोंठ डाले९०॥

सितासमंचूर्णमिदंप्रसह्य
रोगाननेकान्प्रबलान्निहन्ति ।
कासज्वरारोचकमेहगुल्म-
श्वासाग्निमांद्यग्रहणीप्रदोषान् ॥ ९१ ॥

कर्ष एकतोला । २ पल ४ तोला ।

अर्थ-इनकी बराबर मिश्री लेकर चूर्ण बनाले तो यह कास, ज्वर, अरोचक, प्रमेह, गुल्म, श्वास, मंदाग्नि, ग्रहणी-आदि अनेक प्रबल रोग दूर करता है ॥ ९१ ॥

अथ श्वासः।

यैर्निमित्तैर्भवेद्धिक्काश्वासस्तैरेवजायते।
हरीतकीकणाशुण्ठीमरिचंगुडसंयुतम् ॥ ९२ ॥
श्वासघ्नोमोदकःप्रोक्तः परंचानलदीपनः।
दशमूलीकृतःक्काथःपौष्करेणावचूर्णितः ॥ ९३ ॥

अर्थ-जिन कारणोंसे खांसी होतीहै उन्हींसे श्वास होजाताहै। हरड, पीपल, सोंठ, कालीमिर्च, गुड यह सम भाग लेकर इनके मोदक बनाकर खानेसे कास दूरकर अग्नि दीप्त होतीहै। अथवा दशमूलका काढाकर पुष्करमूलका चूर्ण डालकर पिये तो ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

श्वासकासप्रशमनःपार्श्वशूलनिवारणः।
गुडशुंठीशिवामुस्तैर्धारयेद्गुटिकांमुखे ॥ ९४ ॥

अर्थ-श्वास, कास, पार्श्वशूल दूर होता है, गुड, सोंठ, हरड, नागरमोथा इनकी गुटिका मुखमें धरे ॥ ९४ ॥

श्वासकासेपुसर्वेपुकेवलंवाविभीतकम्।
कूष्माण्डकशिफाचूर्णपीतंकोष्णेनवारिणा ॥ ९५ ॥

अर्थ-अथवा सब श्वासकासके रोगोंमें केवल मुखमें बहेडा रखना परमहितहै, पेठा और जटामांसीका चूर्ण गरमजलके साथ पीनेसे ॥ ९५ ॥

शीघ्रंशमयतिश्वासंकासंचैवसुदारुणम् ।
सुरसंशृंगवेरस्यमाक्षिकेणसमन्वितम् ॥
पाययेच्छ्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥ ९६ ॥

अर्थ-दारुणकास श्वास शीघ्र नष्ट होजाताहै, अथवा अदरखका सुरस शहदके साथ पिलानेसे श्वास, कास, प्रतिश्याय, पीनस और कफरोग दूर होतेहैं ॥ ९६ ॥

शृंगीकटुत्रयफलात्रयकंटकारी
भार्ङ्गीसपुष्करजटालवणानिपंच ।
चूर्णंपिबेदशिशिरेणजलेनहिक्का-
श्वासोर्द्ध्ववातकफमारुतपीनसेषु ॥ ९७ ॥

अर्थ-काकडासींगी और हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, भटकटैया, भारंगी, पुष्करमूल, जटामांसी इन पांचोंका चूर्ण कर ठंडे जलके साथ लेनेसे हिचकी, श्वास, ऊर्द्ध्ववात, कफवात, पीनसादि रोग दूर होने हैं॥९७॥

गुडंकटुकतैलेनमिश्रयित्वासमंलिहेत् ।
त्रिसप्ताहप्रयोगेणश्वासंनिःशेषतोजयेत् ॥ ९८ ॥

अर्थ-गुड और कडुआ तेल बराबर मिलाकर चाटनेसे यह प्रयोग तीन सप्ताहमें श्वासरोग को सम्पूर्णनासे नष्ट करदेता है ॥ ९८ ॥

रसंगंधंविषंचैवटंकणंचमनःशिला ।
एतानिटंकमात्राणिमरिचंचाष्टटंककम् ॥ ९९ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, विष, सुहागा और मनसिलको समान भाग ले अर्थात् एक एक टंक ले और काली मिर्च आठ टंक ले ॥ ९९ ॥

एकैकंमरिचंदत्त्वाखल्वेसूक्ष्मंविमर्दयेत् ।
त्रिकटुंकटुपक्कंचदत्त्वापश्चाद्विचूर्णयेत् ॥ १०० ॥

अर्थ-एक एक मिर्च इसमें डालकर खरलकरताजाय पीछे त्रिकुटा और पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, चीता, कालीमिर्च, डालकर इसका चूर्ण करे ॥ १०० ॥

सर्वमेकत्रसंयोज्यकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
श्वासेकासेचमन्दाग्नौवातश्लेष्मामयेषुच ॥ १ ॥

अर्थ-फिर यह सब एकत्र कर कांचकी शीशीमें रख छोडे श्वास, कास, मन्दाग्नि, वात श्लेष्मा रोगमें ॥ १ ॥

गुंजामात्रंप्रदातव्यंपर्णखंडेनधीमता ।
सन्निपातेषुमूर्च्छायामपस्मारेतथैवच ॥ २ ॥
अतिमोहत्वमापन्नेनस्यंदद्याद्विचक्षणः।
रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वश्वासगदप्रणुत् ॥ ३ ॥

अर्थ-चोंटली (गुंजा) मात्र पानके साथ देना चाहिये, सन्निपात, मूर्छा,अपस्मार, अधिक मोह होजाय तो इसकी नास देनी चाहिये, यह श्वासकुठाररस सम्पूर्ण श्वासरोगका दूर करनेवाला है ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ हिक्का ।

विदाहिगुरुविष्टंभिरूक्षाभिष्यंदिभोजनैः ।
शीतपानाशनस्थानरजोधूमातपानिलैः ॥ ४ ॥
व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः ।
हिक्काश्वासश्वकासश्चनृणांसमुपजायते ॥ ५ ॥
मधुसौवर्चलोपेतंमातुलुंगरसंपिबेत् ।
हिक्कार्त्तोमधुनालिह्याच्छुंठींधात्रीकणान्विताम् ॥६॥

अर्थ-जो पदार्थ दाहकारक, भारी, कब्ज करनेवाले तथा रूखे और कफकारक हैं उनके पीने खानेसे तथा बहुत ठंढे स्थानमें बैठनेसे धूरि धुआं घाम और पवनके सेवनसे मेहनत, बोझ उठाना, रस्ता चलना, मलमूत्रादि के वेगको रोकना, तथा उपवासादिके करनेसे मनुष्योंको हुचकी, कास, श्वास यह रोग उत्पन्न होतेहैं. शहद और सोंचरलोनके साथ विजौरेनींबूका रस पिये अथवा शहदके साथ सोंठ आमला और पीपलका चूर्ण चाटे॥४॥५॥६॥

तृणामलकशुंठीनांचूर्णमधुसितायुतम् ।
मुहुर्मुहुःप्रयोक्तव्यंहिक्काश्वासनिवारणम् ॥
हिक्काश्वासीपिवेद्भार्ङ्गीसविश्वामुष्णवारिणा॥ ७॥

अर्थ-सुगान्धि तृण, आमले, सोंठ इनका चूर्ण कर मिश्री डाल शहदके साथ चाटे, यह वारंवार चाटनेसे हिक्का और श्वासरोग दूर होताहै. भारंगी और सोंठ गरम-जलके साथ सेवन करनेसे हिचकी और श्वासरोग दूर होता है ॥ ७॥

अथ क्षयः।

श्लेष्माधिक्याद्व्यवायाद्यैःपीडितोयःप्रशुष्यति ।
कासश्वासार्दितोरक्तंवमेच्छुक्लेक्षणोज्वरी ॥ ८ ॥

अर्थ-श्लेष्मा अधिक होनेसे व्यवायादिसे पीडितहो सूखता जाय कासश्वाससे अर्दितहो रक्तकी वमन करे शुक्ल नेत्र हो जाय, ज्वर हो जाय ॥ ८ ॥

अग्निमांद्यतृषायुक्तोरिरंसुर्मांसलोलुपः ।
विस्वरश्छर्दिमान्दीनस्सज्ञेयःक्षयपीडितः ॥ ९ ॥
तालीशोपणविश्वपिप्पलितुगाःकर्पाभिवृद्धास्त्रुटिः

कर्षार्द्धात्वगपिप्रकामधवलाद्वात्रिंशकर्पासिता ।
तालीशाद्यमिदंसुचूर्णमरुचावाध्मानमंदानल-
श्वासच्छर्द्यतिसारशोपकसनप्लीहज्वरेशस्यते ११०॥

अर्थ-मन्दाग्नि, प्यास, विहारकी इच्छा, मांसलोलुपता, स्वरभंग, छर्दिमान, दीनमन यह लक्षण क्षयवाले मनुष्यके जानने, तालीशपत्र १ कालीमिर्च २ सोंठ ३ पीपल ४ वंशलोचन ५ तोले, दालचीनी छःमासे, मिश्री ३२ तोले यह तालीशादिचूर्ण अफारा, मंदाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोष, कास, प्लीहा ज्वररोग इसके चूर्ण सेवन करनेसे दूर होते हैं ॥ ९ ॥ ११० ॥

शर्करामधुसंयुक्तंनवनीतंलिहेत्क्षयी ।
पिबेन्नागबलामूलंसार्द्धकर्षविवर्द्धितम् ॥ ११ ॥
पलक्षीरयुतंमांसंक्षीरवृत्तिरनन्नभुक् ।
एषप्रयोगःपुण्यायुर्बलारोग्यकरःपरः ॥ १२ ॥

अर्थ-अथवा क्षयरोगवाला मिश्री, शहत और मक्खन यह तीन चीजें मिलाकर चाटे तो क्षयरोग जाय छः छः मासे बढाता हुआ ककहीकी जडका चूर्ण पिये तो जाय अथवा चारतोले दुग्धयुक्त मांस खाय, क्षीरवृत्तिसे रहै, अन्न भोजन नकरे, यह प्रयोग आयु, बल और आरोग्यका करनेवाला है ॥ ११ ॥ १२ ॥

कुकुभत्वङ्नागबलावानरिबीजंसुचूर्णितंपक्कम् ।
भुक्तंमधुघृतयुक्तंससितंयक्ष्मादिकासहरम् ॥ १३ ॥
चूर्णस्वदंष्ट्राफलवाजिगन्धा-
समन्वितंमाक्षिकसंयुतंच ।

क्षीरेणसार्द्धपरिपीयमानं
क्षयंचकासंविनिहंतिपुंसाम् ॥ १४ ॥
लवंगंशुद्धकर्पूरमेलात्वङ्नागकेसरम् ।
जातीफलमुशीरंचनागरंकृष्णजीरकम् ॥ १५ ॥
कृष्णागुरुतुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा ।
चंदनंतगरंवालंकंकोलंचेतिचूर्णयेत् ॥ १६ ॥
समभागानिसर्वाणिसर्वेभ्योऽर्द्धासिताभवेत् ।
लवंगाद्यमिदंचूर्णंराजार्हंवह्निदीपनम् ॥ १७ ॥

अर्थ-कोहवृक्षकी छाल, ककहीकी जड, शकशिम्बीके बीज, चूर्णकर पक्क करके इनको मधु घृतसे युक्त मिश्री डालकर खाय तो यक्ष्मा और कासरोग दूर होता है. गोखरू, मैनफलका चूर्ण असगंधका चूर्ण कर इसमें शहद डालकर दूधके साथ पिये तो क्षय और कासरोग दूर होते हैं. लौंग, भीमसेनी कपूर, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, जायफल, खस, सोंठ, कालाजीरा, काली अगर, वंशलोचन, जटामांसी, नीलाकमल, पीपल, श्वेतचन्दन, तगर, नेत्रवाला और कंकोल इन अठारह औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्णसे आधी मिश्री मिलावे, यह लवंगादिचूर्ण है, यह राजोंके योग्य अग्निको प्रदीप्त करनेवाला है ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

रोचनंतर्पणंवृष्यंत्रिदोषघ्नंबलप्रदम् ।
हृद्रोगंकंठरोगंचकासंहिक्कांचपीनसम् ॥ १८ ॥
यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारमुरःक्षतम् ।
प्रमेहारुचिगुल्मादिग्रहणीमपिनाशयेत् ॥ १९ ॥

अर्थ-यह रुचिकर, शरीरपुष्टिकरता, स्त्रीभोगकी शक्ति-

ताहै, वात पित्त कफसे दोषोंको दूर कर बल करताहै, हृद-
रोग, कंठरोग, खांसी, हिचकी, पीनस, खई, तमक,
ास, अतीसार, अरुचि, प्रमेह, गोला, संग्रहणी, सब
ोग दूर होते हैं ॥ १८ ॥ १९ ॥

कुमुदेश्वररसः।

पारदंशोधितंगन्धमभ्रकंचसमंमतम्।
तदर्द्धंदरदंदद्यात्तदर्द्धांचमनःशिला ॥ १२० ॥

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्धगंधक, अभ्रकभस्म, यह सब समान भाग ले इससे आधा हिंगुल, हिंगुलका आधा मनसिल १२०

सर्वार्द्धंमृतलोहंचखल्वमध्येविनिक्षिपेत्।
द्विःसप्तभावनादेयाशतावर्य्यारसेनच ॥ २१ ॥
ततःसिद्धोभवत्येषकुमुदेश्वरसंज्ञकः।
सितयामारिचेनाथगुंजाद्वित्रिप्रमाणतः ॥ २२ ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायपूजयेदिष्टदेवताम्।
यक्ष्माणमुग्रंहन्त्येववातपित्तकफामयान् ॥ २३ ॥
ज्वरादीनखिलान्रोगान्यथादैत्याञ्जनार्दनः।
सतताभ्यासयोगेनवलीपलितनाशनम् ॥ २४ ॥

अर्थ-सबसे आधी लोहभस्म ले, इन सबकी खरल कर शतावरीके रसकी सात भावना दे, इसको दो या तीन चोटली काली मिर्च और मिश्रीके चूर्णसे दे, यह कुमुदेश्व-ररस राजयक्ष्मा, वातरोग, पित्तरोग, कफरोग और सब ज्वरादिरोगोंका नाश करता है, जैसे दैत्योंको जनार्दन नाश करतेहैं। निरन्तर अभ्यास करनेसे वली और पा-रोग नाश होते हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

रसेनतुल्यंकनकंतयोस्तु
साम्येनयुंज्यान्नवमौक्तिकानि ॥
रसप्रमाणोबलिरंध्रभागः
क्षारश्चसर्वंतुपवारिणातु ॥ २५ ॥
संमर्द्यवस्रंसुविधायगोलं
दिनेपचेत्तंलवणेनपूर्णे ॥
भाण्डेमृगांकोयमतिप्रगल्भः
क्षयाग्निमांद्यग्रहणीगदेषु ॥ २६ ॥

अर्थ-पारेकी बराबर सोनेके वर्क और दूने मोती पारेकी बराबर गंधक और सुहागा जवाखार इन सबको धान्यकी भूमिके जलमें एकदिन खरल कर गोला बनावे फिर एक पात्रमें निमक भरकर पात्रका मुख बंद कर चूल्हेपर चढावे चार पहरकी आग दे तो यह मृगांकरस बने, यह क्षय, मंदाग्नि, संग्रहणीरोगको दूर करे ॥ २५ ॥ २६ ॥

साज्योपणाभिर्मधुपिप्पलीभि-
र्वलोस्यदेयोननतोधिकस्तु ॥
पथ्यंहितंशीतलमेवयोज्यं
त्याज्यंसदापित्तकरंविदाहि ॥ १२७ ॥

इतिश्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते
वैद्यरत्ने द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

अर्थ-चावरत्ती काली मिरचके चूर्णके संग खाय अथवा पीपलके चूर्ण और शहदके साथ भक्षण करे यह इसके ऊपर पथ्य हलके पदार्थोंका भोजन करे परन्तु दाह करनेवाले

पदार्थ न खाय (बैंगन बेलफल तेल करेले न खाय) स्त्री-संग और क्रोधका त्याग करे ॥ २७ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद मिश्रकृतभाषाटीकायां द्वितीयः प्रकाशः ॥ १ ॥

अथारुचिः।

अरोचकोभवेद्दोषैर्जिह्वाहृदयसंश्रयैः ॥
सन्निपातेनमनसःसन्तापेनचपंचमः ॥ १ ॥

अर्थ-वातादिदोष, जिह्वा और हृदयमें आश्रित हो मनको बिगाडते हैं तब अरुचि होती है अर्थात् शोक भय लोभ और क्रोध आहार तथा गंध इन भेदोंसे अरुचि पांच प्रकारकी है ॥ १ ॥

अम्लिकागुडतोयंचत्वगेलामरिचान्वितम् ॥
अभक्तच्छन्दरोगेपुशस्तंबलावधारणम् ॥ २ ॥

अर्थ-इमली और गुडके शरबतमें तज इलायची और काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर मुखमें धारण करनेसे अरुचि दूर होती है ॥ २ ॥

कारव्यजाजिमरिचन्द्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ॥
सौवर्चलंगुडंक्षौद्रमेषांकार्यावटीशुभा ॥ ३ ॥

अर्थ-करोंजी, जीरा, मिर्च, मुनक्का, दाख, दाडिम, सोंचरलोन, गुड और शहद यह सबप्रकारकी अरुचिको दूर करताहै ॥ ३ ॥

बदरास्थिमितासास्येधृताऽरोचकनाशिनी ॥

अर्थ-बेरकी मींगीकी बराबर गुटिका मुखमें धरनेसे अरुचि दूर होती है ।

अथ तृष्णा।

सततंयःपिबेद्वारिनतृप्तिमधिगच्छति।
पुनःकांक्षतितोयंचतंतृष्णार्दितमादिशेत् ॥ ४ ॥

अर्थ-जो निरन्तर जलपान करता जाय और उसकी तृप्ति न हो और वारंवार जलकी इच्छा करे उसे तृष्णासे अर्दित जाने ॥ ४ ॥

लाजोदकंमधुयुतंपीतंश्वेताविमिश्रितम्।
द्राक्षाखर्जूरसंयुक्तंपिबेत्तृष्णार्दितोनरः ॥ ५ ॥

अर्थ-खीलोंके पानीमें शहद और श्वेत कटेरी डालकर पिये अथवा दाख और खजूरके साथ पान करनेसे तृष्णारोग शान्त होता है ॥ ५ ॥

नीलाब्जकुष्ठमधुलाजवटावरोहैः
श्लक्ष्णीकृतैर्विरचितागुटिकामुखस्था ॥
तृष्णांनिवारयतितत्क्षणमेवतीव्रां
मर्त्यस्पृहामिवयतेःपरमार्थचिंता ॥ ६ ॥

अर्थ-नीलोफर, कूठ, शहद, खील, बडके अंकुर इनको कूटकर इनकी गुटिका कर मुखमें रखनेसे तत्काल तीक्ष्ण तृष्णा दूर होतीहै यह यतिको परमार्थकी चिन्ताकी समान तृष्णावाले मनुष्योंको प्रार्थनीय है ॥ ६ ॥

अथ छर्दिः।

दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्बीभत्सालोकनादिभिः।
छर्दयःपंचविज्ञेयास्ताःपृथग्लक्षणैर्मताः ॥ ७ ॥

अर्थ-दुष्ट हुए वातादि दोषोंसे पृथक् २ तीन, एक सदोषसे और पांचवीं बीभत्स (जिसके देखनेसे भय हो) यह पांचप्रकारके लक्षणोंवाली छर्दि होती है ॥ ७ ॥

कोमलकरंजपत्रंसलवणमम्लेनसंयुक्तम् ॥
यःखादतिदिनवदनेछर्दिकथातस्यकुत्रेह ॥ ८ ॥

अर्थ–कोमल करंजके पत्ते, सेंधानोन यह इमलीके साथ प्रातःकाल प्रतिदिन खानेसे छर्दिका नाम नहीं रहता ॥८॥

एलालवंगगजकेसरकोलमज्जा-
लाजाप्रियंगुघनचंदनपिप्पलीनाम् ॥
चूर्णंसितामधुयुतंमनुजोविलिह्य
छर्दिंनिहन्तिकफमारुतपित्तजाताम् ॥ ९ ॥

अर्थ–इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकी मींग, खीलें, प्रियंगु, नागरमोथा, लालचन्दन, पीपल इनका चूर्ण कर शहद और मिश्रीके साथ मनुष्य चाटे तौ कफवातपित्तसे उत्पन्न हुई छर्दि नष्ट होतीहै ॥ ९ ॥

जंब्वाम्रपल्लवशृतंक्षौद्रंदत्त्वासुशीतलंतोयम् ॥
लाजैरथचूर्ण्यपिबेच्छर्द्यतिसारे पलंसिद्धम् ॥ १० ॥

अर्थ–जामुन और आमके पत्तोंका काढा कर उसमें शहद मिलाय ठंढा कर पिये तौ वा खीलोंका चूर्ण कर पिये तौ छर्दि अतिसार रोग दूर हो ॥ १० ॥

अथ मूर्च्छा ।

सुखदुःखव्यपोहाच्चनरःपततिकाष्ठवत् ।
मोहोमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासाप्रकीर्त्तिता ॥ ११ ॥

अर्थ–जब चेतनाकी बहनेवाली नाडी वातादि दोषसे बंद होती है तब एकाएकी सुखदुःखका दूर करनेवाला तमोगुण प्राप्त होता है उसके न जाननेसे मनुष्य काष्ठकी समान गिरजाता है उसको मोह और मूर्च्छा कहते हैं वह तीन वातादिदोष चौथी रक्त पांचवीं मदिरा और छठी विषसे होती है ॥ ११ ॥

सेकावगाहौमणयःसुहाराः
शीतोपचाराव्यजनानिलाश्च ॥
पुष्पाण्यनेकानिचगंधवन्ति
विसानिशस्तानिचमूर्छितेषु ॥ १२ ॥

अर्थ-संपुर्ण मूर्छारोगमें सेचन, स्नान, मणिहार, लेप, पंखेकी पवन, सुगंधियुक्त शीतलपान तथा कमलनाल शीतल यह उपचार श्रेष्ठ हैं ॥ १२ ॥

कोलमज्जोपणोशीरकेसरंशीतवारिणा ।
पीतंमूर्च्छांजयेल्लीढ्वाकृष्णांवामधुसयुताम् ॥१३॥

अर्थ-बेरकी मींगी, कालीमिर्च, खस, नागकेशर, यह शीतल पानीके साथ पीसकर शहदके और पीपलके चूर्णके साथ चाटनेसे मूर्छा दूर होती है ॥ १३ ॥

नासावदनरोधेननस्यैर्मरिचनिर्मितैः ॥
नरंजागरयेद्भूमौमूर्छितंमंदमारुतैः ॥ १४ ॥

अर्थ-मुख और नासिका बंद करनेसे तथा काली मिर्चकी नाशं देनेसे तथा पवन करनेसे मूर्छा दूर होती है ॥१४॥

अथ दाहः ।

त्वचंप्राप्तःसमानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्छितः ।
दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् ॥ १५ ॥

अर्थ-समानवायुकी उष्णता पित्तरक्तसे बढकर त्वचामें प्राप्त होकर दाहको उत्पन्न करती है, पित्तकी औषधिकी समान उसका उपचार करना चाहिये ॥ १५ ॥

शतधौतघृताभ्यक्तोलिह्यात्सक्तुसिताघृतम् ।
पीत्वावेणुत्वचःक्वाथंसक्षौद्रंशिशिरंनरः ॥ १६ ॥

रक्तसंपूर्णकोष्ठोत्थंदाहंजयतिदुस्तरम्।
वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः।
नार्य्यश्चंदनार्द्रांग्यःपित्तदाहहरामताः॥ १७॥

अर्थ-सौबार पानीसे धोये घृतको शरीरमें मलना अथवा जौके सत्तू मिश्रीके साथ खाना घृतका सेवन करे अथवा रक्तजदाहमें बांसकी छालका काढा कर शहद मिलाकर पिये तो जिसके कोठेमें रक्त भरनेसे दाह हुआ है वह शान्त होजाताहै काढा ठंडा कर पिये अथवा कमल फूली हुई बावडी और फुहार छुटते हुए घरोंमें बैठने तथा चन्दनादि लगाये स्त्रियोंके दर्शनसे दाह दूर होताहै १६॥१७

अथोन्मादः।

मदयंत्युद्गतादोषायस्मादुन्मार्गगामिनः।
मानसोयमतोऽव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्तितः॥ १८॥

अर्थ-अपने २ कारणोंसे बढेहुए वातादि दोष जब सरल मार्ग छोडके उन्मार्गी होते हैं तब मनको उन्मत्त करतें हैं इस कारण इस रोगका नाम उन्माद है॥ १८॥

कुष्ठाश्वगंधालवणाजमोदंद्वेजीरकेत्रीणिकटूनिपाठा।
मंगल्यपुष्पीचसमानचूर्णंकृत्वाथचूर्णंनवचोद्भवेन १९॥

अर्थ-कूट, असगंध, सैंधानोन, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठ, मिर्च, पीपल, पाढ इनको बराबर ले और इन सबकी बराबर बच लेय औरोंकी समान शंखाहूलीकी मात्रा ले॥ १९॥

तुल्येनयुक्तंबहुशोरसेनतद्भावितंब्रह्मविनिर्मितायाः।
सर्पिर्मधुभ्यामथतोक्षमात्रंलिह्यान्नरःषष्टिदिनंहिताशी॥

अर्थ-इन सबका चूर्ण कर ब्राह्मीके रसकी भावना दे इसको घृत अथवा शहदसे ४ टंक साठदिन तक खाय तो॥ २०॥

ऐश्वर्यवान्वामनसश्चधैर्यंमेधांचविंदेद्द्विगुणंचकालम् ।
पठेन्नरःश्लोकसहस्रमह्नातद्वत्प्रयोज्योद्विगुणंक्रमेण ॥२१॥

अर्थ-ऐश्वर्यवान् मनमें धीरता प्रबलता हो सहस्र श्लोक १ दिनमें पठन करनेकी शक्ति हो जाती है, यह दूनी मात्राभी क्रमसे दी जा सकती है ॥ २१ ॥

सारस्वतंचूर्णमिदंप्रदिष्टंस्वयंभुवालोकहितार्थमुच्चैः ।
दुर्मेधसामुन्मदमानसानामपस्मृतिग्रस्तहृदांसुखाय २२

अर्थ-ब्रह्माने लोकके हितके निमित्त यह सारस्वत चूर्ण बनाया है । कुबुद्धिता, उन्माद, अपस्मृति आदि मनके रोगोंमें हितकारी है ॥ २२ ॥

बद्धंसर्षपतैलाक्तमुत्तानंचातपेन्यसेत् ।
कपिकच्छ्वाथवातप्तैर्लोहतैलांबुभिःस्पृशेत् ॥ २३ ॥
कशाभिस्ताडयेद्बद्धंस्थापयित्वाऽजनेगृहे ।
रुध्यात्ततोतिविभ्रांतमेवंव्रजतिसत्सुखम् ॥ २४ ॥

अर्थ-इसमें रोगीको बांधना चाहिये और तेलका मालिश कर धूपमें खडा करे, कौंचके बीजोंका स्पर्श करावे अथवा तप्तलोह तेल और जलका स्पर्श करावे वा बांधकर मर्मस्थान बचाकर चाबुकसे ताडन करे बन्दकर रक्खे अप्रिय समाचार सुनावे तो उन्मादी आरोग्य होता है ॥ २३ ॥ २४ ॥

अथापस्मारः ।

तमःप्रवेशःसंरम्भोदोषोद्रेकोहतस्मृतिः ।
अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरश्चतुर्विधः ॥ २५ ॥

अर्थ-अकस्मात अंधकार नेत्रोंके सामने आजाना नेत्र टेढे करना हाथपांवका कंपना वातादि दोषोंके बढनेसे स्मृति

का नाश होना इस प्रकार इसरोगका नाम अपस्मार है यह वात पित्त कफ और सन्निपातके भेदसे चार प्रकारका है२५॥

पुष्योद्धृतंशुनःपित्तमपस्मारघ्नमंजनम् ।
तदेवसर्पिषायुक्तंधूपनंपरमंस्मृतम् ॥ २६ ॥

अर्थ-पुष्य नक्षत्रमें कुत्तेका पित्त निकालकर अंजन करना अपस्मार रोग दूर करता है, इसीको घृतमें मिलाकर धूप देनेसे आरोग्यता होती है ॥ २६ ॥

यः खादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेणवचारजः ।
अपस्मारंमहाघोरंसुचिरोत्थंजयेद्ध्रुवम् ॥
अपस्मारविनाशाययष्टयाह्वंसपिबेत्र्यहम् ॥ २७ ॥

अर्थ-जो केवल दूधका पान करताहुआ शहदके साथ वचका चूर्ण कर खाय तो महाघोर अपस्मार अवश्य दूर हो जाता है अथवा अपस्मारके नाशकरनेको तीन दिन मुलहटी पान करे ॥ २७ ॥

अथ वातव्याधिः।

स्वहेतुकुपितोवातोयद्यदंगग्रहोबली । ·
तत्तदाख्योबहुरुचःकुरुतेऽशीतिमामयान् ॥ २८ ॥
माषबलाशुकशिंबीकत्तृणरास्नाश्वगंधोरुबुकाणाम् ।
क्वाथोनश्यतिपीतोरामठलवणान्वितःकोष्णः २९॥

अर्थ-अपने कारणसे क्रोधित हुआ वायु जिस जिस अंगको ग्रहण करे उस रोगका वही वही नाम होता है। वातव्याधि ८० प्रकारकी है ॥ उरद खरियारी शूकशिम्बी पिठवन रास्ना असगंध एरण्ड इनका काढा कर हींग और सेंधानोंन डाल गरम गरम पान करनेसे ॥ २८ ॥ २९ ॥

अपहरतिपक्षघातंमन्यास्तंभंसकर्णनादरुजम् ।
दुर्जयमर्दितवातंसप्ताहाज्जयतिचावश्यम् ॥ ३० ॥

अर्थ-पक्षाघात मन्यास्तंभ कर्णनाद अर्दितवातादि रोगोंको सात दिनमें अवश्य दूर कर देता है ॥ ३० ॥

सहचरामरदारुसनागरं
क्वथितमंभसितैलविमिश्रितम् ।
पवनपीडितदेहगतिः पिबन्
द्रुतविलंबितगोभवतीच्छया ॥ ३१ ॥

अर्थ-श्वेतकुटक (पियावासा)देवदारु सोंठ इनका काढा कर उसमें तेल डालकर वातरोगसे पीडित देहवाला मनुष्य पान करनेसे शीघ्र रोगरहित हो जाता है ॥ ३१ ॥

हिंग्वम्लत्रिकटूग्रपद्कटुसटीवृक्षाम्लदीप्याह्लिका-
पाठाजाज्यजगंधमूलहपुपाद्विक्षारसाराभयम् ॥
हिध्माध्माननिबंधवध्र्मकसनश्वासाग्निसादारुचिप्लीहार्शोखिलशूलगुल्मगलहृद्रोघाप्मपांडुप्रणुत् ॥३२॥

अर्थ-हींग अम्लवेत और सोंठ मिर्च पीपल वच पीपल पीपलामूल चव्य सोंठ चीता कालीमिर्च कचूर आमला अजवायन श्वेतआक पाठ कालाजीरा सफेद जीरा असगंध पीपलामूल हाऊवेर सज्जीखार जवाखार वज्रखार हरड इन सबको बराबर ले सबका चूर्ण कर सेवन करनेसे हिध्म आध्मान (अफारा) विबंध, वध्र्मक, कासश्वास,मन्दाग्नि, अरुचि, प्लीहा, ववासीर, शूल, गुल्म,गलरोग, हृदयरोग, अश्म (पथरी) और पांडुरोगको दूर करता है ॥ ३२ ॥

१ जो औषधि दोबार कही जाय सो दूनी लेनी ।

तैलमेरण्डजंवापिगोमूत्रेणपिबेन्नरः ।
मासमेकंप्रयोगोयंगृध्रस्यूरुग्रहापहः ॥ ३३ ॥

अर्थ-जो अंडके तेलमें गोमूत्र डालकर एक महीनेतक पान करै तो यह गृध्रसी और ऊरुग्रह रोग दूर करता है ३३

तैलंघृतंचार्द्रकमातुलुंग्योरसंचचुक्रंसगुडंपिबेद्वा ।
कटयूरुपृष्ठत्रिकगुल्मशूलगृध्रस्युदावर्त्तहनुग्रहेषु ३४॥

अर्थ-तेल घी अद्रखका रस मातुलुंग (बिजौरेनींबू) का रस वा अमलवेत और गुड जो इनका पान करै तो इसके पृष्ठ हंसली त्रिक (पीठका वांसा) गुल्म शूल गृध्रसी उदावर्त हनुग्रहादिरोग दूर होते हैं ॥ ३४ ॥

हनुग्रहेहनुस्तंभेमन्यास्तंभेऽर्दितेपिबेत् ।
दशमूल्यंभसाकृष्णांपिप्पल्याःस्वरसेनच ॥ ३५ ॥

अर्थ-हनुग्रह हनुस्तंभ मन्यास्तभ वातरोगमें दशमूलका काढा कर वा कालीमिर्च और पीपलका स्वरस कर पान करना चाहिये ॥ ३५ ॥

रास्नाद्विगुणभागास्यादकभागास्तथापरे ।
धन्वयासबलैरंडदेवदारुशटीवचाः ॥ ३६ ॥
वासकोनागरंपथ्याचव्यमुस्तापुनर्नवाः ।
गुडूचीवृद्धदारुश्चशतपुष्पाचगोक्षुरः ॥ ३७ ॥
अश्वगंधाप्रतिविषाकृतमालःशतावरी ।
कृष्णासहचरश्चैवधान्यकंबृहतीद्वयम् ॥ ३८ ॥
एभिःकृतंपिबेत्क्वाथंशुण्ठीचूर्णेनसंयुतम् ।
कृष्णाचूर्णेनवायोगेराजगुग्गुलुनाथवा ॥ ३९ ॥

अर्थ–१ रासना दो तोले २ धमासा ३ खरेंटी ४ अंडकी जड ५ देवदारु ६ कपूर ७ वच ८ अडूसेका पंचाङ्ग ९ सोंठ १० हरडकी छाल ११ चव्य १२ नागरमोथा १३ सोंठकी जड १४ गिलोय १५ विधायरा १६ सौंफ १७ गोखरू १८ असगंध १९ अतीस २० अमलतासका गूदा २१ शतावर २२पीपल छोटी २३पियावासा २४धनियाँ २५–२६ छोटीबडी दोनों कटेरी इन छव्वीस औषधोंके काढेमें सोंठका चूर्ण मिलाकर अथवा पीपलका चूर्ण मिलाकर अथवा योगराज गूगलके साथ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अजमोदादिनावापिबेत्तैलेनैरंडजेनवा ।
सर्वांगकंपकुब्जत्वेपक्षवातेचवाहुके ॥ ४० ॥
गृध्रस्यामामवातेचश्लीपदेचाऽपतानके ।
अंत्रवृद्धौतथाध्मानेजंघाजानुगतेर्दिते ॥ ४१ ॥
शुक्रामयेमेढ्ररोगेवंध्यायोन्यामयेषुच ।
महारास्नादिनाख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–अथवा अजमोदादि चूर्णके साथ अथवा अण्डीके तेलके साथ इस काढेको पिये तो सर्वाङ्गकंप कुबडापन पक्षाघात अपबाहुक गृध्रसी आमवात श्लीपद अपतानक वायु अण्डवृद्धि अफारा जंघाजानुपीडा शुक्रदोष लिंगरोग वन्ध्यायोनि गर्भाशयके रोग दूर होते हैं । यह महारास्नादि काथ ब्रह्माजीने गर्भस्थापनके कारण बनायाहै४०॥४१॥४२॥

अथ गुग्गुलुः ।

रास्नामृतैरंडसुराह्वविश्वंतुल्येनगाढंपुरुणाविमर्द्य ।
खादेत्समीरीसशिरोगदीचनाडीव्रणीचापिभगंदरीच ४३

गिलोय एरण्ड देवदारु सोंठ यह सब ब–

रावर लेअच्छी प्रकार बारीक करके सेवनसे वातरोग शिर-
पीडा नाडीव्रण भगन्दरादि रोग इससे दूर होते हैं ॥ ४३ ॥

अथ तैलानि ।

तैलाढकंसमतुपांबुहयारिहेम-
निर्गुण्डिभास्करशिफाशृतसाधुसिद्धम् ।
धत्तूरकुष्ठफलिनीविषहेमदुग्धा-
रास्नाहयारिकटभीमरिचोपचित्राः ॥ ४४ ॥

अर्थ-तिलका तेल ४ सेर इसीकी बराबर भूसीका जल
कनेर धतूरा संभालू आक जटामांसी इनका रस निकाल-
कर तेलमें औटावे जब तेलमात्र रहजाय और रस जल-
जाय तब धतूरा कूठ फूलप्रियंगु विष स्वर्णक्षीरी (पीले
दुग्धकी कटेरी) रास्ना कनेरकी जड मालकांगनी काली
मिरच गूगल मंजीठ ॥ ४४ ॥

मांसीवचादहनसर्षपदेवदारु-
दार्वीनिशोरुबुककात्रिफलासमांगाः ।
पिष्टाक्षिपेत्पलमिताविषगर्भमेतत्
तैलंसमस्तपवनामयनाशनंस्यात् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जटामांसी वच चीता सरसों देवदारु दारुहलदी
अण्डकी जड त्रिफला यह सब बराबर ले पीसकर इसमें
डालदे यह ओषधी चार २ तोले डाले यह विषगर्भ तैल
समस्त वातके रोगोंको दूर करता है ॥ ४५ ॥

बिल्वोग्निमन्थःस्योनाकःपाटलापारिभद्रकः ।
प्रसारिण्यश्वगंधाचबृहतीकंटकारिका ॥ ४६ ॥
बलाचातिबलाचैवश्वदंष्ट्रासपुनर्नवा ।
एषांदशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणांभसापचेत ॥४७॥

पादशेषंपरिस्राव्यतैलपात्रेप्रदापयेत् ।
शतपुष्पादेवदारुमांसीशैलेयकंबलाः ॥ ४८ ॥
चदनंतगरंकुष्ठमेलापर्णीचतुष्टयम् ।
रास्नातुरगगंधाचसैन्धवंचपुनर्नवा ॥ ४९ ॥
एषांद्विपलिकान्भागान्पेषयित्वाविनिक्षिपेत् ।
शतावरीरसंचैवतैलतुल्यंप्रदापयेत् ॥ ५० ॥

अर्थ–बेल अरणी अरलू पाढल, नीमकी छाल, गंधप्रसारणी, असगंध, कटेरी, खरैंटी, गंगेरन, गोखरु, सोंठ यह सब १० पल लेकर ६४सेर पानीमें औटावे जब चौथाई रहजाय तब १०२४ टंक तेल डाले, सोंठ, देवदारु, बालछड, छारछबीला, वच, चन्दन, तगर,कूट, इलायची, शालपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, पीलवनी, रास्ना, असगंध, सेंधानोन, यह सब दोदो पल ले पीसकर डाल देवै और शतावरीका रस तेलके बराबर अर्थात चार सेर डाले ॥ ४६–५० ॥

आजकंयदिवागव्यंक्षीरंदत्त्वाचतुर्गुणम् ।
पानेवस्तौतथाऽभ्यंगेभोज्येनस्येप्रयोजयेत् ॥ ५१ ॥
अश्वोवावातभग्नोवागजोवायदिवानरः ।
पंगुर्वाभग्नहस्तोवाभग्नपादोथवानरः ॥ ५२ ॥
अधोभागेचयेवाताःशिरामध्यगताश्चये ।
दन्तशूलेहनुस्तम्भेमन्यास्तम्भेऽपतंत्रके ॥ ५३ ॥
एकांगग्रहणेवापिसर्वांगग्रहणेतथा ।
क्षीणेन्द्रियानष्टशुक्राज्वरग्रस्ताश्चयेनराः ॥ ५४ ॥

ललजिह्वाश्चबधिराविस्वरामंदमेधसः।
मंदप्रजाचयानारीयाचगर्भनविंदति ॥ ५५ ॥
वातार्त्ताँवृषणौयेषामंत्रवृद्धिश्चदारुणा।
एतन्नारायणंतैलंशस्तंसर्वत्रसर्वदा ॥ ५६ ॥

अर्थ-बकरी या गायका चौगुना दूध डालकर मन्द अग्निसे औटावै सब सिद्ध होजाय तब उतारले इस तेलको पिये वा मर्दन करै भोजनके प्रथम तेलका लेप करै. घोडे हाथीके वातरोग मनुष्यके पंगु पीठभग्न वायुआदि रोग इस तेलसे नाश होतेहै, अर्थात् नीचेके अंगकी वायु, माथेकी वायु, दन्तशूल हनुस्तंभ जावडास्तम्भ गलग्रहइन्द्री, इन्द्रीक्षीण, नष्टवीर्य, तथा जो मनुष्य ज्वरसे ग्रस्त है, जीभ फूलना, विकलता मंदबुद्धि, स्त्रीके संतान न होना, अण्डकोषमें वातरोग होना, दारुण अंत्रवृद्धि होनी इतने रोगोमें नारायण तेल सब प्रकारसे श्रेष्ठ है ॥ ५१-५६ ॥

चतुःशेरमितेतैलेतिलानांशोधितेमृदा।
महानिंबार्कनिर्गुण्डीधत्तूरैरंडकस्नुहाम् ॥ ५७ ॥
भृंगराजहयार्योश्चरसंशेरमितंपृथक्।
विपाच्यसाधितंह्येतत्सर्ववातव्यथापहम् ॥ ५८ ॥

अर्थ-चारसेर तिलोंका तेल लेकर, बकायन आक सँभालू धतूरा अण्ड सेहुंड ॥ ५७ ॥ भाँगरा और कनेर इनके पत्तोंका एकसेर रस निकाले इनको मिलाय अग्निपर चढा दे जब रसमात्र जलकर तेल रहजाय तब उतारले यह मालिस करनेसे सम्पूर्ण वातकी व्यथाको दूर करता है ॥५७॥ ५८ ॥

अथ स्वच्छन्दभैरवरसः।

शुद्धसूतंमृतंलोहंताप्यंगंधकतालकम् ।
पथ्याग्निमंथनिर्गुण्डीत्र्यूषणंटंकणंक्षिपेत् ॥ ५९ ॥
तुल्यांसंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।
मुंडीद्रवैर्दिनैकंतुद्विगुंजांचवटीकृताम् ॥ ६० ॥
भक्षयेद्वातरोगार्त्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।
रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजंशृतम् ।
सगुग्गुलुंपिवेत्कोष्णमनुपानंसुखावहम् ॥ ६१ ॥

अर्थ-शुद्धपारा १ लोहभस्म २ स्वर्णमाक्षिककी भस्म ३ गंधक हरताल जंगीहरड अरणी निर्गुण्डी सोंठ काली मिर्च पीपल सुहागा यह समान भाग लेकर निर्गुण्डीके रसमें १ दिन खरल करै, दोदो रत्तीकी गोली बनावै, इसको स्वच्छन्दभैरवरस कहतें हैं,यह रस और रास्ना गिलोय देवदारु सोंठ अंडकी जड इन पांच औषधियोंका काढा करके उसमें गूगल मिलाय सेवन करे तो वातरोग दूर होताहै ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

अथ वातरक्तम् ।

वाहनाभिरतस्यासृग्दूषयित्व निलोबली ।
स्पर्शाज्ञत्वंमण्डलानिस्फोटनानिविसूचिकाम् ६२॥

अर्थ-हाथी घोडे ऊंट आदिपर सवारी करनेवालेके, तथा दाहक पदार्थ खानेवालेके आहार दग्ध होनेपर देहका रुधिर दूषित हो उठता अर्थात् गरम होजाता है तब त्वचाका स्पर्श खरखरा और विसूचिकाकेसे फोडे पडजातेहैं अर्थात् शरीरमें चकत्ते पडजाते हैं ॥ ६२ ॥

करोत्यंगुलिवैकल्यंवातरक्तमिदंस्मृतम् ।
कालातिक्रान्तमेतत्तुकुष्ठंभवतिदुर्द्धरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-यही वातरक्त अंगुलीकी विकलता करता है और उपेक्षा करनेसे कालांतरमें दारुण कुष्ठरोग करता है ॥६३॥

दार्वीगुडूचीकटुकोग्रगंधा-
मंजिष्ठनिंबत्रिफलाकषायः ॥
वातास्रमुच्चैर्नवकार्षिकाख्यो
जयेच्चकुष्ठान्यखिलानिनॄणाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-दारुहलदी गिलोय कुटकी वच मँजीठ नीमकी छाल हरड बहेडा आमला इनका काढा कर पान करनेसे वातरक्त और संपूर्ण कुष्ठरोग दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मंजिष्ठारिष्टवासात्रिफलदहनकंद्वेहरिद्रेगुडूची
भूनिम्बोरक्तसारःसखदिरकटुकावाकचीव्याधिघातः ।
मूर्वादन्तीविशालाकृमिरिपुजटिलावायसीरासपाठा ।
श्यामानंतापटोलीसमरिचमगधासाधितोऽयंकषायः
पीतोहन्यात्समस्तान्सकलतनुगतान्रक्तजातान्विकारा-
न्कंडूविस्फोटकादीनलसकविषमश्वित्रपामादिदोषान्

अर्थ-मँजीठ नीम अडूसा हरड बहेडा आमला चीता हलदी दारुहलदी गिलोय चिरायता लालचंदन खैरसार कुटकी बाकुची (सोमराजी) अमलतासका गूदा मूर्वा दन्ती इन्द्रवारुणी वायविडंग जटामांसी काकमाची और पाढ निसोथ धमासा पटोल मिर्च पीपल इन औषधियोंको बराबर ले इनका काढा कर पिये तो सम्पूर्ण शरीरके रक्तपित्तविकार कण्डू विस्फोटकादि अलसक कठिन चित्रकोढादि सम्पूर्ण विकार दूर होते हैं ॥ ६५ ॥

अथ स्वच्छन्दभैरवरसः।

शुद्धसूतंमृतंलोहंताप्यंगंधकतालकम् ।
पथ्याग्निमंथनिर्गुण्डीत्र्यूषणंटंकणंक्षिपेत् ॥ ५९ ॥
तुल्यांसंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।
मुंडीद्रवैर्दिनैकंतुद्विगुंजांचवटीकृताम् ॥ ६० ॥
भक्षयेद्वातरोगार्त्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।
रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजंश्रृतम् ।
सगुग्गुलुंपिबेत्कोष्णमनुपानंसुखावहम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ लोहभस्म २ स्वर्णमाक्षिककी भस्म ३ गंधक हरताल जंगीहरड अरणी निर्गुण्डी सोंठ काली मिर्च पीपल सुहागा यह समान भाग लेकर निर्गुण्डीके रसमें १ दिन खरल करें, दोदो रत्तीकी गोली बनावे, इसको स्वच्छन्दभैरवरस कहते हैं,यह रस और रास्ना गिलोय देवदारु सोंठ अंडकी जड इन पांच औषधियोंका काढा करके उसमें गूगल मिलाय सेवन करे तो वातरोग दूर होताहै ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

अथ वातरक्तम् ।

वाहनाभिरतस्यासृग्दूषयित्व निलोबली ।
स्पर्शाज्ञत्वंमण्डलानिस्फोटनानिविसूचिकाम् ६२॥

अर्थ–हाथी घोडे ऊंट आदिपर सवारी करनेवालेके, तथा दाहक पदार्थ खानेवालेके आहार दग्ध होनेपर देहका रुधिर दूषित हो उठता अर्थात् गरम होजाता है तब त्वचाका स्पर्श खरखरा और विसूचिकाकेसे फोडे पडजातेहैं --र्थात् शरीरमें चकत्ते पडजाते हैं ॥ ६२ ॥

करोत्यंगुलिवैकल्यंवातरक्तमिदंस्मृतम् ।
कालातिक्रान्तमेतत्तुकुष्टंभवतिदुर्द्धरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-यही वातरक्त अंगुलीकी विकलता करता है और उपेक्षा करनेसे कालांतरमें दारुण कुष्ठरोग करता है ॥६३॥

दार्वीगुडूचीकटुकोग्रगंधा-
मंजिष्ठनिंबत्रिफलाकपायः ॥
वातास्रमुच्चैर्नवकार्षिकाख्यो
जयेच्चकुष्टान्यखिलानिनृणाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-दारुहलदी गिलोय कुटकी वच मँजीठ नीमकी छाल हरड बहेडा आमला इनका काढा कर पान करनेसें वातरक्त और संपूर्ण कुष्ठरोग दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मंजिष्ठारिष्टवासात्रिफलदहनकंद्वेहरिद्रेगुडूची
भूनिम्बोरक्तसारःसखदिरकटुकावाकचीव्याधिघातः ।
मूर्वादन्तीविशालाकृमिरिपुजटिलावायसीरासपाठा ।
श्यामानंतापटोलीसमरिचमगधासाधितोऽयंकपायः
पीतोहन्यात्समस्तान्सकलतनुगतान्रक्तजातान्विकारा-
न्कंडूविस्फोटकादीनलसकविपमश्वित्रपामादिदोपान्

अर्थ-मँजीठ नीम अडूसा हरड बहेडा आमला चीता हलदी दारुहलदी गिलोय चिरायता लालचंदन खैरसार कुटकी बाकुची (सोमराजी) अमलतासका गूदा मूर्वा दन्ती इन्द्रवारुणी वायविडंग जटामांसी काकमाची और पाढ निसोथ धमासा पटोल मिर्च पीपल इन औपधियोंको बराबर ले इनका काढा कर पिये तो सम्पूर्ण शरीरके रक्तपित्तविकार कण्डू विस्फोटकादि अलसक कठिन चित्रकोढादि सम्पूर्ण विकार दूर होते हैं ॥ ६५ ॥

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रमूर्वा-
रसगदकुनटीभिर्मर्दितस्तैलयोगात् ॥
अपहरतिरसेन्द्रःकुष्ठकण्डूविसर्प्प-
स्फुटितचरणरंध्रस्थामलत्वंनराणाम् ॥ ६६ ॥
अस्यतैलस्यलेपेनवातरक्तंप्रशाम्यति ॥

अर्थ-धतूरेके पत्ते नागवेलके पत्ते, चमेलीके पत्ते मूर्वा इनका रस तथा कूठ और मनशिल इनके संगमें पारा और तेल खूब मर्दन करके लेप करनेसे यह रसेन्द्र कुष्ठ कण्डू विसर्प चरणोंका फटना आदि रोगोंको दूर करता है और शुद्ध शरीर होजाता है ॥ ६६ ॥ इस तेलके लेप करनेसे वातरक्त रोग शान्त होजाता है ।

अथामवातः ।

वृद्धेनवायुनातत्रआमोयातिकफाशयम् ॥६७॥
लभ्येतसचनाडीभिरामवातोयमीरितः ॥
कटयूरुजानुजंघासुपृथुशूलरुजाकरः ॥ ६८ ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रकृति वा कालसे विरुद्ध आहार चेष्टा आदि करताहै उस मनुष्यके स्निग्धादि भोजन करने उपरान्त कसरतआदि करनेसे वायुसे प्रेरित हुआ आम कफाशयमें प्राप्त होताहै अर्थात् छाती कंठ मस्तककी सन्धिमें प्राप्त होताहै और विना पके नाडियोंमें प्राप्त होता है इसको आमवात कहते हैं कटि ऊरु जानु जंघामें सूजन शूल होतेहैं ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

रास्नांगुडूचीमेरंडंदेवदारुमहौषधम् ।
पिवेत्सर्वांगगेवातेसामेसंध्यस्थिमज्जगे ॥ ६९ ॥

अर्थ-रास्ना गिलोय एरण्डकी मूल देवदारु सोंठका काढा

सर्वांगवात आमवात संधि अस्थि और मज्जामें प्राप्त वातरोगमें पिये ॥ ६९ ॥

विशोध्यैरण्डबीजानिपिष्ट्वाततपायसंपिवेत् ।
आमवातेकटीशूलेगृध्रस्यांचौषधंपरम् ॥ ७० ॥

अर्थ-अण्डके बीज शोधकर उन्हें दूधमें पीसकर पिये तो आमवात कटिशूल और गृध्रसी रोगकी यह परम औषधी है ॥ ७० ॥

एरण्डबीजमज्जासमविश्वःशर्करासहितः ।
गुटिकीकृतःप्रभातेभुक्तःसामानिलंजयति ७१ ॥

अर्थ-अण्डके बीजकी मींग और सोंठ बराबर ले मिश्री सहित ८ गुटिका कर प्रभातकालमें पिये तो आमवात रोग दूर होता है ॥ ७१ ॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः ।
क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्ताखण्डस्यार्द्धतुलांन्यसेत् ॥
व्योपत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकंचपलंपलम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-सोंठ आठ पल घी २० पल दो सेर दूध और खांड पांचसेर लेकर इसकी चासनी करै और सोंठ, मिर्च, पीपल, तज, पत्रज, इलायची यह प्रत्येक एक एक पल ले ॥ ७२ ॥

निदध्याच्चूर्णितंतत्रखादेदग्निबलंप्रति ।
आमवातप्रशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥
वर्ण्यमायुष्यमोजस्यंवलीपलितनाशनम् ॥ ७३ ॥

अर्थ-इसका चूर्ण कर सेवन करै तो अग्निवृद्धि हो आम, वातकी शान्ति और बल पुष्टिकी वृद्धि करनेवाला है सुन्दर वर्ण करनेवाला आयुष बढानेवाला वली और पलित नाश करनेवाला है ॥ ७३ ॥

अथ शूलम् ।

दोषैःपृथक्समस्तामद्वन्द्वैःशूलोष्टधाभवेत् ।
सर्वेष्वेतेषुशूलेषुप्रायेणपवनःप्रभुः ॥ ७४ ॥

अर्थ–वातादि दोषसे पृथक् २ तीन सन्निपातसे एक द्वंद्वज तीन आमजन्य एक इस प्रकार आठ प्रकारका शूल है परन्तु आठोंमें वायु सर्वत्र बलवान है बहुधा यह वायुके बिना नहीं होता है महादेवके शूलसे इसकी उत्पत्ति है ७४॥

अथ परिणामशूलम् ।

अन्नेजीर्यतियच्छूलन्तदेवपरिणामजम् ।
साध्मानाटोपविण्मूत्रबंधमष्टविधंतथा ॥ ७५ ॥

अर्थ–और कोप करानेवाले पदार्थोसे कुपित हुआ वायु कफ पित्तम व्याप्त हो शूलरोग उत्पन्न करताहै वह शूल भोजन पचनेके समय होता है इस कारण इसको परिणाम· शूल कहते हैं उसमें पेटमें अफारा पेटका गुडगुडाना मल मूत्रका रोध विश्राम न पाना इत्यादि लक्षण होते हैं ॥७५॥

करंजसौवर्चलनागराणांसरामठानांसमभागिकानाम् ।
चूर्णंकदूष्णेनजलेनपीतंसमीरशूलंविनिहन्तिसद्यः७६ ॥

अर्थ–करंजुआ, काला नोन, सोंठ और हींग समान भाग लेकर· इनका चूर्ण कर गरमजलसे ले तो वातशूल शीघ्र नष्ट होता है ॥ ७६ ॥

चूर्णंतुम्बुरुरामठत्रिलवणक्षाराजमोदाभया-
वेल्लव्यूपणपुष्कराह्वयकृतंकुंभत्रिभागान्वितम् ॥
मन्दोष्णेनजलंनपीतमखिलंशूलेसगुल्मोदरा-
ध्मानाजीर्णविबंधमामपवनानाहौचशीघ्रंजयेत् ७७

अर्थ–तुम्बुरु, हींग,सेंधानोन, सांचरनोन,विडनोन, जवा;

खार, अजमोद, हरड, वायविडंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, पुष्करमूल, यह सब समान भाग ले, इन सबका तीसरा भाग निशोथ लै, इसका चूर्ण कर गरम जलके साथ ले तो सम्पूर्ण शूल गुल्मोदर अफरा अजीर्ण विबंध आमवात अनाहरोग शीघ्र दूर होजाता है ॥ ७७ ॥

चूर्णसमंरुचकहिंगुमहौषधीनां
शुण्ठ्यम्बुनाकफसमीरणसंभवासु ।
हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्तिविसूचिकासु
पेयंतथायवरसंनचविड्विबन्धे ॥ ७८ ॥

अर्थ-कालानोन, हींग, सोंठ, सफेद कटेरीका चूर्ण जलसे सेवन करनेसे कफवात हृत्पार्श्वशूल पृष्ठशूल जठररोग विसूचिका दूर होती है, यदि मूत्ररोध न हो तो यवके पानीसे इसे सेवन करे ॥ ७८ ॥

तुषवारिविनिष्पिष्टतिलकल्कोष्णपोटली ।
भ्राजिताजठरस्योर्ध्वंमुहुःशूलंविनाशयेत् ॥७९॥

अर्थ-धानकी भूसीके जलमें तिलका कल्क कर पीसें और उसकी पोटली कर गरम गरम सेक करे तो पेटका शूल दूर हो ॥ ७९ ॥

नाभिलेपाज्जयेच्छूलंमदनंकांजिकार्द्रितम् ।
बिल्वैरण्डतिलैर्वाथपिष्टैरम्लेनपोटली ॥ ८० ॥
गिलितंहिंगुसघृतंसद्यःशूलंविनाशयेत् ।
करंजबीजमज्जावाभृष्टाशूलंनिकृन्तति ॥ ८१ ॥

अर्थ-मैनफलको कांजीमें पीसकर नाभिपर लेप करे अथवा बेलपत्र और अण्डके पत्ते और तिल इनको कां-

जीमें पीस पोटली करे इसका सेक कर और हींग और घी खानेसे शीघ्र शूलका नाश करता है करंजुएके बीजोंकी मींगी भूनकर सेवन करे तो शूलको दूर करता है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

कृष्णाभयालोहचूर्णंलिह्यात्समधुशर्करम् ।
परिणामभवंशूलंसद्योहन्तिनसंशयः ॥ ८२ ॥

अर्थ-पीपल हरड और लोहचूर्ण, इनको बारीक पीस मधु और शर्कराके साथ चाटै तो परिणामशूल शीघ्रही नष्ट होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८२ ॥

नागरतिलगुडकल्कंपयसासंसाध्ययःपुमानद्यात् ।
उग्रंपरिणामभवंशूलंसप्ताहाज्जयतिचावश्यम् ॥८३॥

अर्थ-सोंठ, पीपल और गुडका कल्क करके दूधमें सिद्ध कर जो नित्य खाय तो सात दिनमें कठिन परिणामशूल नष्ट होजाता है ॥ ८३ ॥

एरण्डवह्निशम्बूकवर्षाभूगोक्षुरंसमम् ।
अंतर्दग्धापिवेदद्भिरूष्माभिःपक्तिशूलजित् ॥८४॥

अर्थ-अरण्ड, चीता, शंख (घोंघा), पुनर्नवा, गोखरू यह तीनों औषधि समान ले इनमें घोंघेकी भस्म करके गरम जलसे पान करनेसे पक्तिशूल दूर होताहै ॥ ८४ ॥

रसविषगंधकपर्दक्षारोपणासिंधुपिप्पलीविश्वैः ।
अहिवल्यंबुनिघृष्टैःशूलेभहरिर्द्विगुंजोऽयम् ॥ ८५ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, विष, यह तीनों वस्तु शोधीहुई कौडीका चूर्ण, जवाखार, पिपलामूल, सुहागा, पीपल, [illegible]ठ, यह पानके रसमें खरल कर दो रत्ती मात्रा देनेसे [illegible]ल दूर करता है यह शूलगजकेसर[illegible]रस है ॥ ८५ ॥

अथ गुल्मम्।

हृद्बस्त्योरंतरेग्रंथिर्जायतेयश्चलाचलः।
सगुल्मःपंचधादोषैःसर्वैश्चासृग्भवोपिच ॥ ८६ ॥

अर्थ-हृदयकमल, वस्ती और पेडूके बीचमें चलनेवाली अथवा अचल तथा घटने बढनेवाली जो गांठ होती है उसको गुल्म कहते हैं यह गुल्म पृथक् वातादि दोषसे तीन प्रकारका सन्निपातसे चौथा और केवल स्त्रियोंके रक्तसे पांचवाँ ऐसे पांच प्रकारका है ॥ ८६ ॥

कुमार्याःपक्वपर्णानिद्रोणार्धानिविनिक्षिपेत्।
जीर्णाद्गुडात्तुलान्तत्रजलद्रोणद्वयंतथा ॥ ८७ ॥

अर्थ-पक्के घीकुवाँरके पट्ठेका रस आधे द्रोण पुराना गुड १०० पल जल दो द्रोण ॥ ८७ ॥

लोहचूर्णंत्रिकटुकंत्रिफलाचयवानिका।
विडंगंमुस्तकंचित्रंचतुःसंख्यापलंपृथक् ॥ ८८ ॥

अर्थ-लोहचूर्ण, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, अजवायन, वायाविडंग, चीता, दालचीनी, पत्रज, इलायचीके दाने, नागकेशर, यह एक एक पल ले ॥ ८८ ॥

चूर्णीकृत्यततःक्षौद्रंचतुःषष्टिपलंक्षिपेत्।
घृतभांडेविनिक्षिप्यनिदध्यान्मासमात्रकम् ॥ ८९ ॥

अर्थ-इन सबका चूर्ण कर ६४ पल शहद भी डाले यह सब औषधी घीके वर्तनमें भरकर एक महीनेपर्यन्त धरा रहेने दे ॥ ८९ ॥

कुमार्यासवमेतत्तुपिवेद्वह्निकरंपरम्।
पांडुश्वयथुगुल्मानिजठराण्यर्शसांरुजाम् ॥ ९० ॥

अर्थ-यह कुमारी आसव एक पल अथवा आधे पल

पीनेसे अग्नि दीप्त करताहै पाण्डुरोग शोथ गुल्म जठर रोग गुल्म अर्शरोग ॥ ९० ॥

कुष्ठप्लीहामकंकंडूकासंश्वासंभगंदरम् ।
अरोचकंचग्रहणीहृद्रोगादींश्चनाशयेत् ॥ ९१ ॥

अर्थ-कुष्ठ प्लीहा आमरोग कण्डु कास श्वास भगन्दर अरोचक ग्रहणी हृद्रोग यह कुमारी आसव दूर करताहै ९१

वचाभयाविडंशुण्ठीहिंगुकृष्णाग्निदीप्यकान् ।
द्वित्रिषट्चतुरेकाष्टपंचसप्तपलांशकान् ॥ ९२ ॥
चूर्णयेद्वस्त्रगलितंचूर्णचैतद्यथाबलम् ।
मद्येनोष्णांबुनावापिपीतंगुल्मानपोहति ॥ ९३ ॥

अर्थ-वच २ भाग हरड ३ भाग वायविडंग ६ भाग सोंठ ४ भाग हींग १ भाग पीपल ८ भाग चीता ५ भाग अजवायन ७ भाग इन सब वस्तुओंका चूर्ण कर कपडेसे छान ले मद्य वा गरम जलके साथ पान करनेसे गुल्मराग दूर होता है ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

शूलार्शःश्वासकासघ्नंग्रहणीदीपनंपरम् ।
हिंगुसैन्धववृक्षाम्लराजिकानागरैः समैः ॥ ९४ ॥
चूर्णगुल्मप्रशमनंस्यादेतद्धिंगुपंचकम् ।
सूक्ष्मंगंधकणापथ्यास्तुल्याआरग्वधांबुभिः ॥९५॥

अर्थ-शूल अर्श श्वास. कास रोगका दूर करनेवाला ग्रहणीका दूर करनेवाला अग्नि दीप्त करनेवाला है हींग एक भाग सोंचरनोन अम्लवेत अनारदाना राई सोंठ यह सब समान ले चूर्ण करै यह हिंगुपंचक चूर्ण गुल्मरोगको दूर करताहै निर्मली, गंधक, पीपल, हरड, अमलतासके फलका गूदा यह बराबर ले ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

मर्दयेद्वज्रदुग्धैश्चतन्मापंमधुनालिहेत् ॥ ९६ ॥
स्त्रीणांजलोदरंहन्तिपथ्यंशाल्योदनंदधि ॥
चिंचाफलरसंचानुपिवेत्संशीलितेरसे ॥ ९७ ॥

अर्थ-इन सबको थूहरके दूधम खरल करे एक मासे शहदके साथ चाटे तो यह स्त्रीका जलोदर रोग दूर करता है दही भात खाना इसपर पथ्य है इसके ऊपर इमलीके फलोंका शीतल रस पान करना चाहिये ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अथ हृद्रोगः।

शोपयित्वारसंदोपाविगुणाहृदयंगताः।
हृदिवाधांप्रकुर्वन्तिहृद्रोगंतंप्रचक्षते ॥ ९८ ॥

अर्थ-वातादि दोष अन्नरसको दूषित करके फिर कुपित हुए हृदयको प्राप्त होकर जो हृदयमें पीडा करते हैं उसको हृद्रोग कहते हैं ॥ ९८ ॥

घृतेनदुग्धेनगुडांभसावापिवन्तिचूर्णककुभत्वचोये।
हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तंहत्वाभवेयुश्चिरजीविनस्ते ९९

अर्थ-घृत दूध गुड वा जलके साथ जो कोई अर्जुनवृक्षकी छालका चूर्ण खाय उसके हृद्रोग जीर्णज्वर रक्तपित्त दूर होकर वह चिरजीवी होताहै ॥ ९९ ॥

चूर्णंपुष्करमूलस्यमधुनासहलेहयेत् ।
हृल्लासश्वासकासघ्नंहृदामयहरंपरम् ॥ १०० ॥

अर्थ-पुष्करमूलका चूर्ण शहदके साथ चाटे तो हृल्लास कास श्वासादि तथा हृदयरोग दूर होतेहैं ॥ १०० ॥

अथोदरम्।

रुद्धास्वेदांबुवाहीनिदोपाःस्रोतांसिसंचिताः ।
प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यजनयंत्युदरंनृणाम् ॥ १०१ ॥

अर्थ-संचित हुए वातादि दोष पसीने और जलके बहाने

वाली नसोंको रोककर प्राणवायु जठराग्नि और अपान वायुको दूषित करके उदररोगको उत्पन्न करते हैं ॥ १०१ ॥

आध्मानंगमनेशक्तिर्दौर्बल्यंदुर्बलाग्निता ।
दाहस्तंद्राचसर्वेषुजठरेषुभवंतिहि ॥ २ ॥

अर्थ-पेटमें अफारा चलनेमें अशक्ति दुर्बलता मन्दाग्नि दाह तन्द्रा यह सब लक्षण उदररोगमें होतेहैं ॥ २ ॥

अथ प्लीहोदरम् ।

विदाह्यभिष्यंदिरतस्यजन्तोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ।
प्लीहाभिवृद्धिंकुरुतःप्रवृद्धौप्लीहोत्थमेतज्जठरंवदन्ति ॥
सव्यान्यपार्श्वेयकृतिप्रवृद्धेज्ञेयंयकृद्दाल्युदरंतदेव ॥ ३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य दाहकारक कफकारक पदार्थोंका अति सेवन करता है उसके रक्त कफ अत्यन्त दूषित होकर बढे हुए प्लीहाकी वृद्धि करते हैं उसको प्लीहोदर कहते हैं यह प्लीहा अर्थात् तापतिल्ली वाईं पसलीके निकट बढती है इसीका भेद यकृद्दाल्युदर है यह दाहिनी ओर यकृतके दूषित होनेसे यकृतदाल्युदरके नामसे होती है ॥ ३ ॥

कुष्ठंदन्तीयवक्षारंपाठांत्रिलवणंवचाम् ।
अजाजींदीप्यकंहिंगुस्वर्जिकांचव्यचित्रकम् ॥ ४ ॥
शुण्ठींचोष्णाम्भसापीत्वावातोदररुजापहम् ।
हिंगुत्रिकटुकंकुष्ठंयवक्षारोथसैन्धवम् ।
मातुलुंगरसोपेतंप्लीहशूलहरंपरम् ॥ ५ ॥
शरपुंखमूलकल्कःपीतस्तक्रेणनाशयत्यचिरात् ॥
चिरतरकालसमुत्थंप्लीहानंरूढमवगाहम् ॥ ६ ॥

अर्थ-कूठ दन्ती जवाखार पाठा संधानोंन कालानोंन सं॑

चरनोन वच जीरा अजवायन हींग सज्जीखार चव्य चीता और सोंठ यह महीन पीस गरम जलके साथ पीनेसे वातोदर रोग दूर करता है हींग सोंठ मिर्च पीपल कूठ जवाखार सेंधा इनका चूर्ण विजौरेनींबूके साथ सेवन करनेसे प्लीहा और शूलरोग दूर होताहै यह बहुत दिनोंके प्लीहाको भी दूर करता है शरफोंकाकी जडका कल्क छाछके साथ सेवन करनेसे बहुत पुरानीभी तापातिल्ली दूर होतीहै ४-६॥

सौवर्चलंयवक्षारंसामुद्रंकाचसैन्धवम् ॥
टंकणंस्वर्जिकाक्षीरंतुल्यमेकत्रचूर्णयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ-सोंचरलोन, जवाखार, समुद्रलोन, कचलोन, सैंधव सुहागा, सज्जी, इन सबको बराबर ले चूर्ण कर ॥ ७ ॥

अर्कदुग्धैःस्नुहीदुग्धैर्भावयेदातपेत्र्यहम् ॥
ऊर्ध्वाधःस्थैःक्रमात्तस्यतत्तुल्यैरर्कपल्लवैः ॥ ८ ॥
भाण्डेसंस्थाप्यमृल्लिप्तेरुद्ध्वागजपुटेपचेत् ।
स्वांगशीतंतुसंचूर्ण्यचूर्णमेपांतुमेलयेत् ॥ ९ ॥
त्र्यूषणंसविडंगंचराजिकांत्रिफलामपि ॥
चव्यंचहिंगुसंभृष्टंतक्रेणाद्याद्यथाफलम् ॥ १० ॥
वज्रक्षाराभिधंचूर्णमुदराणिविनाशयेत् ॥
शोथंगुल्मंतथाष्ठीलांमन्दाग्निमरुचिंतथा ।
प्लीहानंयकृन्नाल्यारत्यामुदरंचविशेषतः ॥ ११ ॥

अर्थ-मन्दारके दूधकी तीन भावना देकर धूपमें सुखावे इसी प्रकार सेहुँडके दूधकी तीन भावना दे फिर चूर्णकी बराबर मंदारके पत्ते लेकर थोडे एक हांडीमें रखकर उसपर वह चूर्ण धरे फिर पत्ते फिर चूर्ण इसप्रकार जमायकर हंडियाका

मुख बंद करके कपरोटी करे और सुखाकर गजपुट दे जब स्वयं ठंढा होजाय तब उसे निकालकर आगे कही औषधियोंका चूर्ण डाले सोंठ मिर्च पीपल वायविडंग राइ हरड आमला बेहडा चवक भूनी हुई हींग इन सबका चूर्ण कर क्षारके साथ मिलावै इस वज्रक्षारको शक्तिके अनुसार मट्ठेके साथ पिये तो सब उदररोग गुल्म अष्ठीला मन्दाग्नि अरुचि प्लीहा यकृत्दाल्युदरादि रोगा का नाश करता है॥८-११॥

अथ मूत्रकृच्छ्रम् ।

पृथक्समस्तैस्तैःशुक्रवेगरोधातिघाततः ।
अश्मर्याश्चाप्रधेतिस्यान्मूत्रकृच्छ्रोरुजाकरः ॥ १२॥

अर्थ-पृथक् पृथक् निदानोंसे कुपित हुए वातादि दोष वा सर्वदोष एक साथ कुपित हुए मूत्राशयमें प्राप्त होके मूत्रके मार्गको पीडित करते हैं तब मनुष्य बडे कष्टसे मूत्र करता है ॥ १२ ॥

मूत्रकृच्छ्रःसयःकृच्छ्रान्मूयत्रेद्वस्तिरोधकृत् ।
काथोगोक्षुरबीजानांयवक्षारयुतः सदा ॥
मूत्रकृच्छ्रंसकृज्जातंसद्यःपीतोनिवारयेत् ॥ १३ ॥

अर्थ-जबकि इसका बस्तिस्थान रुद्ध होजाता है तब यह बडे कष्टसे मूत्र करता है इसी कारण इसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं अब औषधी लिखते हैं गोखरूका काढा जवाखार युक्त पीनेसे मूत्रकृच्छ्र तत्काल दूर होता है ॥ १३ ॥

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनां
चूर्णानितंडुलजलैर्ललितानिपीत्वा ।

दद्याद्गुडेनसहितान्यवलोह्यधीमा-
नासन्नमृत्युरपिजीवतिमूत्रकृच्छ्री ॥ १४ ॥

अर्थ-इलायची पाषाणभेद शिलाजीत पीपल इनका चूर्ण कर चावलके जलसे पान करै अथवा गुडके साथ मिलाकर दे जो निकट मृत्यु आई हो तो भी मूत्रकृच्छ्रवाला जी सकता है ॥ १४ ॥

सितातुल्योयवक्षारःसर्वकृच्छ्रविनाशनः ।
गुडेनमिश्रितंदुग्धंकदूष्णंकामतःपिवेत् ।
मूत्रकृच्छ्रेषुसर्वेषुशर्करावातरोगजित् ॥ १५ ॥

अर्थ-मिश्रीयुक्त जवाखारके खानेसे सबप्रकारके मूत्रकृच्छ्रोंका नाश होता है गुडके साथ दूध मिलाकर कुछ गरम कर इच्छा पूर्वक पिये तो सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्र और वातरोग दूर होते हैं ॥ १५ ॥

गोकंटकसदलमूलफलंगृहीत्वा
संकुट्यतंपलशतंक्कथितःकषायः ।
पादस्थितेनचजलेनपलानिदत्त्वा ॥
पंचाशतंपरिपचेदपिशर्करायाः ॥ १६ ॥

अर्थ-गोखरू दल मूल और फलके सहित ग्रहण करके और कूटकर सौ पलका काढा करै जब चौथाई रहजाय तब ५० पल शक्करकी चासनीमें इसको औटावै ॥ १६ ॥

तस्मिन्घनत्वमुपगच्छतिचूर्णितानि
दद्यात्पलद्वयमितानिसुभेषजानि
शुण्ठीकणात्रुटियवागजकेसराणि
जातीफलंचककुभत्रपुसीफलानि ॥ १७ ॥

वंशंपलाष्टकमितिप्रणिधायनित्यं
लिह्यात्सुसिद्धमसृतंपलसंमितंतत् ।
हन्यात्तुमूत्रपरिदाहविबंधकृच्छ्रं
मूत्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ १८ ॥

अर्थ-जब यह गाढा होजाय तो आगे लिखी औषधि दो पल चूर्ण कर डाले सोंठ पीपल छोटी इलायची इन्द्रजौ नागकेशर जायफल कोहवृक्षकी छाल इन्द्रफला यहसम्पूर्ण औषधि मिलाकर वंशपलाष्टक है इसको सेवन करनेसे अमृतकी समान फल होता है एक पल इसको लेना चाहिये इससे मूत्ररोध परिदाह मूत्रकृच्छ्र मूत्राश्मरी रुधिरविकार प्रमेह मधुप्रमेहादि रोग दूर होते ह ॥ १७ ॥ १८ ॥

कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवः ।
पित्तकृच्छ्रहरंपंचमूलंवस्तिविशोधनम् ।
एतत्सिद्धंपयःपीतंमेदोहंचातिशोणितम् ॥ ११९ ॥

अर्थ-कुशा और काशकी जड रामशर डाभ ईख इन पांचोंका काढा कर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र रुधिरविकार दूर होता है ११९॥

अथाश्मरी ।

निरुध्यमूत्रमार्गंयायातनांजनयेद्भृशम् ।
कटिवस्तिप्रदेशेषुसाश्मरीतिनिगद्यते ॥ १२० ॥

अर्थ-जो मूत्रमार्गको रोककर बहुत कष्ट देती है कटि और बस्तिदेशमें पीडा देती है वह पथरीकी पीडा जाननी ॥ १२० ॥

पीत्वापाषाणभित्क्वाथंसशिलाजतुशर्करम् ।
पित्ताश्मरींनिहन्त्याशुवृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ २१ ॥

अर्थ-पाषाणभेदका क्वाथ शिलाजीत और शर्करा डा-

लकर पीये तौ पित्तकी अश्मरी (पथरी) दूर होतीहै जैसे वृक्षको वज्र नष्ट करता है ॥ २१ ॥

यवक्षारगुडोन्मिश्रंरसंपुष्पफलोद्भवम् ।
पिवेन्मूत्रविबंधघ्नंशर्कराश्मरिनाशनम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जवाखार और गुड मिलाकर नारियलके रससे संयुक्त कर पिये तौ मूत्रविबंध शर्करा अश्मरी नाश होतीहै ॥ २२ ॥

पाषाणभिद्वरुणगोक्षुरकोरुबूक-
क्षुद्राद्वयंक्षुरकमूलकृतःकषायः ।
दध्नायुतोजयतिमूत्रविबंधमुग्र-
मुग्राश्मरीमपिसशर्करयासमेताम् ॥ २३ ॥

अर्थ-पाषाणभेद वरुणा वसना गोखरू अण्डकी जड भटकटैया दोनों तालमखाना इनको बारीक पीसकर दही-के साथ पान करनेसे मूत्रविबंध महाअश्मरि शर्करा-दिरोग दूर होते हैं ॥ २३ ॥

यःपिवेद्रजनींसम्यक्सगुडांतुषवारिणा ।
तस्याशुचिरगूढापियात्यस्तंमेढ्रशर्करा ॥ २४ ॥

अर्थ-जो गुडसहित तुषके जल (कांजी) से हल्दीको पिये उसकी चिरकालकी पथरीभी दूर होती है अर्थात चूर्ण होकर निकल जातीहै ॥ २४ ॥

एतैरुपायैर्नोगच्छेदश्मरीयायमोपमा ।
तांस्थानाद्युक्तितोनीत्वाछेद्येस्थानेविचक्षणः ॥२५॥

अर्थ-यदि,अश्मरी इतने उपायोंसे भी न जाय उस स्थानसे युक्तिपूर्वक लेजाकर छेदन करना चाहिये ॥ २५ ॥

शस्त्रवेत्तासुयुक्त्याछिद्यशस्त्रेणोक्तेनदेहिनः ।
निष्कासयेत्प्रयत्नेननिर्वातंरक्षितस्यच ॥
एवंप्रयातिदुःसाध्याश्मरीदेहक्षयंकरी ॥ २६ ॥

अर्थ–शस्त्रका जाननेवाला युक्तिसे इसको छेदन करे और यत्नपूर्वक इसको निकाले निर्वातस्थानमें रक्षित करे इस प्रकारसे देहकी क्षय करनेवाली पथरा दूर होतीहै ॥ २६ ॥

अथ प्रमेहः ।

दशषड्वापिचत्वारःकफपित्तसमीरजाः ।
साध्यायाप्याअसाध्यास्तेप्रमेहाःक्रमशोनृणाम् २७॥

अर्थ–कफसे जो दशप्रकारके प्रमेह होते हैं वे साध्य हैं कारण कि इनकी औषधिक्रिया सम है. छःप्रकारके कफक प्रमेह याप्य हैं. कारण कि इनमें औषधिक्रिया विषम हैं जैसे कि शीतोपचार पित्तशमनकारक और मांसादिकके बढानेवाले हैं तथा चार प्रकारके वातप्रमेह असाध्य हैं कारण कि वायुविनाशकारक है जिस्से कि यह वायु मज्जादिक गंभीर धातुओंको आकर्षण करनेसे बहुव्यापिकारी और शीघ्रकारी है ॥ २७ ॥

चूर्णंफलत्रिकभवंमधुनावलीढं
हन्तिप्रमेहगदमाशुचिरप्रभूतम् ॥ २८ ॥

अर्थ–त्रिफलेका चूर्ण मधुके साथ चाटे तो बहुत दिनोंका प्रमेहरोग दूर होता है ॥ २८ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधासनम् ॥
आम्रंकपित्थंजंबूंचप्रियालंककुभंधवम् ॥ २९
मधूकंमधुकंलोध्रंवरुणंपारिभद्रकम् ।

करंजत्रिफलाशक्रभल्लातकफलानिच ।
एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥ ३० ॥

अर्थ-बडकी छाल गूलरकी छाल पीपलकी छाल सोनापाठा अमलतास आम कैथा और जामुनकी छाल, चिरौंजी अर्जुनकी छाल नागरमोथा मधुयष्टी (मुलैठी) महुएकी छाल लोधकी छाल वरनाकी छाल कूठ करंजुआ हरड बहेडा आमला कुडा भिलावेके फल यह सब बराबर भाग लेकर बारीक चूर्ण करे ॥ ३० ॥

न्यग्रोधाद्यमिदंचूर्णमधुनासहलेहयेत् ।
फलत्रयंचानुपिबेत्तेनमूत्रंविशुद्धयति ॥ ३१ ॥

अर्थ-यह न्यग्रोधादि चूर्ण है इसको मधुके साथ चाटै पीछे त्रिफलेको पान करै इससे मूत्र शुद्ध होताहै ॥ ३१ ॥

एतेनविंशतिर्महामूत्रकृच्छ्राणियानिच ।
प्रशमंयांतियोगेनपिडकाचनजायते ॥ ३२ ॥

अर्थ-इससे बीस प्रकारके प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र शान्त होजाते हैं और पिडका भी नहीं होतीहै ॥ ३२ ॥

चूर्णंनिशायामधुनासमेतंधात्रीफलानांस्वरसेनमिश्रम् ।
प्रलीढमल्पैर्दिवसैर्निहन्तिप्रमेहसंज्ञानखिलान्विकारान्

अर्थ-हल्दीका चूर्ण कर उसमें शहद डाल और उसीमें आमलेका स्वरस मिलावै इसको चाटनेसे थोडेही दिनों-में प्रमेहके सब विकार दूर होजाते हैं ॥ ३३ ॥

पीत्वासक्षौद्रममृतारसंजयतिमानवः ।
प्रमेहंविंशतिविधंमृगेन्द्रइवदंतिनम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–शहद और गिलोयका रस पान करनेसे बीस प्रकारके प्रमेह ऐसे दूर होजाते हैं जैसे मृगेन्द्र हस्तीको मारता है ॥ ३४ ॥

शाल्मलित्वग्रसःक्षौद्ररजनीक्षौद्रसंयुतः ।
पीतोनिहन्तिनिखिलान्प्रमेहानल्पवासरैः ॥ ३५ ॥

अर्थ–सेमलकी छालका रस शहद और हल्दीके चूर्णके साथ खानेसे थोडेही दिनोंमें सब प्रमेहरोग दूर होतेहैं ॥ ३५ ॥

शाल्मलित्वग्रसोपेतंसक्षौद्रंरजनीरजः ।
वंगभस्महरेन्मेहान्पंचाननइवद्विपान् ॥ ३६ ॥

अर्थ–सेमलकी छालके रसमें शहद और हल्दीका चूर्ण कर वंगकी भस्मकेसाथ सेवन करे तो सब प्रमेह ऐसे दूर होजाते हैं कि जैसे सिंहके सामने हाथी नहीं ठहरता ॥ ३६ ॥

निश्चन्द्रमाभ्रकंभस्मसवरारजनीरजः ॥
मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिकृंतति ॥ ३७ ॥

अर्थ–निश्चन्द्र अभ्रकभस्म त्रिफला और हल्दीके साथ शहदसे चाटे तो प्रमेहरोग दूर होते हैं ॥ ३७ ॥

हेमांभोधरचंदनंत्रिकटुकंधात्रीप्रियालाकुहू ।
मज्जानस्त्रिसुगंधिजीरकयुगंशृंगाटकंवंशजम् ॥
जातीकोशलवंगधान्यकयुतंप्रत्येककर्षद्वयम् ।
पूगस्याष्टपलंविचूर्ण्यचपयःप्रस्थत्रयेसर्पिषः ॥३८॥

अर्थ–नागरमोथा चंदन सोंठ मिरच पीपल आँवला चिरौंजी बेरकी मींगी तज इलायची. तालीसपत्र काला

जीरा सफेदजीरा सिंघाडेकी गिरी वंशलोचन जायफल लौंग धनियाँ कपूर दालचीनी यह सब बराबर आठ २ टंक ले सबको कूट पीस कपडछान कर रख छोडे दक्षिणकी चिकनी सुपारी १२८ टंक ले ॥ ३८ ॥

दद्याद्गोःकुडवंसितार्द्धकतुलांधात्रीवरीद्वयंजली।
मन्दाग्नौविपचेद्विपक्वशुभदिनेसुस्निग्धभांडेक्षिपेत् ॥
यःखादेद्दिनशःप्रभातसमयेमेहांश्चजीर्णज्वरम्।
पित्तंसाम्लमसृक्स्रुतिंगुदहृशोर्वक्राक्षिनासासुच॥ ३९ ॥

अर्थ-गौका नवीन घृत ४८ टंक ले सफेद मिश्री ८०८ टंक पीछे सुपारियोंको खरलमें डाल कूटकर कपरछान कर १२४ टंक दूधमें डालकर मावाकरे पीछे उस मावेको घृत मिलाकर भूने पूर्वोक्त सुपारीपाककी विधिसे इसे बनाले अर्थात् मन्दाग्निमें इसको पकाले और अच्छे दिनमें इसे सुन्दर वर्तनमें रखछोडे जो इसे प्रातःकालको खाय उसको प्रमेह जीर्णज्वर पित्त अम्ल रुधिरविकार गुदरोग दृष्टिरोग मुखरोग नेत्ररोग नासारोग दूर होते हैं ॥ ३९ ॥

मन्दाग्निंचविजित्यपुष्टिमतुलांकुर्याच्चशुक्रप्रदम्।
पूगंगर्भकरंपरंगदहरंस्त्रीणामसृग्दोषजित् ॥ ४० ॥

अर्थ-यह मन्दाग्निको जीतकर महापुष्टि वीर्य देताहै यह सुपारीपाक गर्भ करनेवाला रोगहारी. तथा स्त्रियोंके रुधिरविकारको दूर करता है ॥ ४० ॥

एलांसकर्पूरसितांसधात्रीजातीफलांसक्षुरशाल्मलीकम्।
सुताभ्रवंगायसभस्मचैतत्संमर्दयेत्तुल्यलवंमनीषी ४१॥

अर्थ–छोटी इलायची भीमसेनीकपूर मिश्री आमले जायफल गोखरू सेमलकी छाल पारा गंधक वंग लोहभस्म सबको समान भाग ले खूब खरल करै ॥ ४१ ॥

ततोभवत्येपरसःप्रमेहकुठारनामाविदितप्रभावः ।
निष्कार्द्धमात्रोमधुनावलीढोनिहंतिमेहानखिला-
नुदग्रान् ॥ ४२ ॥

अर्थ–तो यह प्रमेहकुठाररस सिद्ध होवे इसमेंसे दो मासे शहदके साथ सेवन करे तो यह सम्पूर्ण प्रमेहरोगोंको दूर करै ॥ ४२ ॥

अथ मेदः ।

अव्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाहारसेविनः ।
मधुरान्नरसात्प्रायःस्नेहान्मेदोविवर्द्धते ॥ ४३ ॥

अर्थ–कसरतआदि परिश्रमका न करना दिनको सोना कफकारक आहारोंका सेवन मधुर अन्नरस और स्निग्ध सेवनसे बहुधा मेद बढता है ॥ ४३ ॥

मेदोमांसविवृद्धित्वात्स्थूलस्फिगुदरस्ततः ।
अपथोपचयोत्साहोनरोतिस्थूलउच्यते ॥ ४४ ॥

अर्थ–मेद और मांसके बढनेसे स्थूल स्फिक् उदर धातुओंके उपचय होनेसे अर्थात सब धातुओंके बढनेसे मार्ग बंद होजाते हैं इस कारण धातु पुष्ट नहीं होते और मेद बढता है इससे मनुष्य सब कामकाज करनेमें असमर्थ होजाता है ॥ ४४ ॥

मस्तुनासक्तवः पीता मेदोवृद्धिविनाशनाः ।
बिल्वपत्ररसोवापिगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ ४५ ॥

अर्थ-दहीके जलके साथ सत्तू पान करनेसे मेदवृद्धिरोग दूर होताहै और बिल्वपत्रका रस गात्रदौर्गंध्यको नाश करताहै ॥ ४५ ॥

तिलसर्षपसठीभार्ङ्गीकुष्ठसमंगाभयाब्दजलैः ।
साम्रत्वग्भिर्लेपोमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः पुंसाम् ४६ ॥

अर्थ-तिल सरसों सठी भारंगी कूठ मंजीठ जंगीहरड नागरमोथा सुगंधवाला इनका आमकी छालसहित लेप करनेसे पुरुषोंका मेद रोग और दुर्गन्धि रोग दूर होता है ४६

अथ श्वयथुः ।

रक्तपित्तकफान्वायुःशिराःप्रावाहयेद्बहिः ।
शोथंकरोतिनवधादोषक्ष्वेडाभिघाततः ॥ ४७ ॥

अर्थ-रक्तपित्त और कफको अपने कारणोंसे दूषित होकर वायु बाहरकी नसोंमें प्राप्त करती है वह नौ प्रकारका शोथ होता है वह दोष ताडन और घातसे होता है ॥ ४७ ॥

गुडपिप्पलिशुण्ठीनांचूर्णंश्वयथुनाशनम् ।
आमजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥ ४८ ॥

अर्थ-गुड पीपल सोंठ इनका चूर्ण शोथ रोगका नाश करता है तथा आम अजीर्णको दूर करताहै शूलनाशक और वस्तिशोधक है ॥ ४८ ॥

गुडार्द्रकंवागुडनागरंवागुडाभयांवागुडपिप्पलींवा ।
कर्षाभिवृद्ध्यात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमासम् ॥

अर्थ-गुड अदरख वा गुड सोंठ वा गुड जंगीहरड वा गुड पीपली इनको समभाग मिलाकर दो तोले प्रथम दिन खाने-

से दूसरे दिन चार तीसरे दिन छै चौथे दिन आठ इस प्रकार दो दो तोले नित्य बढाते जाय जब तीन पलकी मात्रा होजाय तबसे बीसदिन पर्यन्त उतनाही खाते रहना इस प्रकार एक मास पर्यन्त यह मात्रा पचजाय तब दूधभात अथवा यूषभात अथवा मांसरस खाय तब सब प्रकारका शोथ जाय ॥ ४९ ॥

शोफप्रतिश्यायगलास्यरोगान्
सश्वासकासारुचिपीनसादीन् ॥
जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारान्
हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान् ॥ ५० ॥

अर्थ-सूजन जुखाम गलेके रोग श्वास कास अरुचि पीनस जीर्णज्वर बवासीर संग्रहणीके विकार तथा दूसरे कफ वातरोगोंको भी दूर करता है ॥ ५० ॥

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककंटकारी-
पाठानिशाकरिकणामगधाजटानाम् ॥
चूर्णकवोष्णसलिलेनविलोड्यपीतं
नातःपरंश्वयथुरोगहरंनराणाम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-पीपल चित्रक सोंठ नागरमोथा जीरा भटकटैया पाठा हलदी गजपीपल पीपली जटामांसी इनका चूर्ण कर गरमजलके साथ मिलाकर पीनेसे इससे अधिक शोथ रोगको दूर करनेवाली और औषधि नहीं है ॥ ५१ ॥

अथ मुष्कवृद्धिः ।

अधोगतिर्वंक्षणतोमुष्कौप्राप्यकरोतिहि ।
दोषास्रमेदोमूत्रांत्रैःसतयोर्वृद्धिमरुत् ॥ ५२ ॥

अर्थ-अपने कारणोंसे कुपित हो नीचेको गमन करने-वाले शोथ और शूलको करनेवाले जांघकी संधिमें प्राप्त होकर अंडकोशकी चलानेवाली नाडीको पीडित कर उन अंडकोशोंको बढाता है उसको अंडवृद्धि कहते हैं वह वातादि दोषसे तीनप्रकार रक्तसे चौथी मेदसे पांचवीं मूत्रसे छठी आंतोंसे सातवीं है ॥ ५२ ॥

चन्दनंमधुकंपद्ममुशीरंनीलमुत्पलम्।
क्षीरपिष्टैःप्रलेपःस्याद्दाहशोथव्रणापहः ॥ ५३ ॥

अर्थ-लालचन्दन महुआ पद्माख खस नीलोफर इनको ले दूधके साथ लेप करनेसे दाह और शोथ दूर होताहै५३॥

रास्नायष्टचमृतैरंडबलागोक्षुरसाधितः।
क्वाथोंत्रवृद्धिंहंत्याशुरुबुतैलेनमिश्रितैः ॥ ५४ ॥

अर्थ-रास्ना मुलैठी गिलोय एरण्ड खरेटी गोखरू इनका काढा कर अण्डके तेलमें मिलाय अण्डीके तेलके साथ मलनेसे अंत्रवृद्धि दूर करता है ॥ ५४ ॥

अथ व्रध्नः।

वंक्षणेदोषजःशोथोब्रध्नइत्यभिधीयते।
भृष्टश्चैरंडतैलेनकल्कःपथ्यासमुद्भवः ॥ ५५ ॥
कृष्णासैन्धवसंयुक्तोब्रध्नरोगहरःपरः।
सद्योमृतस्यकाकस्यमलेनपरिलेपनात् ॥ ५६ ॥

अर्थ-जांघकी संधिमें जो दोषोंसे शोथरोग होजाता है उसे व्रध्न कहते हैं हरडका कल्क कर अण्डके तेलमें भून-ले ॥ ५५ ॥ उसमें पीपल और सेंधा डालकर लेप करनेसे व्रध्नरोग दूर होता है अथवा तत्काल मरे काककी बीटका बदपर लेप करै ॥ ५६ ॥

व्रध्नरोगःप्रयात्याशुरविणेवतमश्चयः ।
पक्वेंप्रदारणंकृत्वाप्रकर्त्तव्याव्रणक्रिया ॥ ५७ ॥

अर्थ-तो तत्काल बदका नाश होजाता है जैसे सूर्यके सामने अंधकार दूर होजाता है और जो पक जाय तो उसे चीरकर व्रणक्रिया करै ॥ ५७ ॥

अथ गलगंडः।

निबद्धःश्वयथुर्यस्तुमुष्कवल्लम्बतेगले ।
महान्वायदिवाह्रस्वोगलगंडंतमादिशेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-जो सूजन बढकर गलेमें अण्डकोशकी समान लटकती है वोह महान् वा ह्रस्व किसी प्रकारका हो उसे गलगण्ड कहते हैं ॥ ५८ ॥

अथ ग्रंथिः।

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः
प्रदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च ॥
वृत्तोन्नतंग्रंथिमरुक्सशोफं
कुर्वन्त्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः ॥ ५९ ॥

अर्थ-अतिशय दुष्ट हुए वातादिदोष मांस रक्त मेद और नसोंको दूषित करके गोल ऊंचा गांठसा बंधा हुआ शोथ उत्पन्न करते हैं वैद्य उसको ग्रंथि कहते हैं ॥ ५९ ॥

अथ गंडमाला।

कर्कंधुकोलामलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यागलवंक्षणेषु ।
मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्याद्गंडमालाबहुभिस्तुगण्डैः

अर्थ-जो मेद और कफ करके कांख कंधे गरदन गला जंघा और कमरकी संधिमें बडे बेर तथा छोटे बेरके प्रमाण-

वा आमले सरीखी बहुत दिनोंमें धीरेधीरे पकनेवाली बहुतसी गांठें होतीहैं उनको गंडमाला कहतेहैं ॥ ६० ॥

सर्षपान्छणबीजानिशिग्रुबीजातसीयवान्।
मूलकस्यचबीजानितक्रेणाम्लेनपेषयेत् ॥
गंडानिग्रंथयश्चैवगंडमालाःसुदारुणाः।
प्रलेपनात्प्रशाम्यन्तिविलयंयान्तिचाचिरात् ॥६१॥

अर्थ-सरसों सहंजनेके बीज सनके बीज अलसी जव और मूलीके बीज इनको खट्टे मट्ठेमें पीसकर लेप करे तौ गलगंड ग्रंथि गंडमाला शीघ्रही शान्त हो जाती है ॥ ६१ ॥

अथ श्लीपदः।

श्लीपदःपादशोथःस्यान्मेदःकफसमुद्भवः।
नासाकर्णाक्षिहस्तादावप्याहुःकेप्यमुंपुनः ॥ ६२ ॥

अर्थ-अपने २ चिह्नोंको प्रगट दिखानेवाले वातादिक दोषोंसे मेदमांसके आश्रित शोथ उत्पन्न होताहै वह चरणमें होनेसे श्लीपद कहाताहै कोई कहतेहैं कि यह नाक कान आंख और हाथमें भी होताहै ॥ ६२ ॥

धत्तूरैरंडवर्षाभूनिर्गुण्डीशिग्रुसर्षपैः।
प्रलेपःश्लीपदंहन्तिचिरोत्थमपिदारुणम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-धतूरा एरण्ड संभालू पुनर्नवा और सहेंजना इनकी जड और सरसोंका लेप दीर्घकालके हुए दारुण श्लीपदको दूर करताहै ॥ ६३ ॥

अथ विद्रधिः।

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चक्षतेनक्षतजेनच।
गुल्मवद्विद्रधिःप्रायःस्त्रीस्तनेरक्तविद्रधिः ॥ ६४ ॥

अर्थ-अपने कारणोंसे कुपित हुए वातादि त्वचा मांस मेदको दूषित कर वेदनायुक्त गोल अथवा लम्बी सूजन उत्पन्न करतेहैं वैद्य उसको विद्रधि कहतेहैं वह वात पित्त कफ सन्निपात क्षतज और रक्त भेदोंसे छःप्रकारकी है वह गुल्मवत् होतीहै प्रायः स्त्रीके स्तनमें रक्तविद्रधि होतीहै ॥ ६४ ॥

यवगोधूममुद्गैश्चस्विन्नैःपिष्टैःप्रलेपयेत् ।
विलीयतेक्षणेनैवमपक्वश्चैवविद्रधिः ॥ ६५ ॥

अर्थ-जौ गेहूं मूंग इन्हें पीस गरम कर लेप करनेसे क्षण मात्रमें अपक्व विद्रधि नष्ट होजातीहै ॥ ६५ ॥

अथ व्रण ।

एकदेशोत्थितःशोथोव्रणानांपूर्वलक्षणम् ।
दोषैःपृथक्समस्तैश्चरक्तजागंतुजेश्चषट् ॥ ६६ ॥

अर्थ-जो शोथ देहके किसी अंगमें उत्पन्न होताहै वह व्रणोंका पूर्वरूप है वात पित्त कफ सान्निपात रक्तज और आगन्तुज इन भेदोंसे छःप्रकारका है ॥ ६६ ॥

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः ।
ससर्पिभिःप्रलेपःस्याच्छोथनिर्वापणःपरः ॥ ६७ ॥

अर्थ-बड गूलर पीपल पाखर और बेंत इनकी छाल लेकर पानीमें पीस उसमें घृत मिलाय कुछ गरम कर सुहाता २ लेप करे तो व्रण बैठ जायगा ॥ ६७ ॥

तैलेनसर्पिषावापिताभ्यांवासक्तुपिंडिका ।
सुखोष्णःशोथवान्कार्य उपनाहःप्रशस्यते ॥ ६८ ॥

अर्थ-अथवा सरसोंके तेलसे वा घृतसे या दोनोंसे सत्तुकी पिंडी बनाकर कुछ गरम कर लेप कर पसीना लेवे । व्रण दूर हो ॥ ६८ ॥

रसगंधकयोश्चूर्णंतत्समंमृढशंखकम् ।
सर्वतुल्यंतुकंपिल्लंकिंचित्तुत्थसमन्वितम् ॥ ६९ ॥

अर्थ-अथवा पारे और गंधकका चूर्ण कर उसकी बराबर मुरदासंग ले इन सबकी बराबर कबीला ले उसमें कुछ तूतिया डाले ॥ ६९ ॥

सर्वंसंमेलयेद्दत्त्वाघृतंसर्वचतुर्गुणम् ।
पिचुमन्दंप्रदातव्यंदुष्टव्रणविशोधनम् ॥ ७० ॥

अर्थ-इन सबको मिलाकर इससे चौगुना घृत डाले और नीमके पत्ते डालकर यह सिद्ध करके घावपर लगानेसे ७०॥

नाडीव्रणहरंचैवसर्वव्रणनिपूदनम् ।
येव्रणानप्रशाम्यन्तिभेषजानांशतेनच ॥
अनेनतेप्रशाम्यन्तिसर्पिषास्वल्पकालतः ॥ ७१ ॥

अर्थ-यह नाडीव्रण हरता और सम्पूर्ण व्रण दूर करता है जो व्रण शत औषधियोंसेभी दूर नहीं होते इस घृतसे वह थोडेही कालमें शान्त होजाते हैं ॥ ७१ ॥

सद्योव्रणः ।

नानाधारामुखैःशस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ।
भवन्तिनानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे ॥ ७२ ॥

अर्थ-जो अनेकप्रकारके धारामुखशस्त्र शरीरके अनेक स्थानोंमें लगनेसे उनसे नाना प्रकारके व्रण होते हैं उनका वर्णन सुनो ॥ ७२ ॥

पट्टसूत्रेणसंपीड्यनिर्वातभवनेस्थितः ।
लोम्निकांरचयित्वातमपितायाःकलोष्णगा ॥ ७३ ॥

अर्थ-तत्काल व्रण होनेपर पवन रहित स्थानमें स्थित हो उसे सूत्रसे, पीडित कर अर्थात रेशमसे लपेटकर किञ्चित उष्ण आश्चोतनादिक उपाय करे मैदाकी किञ्चित गरम पुलटिस कर उसपर रक्खे ॥ ७३ ॥

अथवादीप्यलवणपोटल्यास्वेदयेन्मुहुः ।
संतप्तयातप्तलोहपात्रसंयोगतःक्रमात् ॥ ७४ ॥

अर्थ-अथवा अजवायन और लोनकी पोटली कर अग्नि-पर तपेहुए तवेपर उस पोटलीको तपाकर उस व्रणको शोधन करे ॥ ७४ ॥

मुहुर्मुहुर्यथादुःखंनप्राप्नोतिव्रणीनरः ।
दूर्वास्वरससंसिद्धंतैलंकंपिल्लकेनवा ॥ ७५ ॥

अर्थ-और वारंवार इस विधिसे सेकै जिससे व्रणी मनुष्यको दुःख न हो अथवा दूर्वाके रसमें सिद्ध किये तेलमें कवीला मिलाकर ॥ ७५ ॥

दार्वीत्वचश्चकल्केनप्रधानंव्रणरोपणम् ।
तिक्तासिक्थनिशायष्टीनक्ताह्वफलपल्लवैः ॥
पटोलमालतीनिंबपत्रैर्व्रण्यंशृतंघृतम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-अथवा दारुहलदी,तजके कल्कसे प्रधान व्रण रोपण होता अर्थात भरजाता है अथवा कुटकी, मोम, दारुहलदी, मुलहटी, करंजके बीज और पत्ते पटोलपत्र चमेलीके पत्ते नीमके पत्ते इनसे तयार किया घृतव्रणको भर देता है ७६॥

अथ विदीर्णसद्योव्रणः ।

आदौभग्नंविदित्वातुसेचयेच्छीतवारिणा ।
पंकेनालेपनंकुर्याद्बंधनंचकुशान्वितम् ॥ ७७ ॥

अर्थ-प्रथम व्रणको भग्नहुआ देखकर शीतल जलसे सेचन करे उसपर कीचका लेप करे और कुशका बंधन दे ॥ ७७ ॥

आलेपनार्थंमंजिष्ठामधुकंचाम्लपेपितम् ।
शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टंचलेपनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-आलेपनके निमित्त मजीठ, मुलहटी, कांजीसे पीस लगावे अथवा सौबार धोया घृत शालीचावल पीस उसमें घृत मिलाय लेप करे ॥ ७८ ॥

अथाग्निदग्धव्रणः ।

अग्निदग्धेव्रणेदेयंधातकीचूर्णमुत्तमम् ।
अतसीतैलसंमिश्रंवह्निदग्धव्रणापहम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-अग्निदग्धव्रणपर धवका चूर्ण कर लगावे अथवा उसको अलसीके तेलमें मिलाकर लगावे तो अग्निदग्ध व्रण रोपण होजाय ॥ ७९ ॥

अंतर्धूमविदग्धत्रिफलाचूर्णंविमिश्रितंतैलैः ।
क्षौमैःशीघ्रंशमयत्यग्निव्रणमाशुलेपेन ॥ ८० ॥

अर्थ-घरका धुआं और जलाकर त्रिफलेका चूर्ण कर तेलमें मिलाय और उसमें रेशम मिलाकर अग्निव्रणपर लेप करनेसे शीघ्र व्रण शान्त होता है ॥ ८० ॥

अथ भगंदरः ।

गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिडकार्त्तिकृत् ।
भिन्नोभगंदरो ज्ञेयः स च पंचविधो मतः ॥ ८१ ॥

अर्थ-गुदासे दो अंगुल एक बाजूपर पीडायुक्त फुडिया होती है वही फूटनेसे भगन्दर होताहै वह पांच प्रकारका है, यह रोग भगाकार विदीर्ण करता है इससे, भगन्दर कहतेहैं ॥ ८१ ॥

वटपत्रेष्टकाशुंठीगुडूच्यःसपुनर्नवाः ।
सुपिष्टाःपिडकोपस्थे लेपः शस्तो भगंदरे ॥ ८२॥

अर्थ-वरगदके कोमल पत्ते पुरानी ईंट, सोंठ, गुडूची और पुनर्नवा इनको बारीक पीस भगन्दरकी कच्ची फुनसीपर लेप करे ॥ ८२ ॥

तिलत्रिवृन्नागदन्तीमंजिष्ठाज्यैःससैन्धवैः ।
सक्षौद्रैश्चप्रलेपोयंभगंदरकुलांतकृत ॥ ८३ ॥

अर्थ-तिल, निशोथ, नागदन्ती, मंजीठ, घृत, सेंधव और शहद यह प्रलेप भगन्दरको नाश करता है ॥ ८३ ॥

करवीरनिशादंतीलांगलीलवणाग्निभिः ।
मातुलिंगार्कवत्साह्वैःपक्वतैलंभगन्दरे ॥ ८४ ॥

अर्थ-श्वेतकनेर हलदी दन्ती करिहारी सेंधानोंन चीता बीजपूर आक इन्द्रायण इनको तेलमें पकाकर भगन्दरपर लेप करे ॥ ८४ ॥

अथोपदंशः ।

हस्ताभिघातान्नखदंतपातादधावनादृत्युपसेवनाच्च ।
योनिप्रदोषाच्चभवन्तिशिश्ने पंचोपदंशा विविधोपचारैः

अर्थ-उपदंशका लक्षण कहतेहैं कि हाथसे मथन करनेसे जो झटका लगा है उससे तथा नख और दांतके लगनेसे तथा अच्छी प्रकार न धोनेसे अतिमैथुन करनेसे और योनिदोषसे (गरमी प्रदर रोगवाली) रजस्वला ब्रह्मचारिणी प्रसंगसे तथा औरभी अनेक प्रकारसे पांच प्रकारके उपदंश होतेहैं ॥ ८५ ॥

त्रिफलांमाषसंयुक्तांसमांशांमधुसंयुताम् ।
उपदंशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥ ८६ ॥

अर्थ-त्रिफला उडद बराबर कढाईमें जलाय उसकी राख शहदमें मिलाकर लेप करनेसे उपदंशके व्रण भर जाते हैं ॥ ८६ ॥

करंजनिंबार्जुनशालजंबू-
वटादिभिःकल्ककषायसिद्धम् ॥
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं
सदाहपाकस्रुतिदाहयुक्तम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-करंज नीम अर्जुन शाल जामुन वटादि वृक्षोंकी छालका कल्क कर काढा बनाय घृत डालकर सिद्ध करे इसके सेवनसे उपदंश दोष दाह पाक स्रुति दाह सब दूर होते हैं ॥ ८७ ॥

रसआकारकरभोलवंगंमरिचंतथा ।
विडंगमस्तकीचैतत्प्रत्येकंत्रिलवंमतम् ॥ ८८ ॥

अर्थ-पारा और अकरकरा लौंग काली मिरच वायविडंग मस्तकी यह प्रत्येक ३ तीन भाग ले ॥ ८८ ॥

अरुष्कराणांदातव्याद्विगुणात्वेकविंशतिः ।
दीप्यस्यद्वादशलवागुडस्यापितथामताः ॥ ८९ ॥

अर्थ-और उससे दुगुने भिलावे इक्कीस ले अजवायन बारह भाग और इतनाही गुड ले ॥ ८९ ॥

युक्त्यासंमेल्यगुटिकांखादेत्कर्षद्वयोन्मिताम् ।
पथ्यंदुग्धौदनंरम्यंतांबूलंपरिशीलयेत् ॥
घस्राणामेकविंशत्यामुच्यतेतूपदंशतः ॥ ९० ॥

अर्थ-इनकी युक्तिसे गुटिका बनाकर प्रतिदिन एक कर्ष खाय दूध चावल भात इसमें पथ्यहै तथा ताम्बूल भी पथ्य है २१ इक्कीस दिन सेवनसे उपदंश रोग दूर होताहै ॥ ९० ॥

अथ विसर्पः ।

क्षुद्रपामाकृतिर्देहेपरितःपरिसर्पणात् ।
विसर्पोजायतेजंतोस्तोदस्रावरुजाकरः ॥ ९१ ॥

अर्थ-क्षुद्र पामारोगकी समान देहमें सर्वत्र फैलनेसे विसर्परोग कहलाता है इसमें सुई चुभनेकीसी पीडा और स्राव तथा पीडा होतीहै ॥ ९१ ॥

अग्निदग्धइवस्फोटादेहिनस्स्युर्ज्वराननाः ।
क्वचित्सर्वत्रदेहेषु रक्तपित्तसमुद्भवाः ॥ ९२ ॥

अर्थ-अग्निसे दग्ध हुएकी समान फोडे शरीरमें होते हैं और ज्वरयुक्त रक्तपित्तसे उत्पन्न हुए कभी सबदेहमें होतेहैं९२

विसर्पआदावुचितोस्रसेकोवमिर्विरेकश्चविरूक्षणंच ।
तथापतृप्तिर्नविसर्परोगेसंस्नेहनंशस्तमितिब्रुवंति ९३

अर्थ-विसर्पकी आदिमें रक्तका सेक उचित है वमन विरेचन तथा रूखापन शरीरमें लाना चाहिये यदि इससे तृप्ति न हो तो स्नेहन क्रिया करनी उचित है ॥ ९३ ॥

प्रच्छर्दनंराटफलंकलिंगंपथ्यान्वितंसर्वविसर्पहारि ।
शिरीषयष्टीनतचंदनैलामांसीहरिद्राद्रुमकुष्ठवालैः॥९४॥
लेपःससर्पिःप्रणुदत्यवश्यंविस्फोटदाहज्वरकान्विसर्पान्

अर्थ-वमन विसर्पको नाश करती है पटोल कुडा छोटी हरड सहित लेप करनेसे सब विसर्परोग दूर होते हैं शिर-

स मुलेठी तगर चन्दन इलायची बडी जटामांसी हलदी दारुहलदी कूठ सुगंधवाला इनको कूटकर लेप करनेसे विस्फोटक दाहज्वर और विसर्परोग दूर होताहै ॥ ९४ ॥

अमृतवृषपटोलंमुस्तकंसप्तपर्णं
खदिरमतिसवेत्रंनिंबपत्रंहरिद्रे ।
श्रुतमितिसविसर्पंकुष्ठविस्फोटकंडू-
रपनयतिमसूरींशीतपित्तज्वरंच ॥ ९५ ॥

अर्थ-आमला वासा पटोलपत्र नागरमोथा सप्तपर्ण विजयसार खैर कालावेत नीमके पत्ते दोनों हलदी इनका चूर्ण कर घीमें सान लेप करे तो विसर्प कुष्ठ विस्फोटक कण्डू मसूरिका शीत पित्तज्वरको दूर करता है ॥ ९५ ॥

अथ स्नायुः।

शाखासुकुपितादोपाःशोथंकृत्वाविसर्पवत् ।
कुर्युस्तंतुनिभान्कीटान्स्नायवस्तेनिरूपिताः ॥९६॥

अर्थ-शाखा (हाथ पैर) में कुपित हो वातादि दोष विसर्पकी समान तन्तुके आकार कीटको उत्पन्न करते हैं उनसे स्नायु होताहै यह स्नायुरोग है ॥ ९६ ॥

बब्बूलबीजंगोमूत्रपिष्टंहंतिप्रलेपनात् ।
स्नायुकानिसमस्तानिसशोथसरुजानिच ॥ ९७ ॥

अर्थ-बबूलके बीज गोमूत्रमें पीसकर लेप करे तो सम्पूर्ण स्नायु और शोथरोग दूर होताहै ॥ ९७ ॥

गव्यंसर्पिस्त्र्यहंपीत्वानिर्गुण्डीस्वरसंत्र्यहम् ।
पिबन्स्नायुकमत्युग्रंहन्त्यवश्यंनसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ-तीन दिन गौका घी और निर्गुण्डीका स्वरस पान करनेसे अवश्य महास्नायुरोग दूर होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ९८ ॥

अहिंस्रामूलकल्कस्यप्रलेपस्नायुकंजयेत् ।
पारावतपुरीपस्यमधुनाकलितस्यच ॥
गिलितागुटिकाहन्तिस्नायुकामयमुद्धतम् ॥ ९९ ॥

अर्थ-कलाजीके मूलका कल्क (पीसकर शीतल जलसे) लेपना स्नायुरोगको दूर करता है अथवा कबूतरकी विष्ठामें मधुका कल्क कर गुटिका सेवन करनेसे स्नायु रोग सर्वथा दूर होताहै ॥ ९९ ॥

अथ मसूरिका ।

मसूराकृतिसंस्थानाःपिडकाःस्युर्मसूरिकाः ।
आसां पूर्वं ज्वरः कंडूर्गात्रभंगोऽरतिर्भ्रमः ॥ १०० ॥

अर्थ-दुष्ट पवन और जल तथा क्रोधित ग्रहकी दृष्टिसे देहमें बढे हुए दोष दुष्टरक्तसे मिलकर मसूरके आकार फफोलोंको उत्पन्न करते हैं उनको मसूरिका कहते हैं इनके होनेके समय ज्वर खुजली शरीरमें ऐंठन अरुचि भ्रम त्वचाम सूजन और भ्रम होता है ॥ १०० ॥

वानीरविल्वजनितंकथितंपयुषितमुत्तरेदिवसे ।
चैत्रस्यपापरोगोनभवतिपिबतांकचिन्नृणाम् १०१॥

अर्थ-वेत और वेलका क्राथ कर उसे बासी कर दूसरे दिन पान करनेसे मनुष्यको कभी मसूरिका रोग नहीं होता ॥ १०१ ॥

चिंचाफलेनसहितांरजनींप्रपेष्य
येशीतलेनसलिलेनसकृत्पिबन्ति ।

तेषांभवन्तिनहिशीतलिकाःशरीरे
कार्यंत्विदंप्रथममेवतदुद्भवस्य ॥ २ ॥

अर्थ-वा चिश्चा (तिन्तिडी) के फलके साथ हलदी पीसकर जो ५ कवारभी शीतल जलसे पान करते हैं उनके शरीरमें शीतला नहीं होती यह माता निकलनेसे पहले ही करना चाहिये ॥ २ ॥

स्तवपाठैःसिद्धमंत्रजपैर्ग्रहविधानतः ।
शीतलाराधनैश्चंडीपाठैश्चैतामुपाचरेत् ।
अयमेवविधिःकार्यःकोद्रवाख्यामयेपिच ॥ ३ ॥

अर्थ-स्तुतिपाठ सिद्धमंत्रजप ग्रहके विधानसे शीतला आराधन तथा चण्डीपाठसे उपचार करना चाहिये यही विधि कोद्रव नामक रोगमें करे ॥ ३ ॥

अभ्यंगधौतांबरधारणानिश्मश्रुक्रियामंगललेपकृत्यम् ।
वाद्यारवादीनिचतद्गदार्त्तगेहेऽप्रशस्तानिवदंति संतः ४ ॥

अर्थ-तेल मलना धुए वस्त्र पहरना हजामत करानी मंगल लेपकृत्य बाजोंके शब्दादि करने इसमें अच्छे नहीं हैं ऐसा सन्त कहते हैं ॥ ४ ॥

अथाम्लपित्तम् ।

अविपाकक्लमक्लेदतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः ।
दाहोह्द्गलयोश्चैवारुचिःस्यादम्लपित्तके ॥ ५ ॥
कूष्माण्डमथचानीयपक्वंतत्खंडकानिच ।
निस्त्वचानिविधायाथरससेरमितेंबुनि ॥ ६ ॥
पाचयित्वाततःकुर्यात्कसारंतस्यगोघृते ।
नालिकेरस्यमज्जानंप्रस्थमात्रंमहोज्ज्वलम् ॥
पिष्ट्वागोपयसातस्यकसारंगोघृतेचरेत् ॥ ७ ॥
वेदसेरमितेदुग्धेप्रस्थद्वयमितांसिताम् ।

निक्षिप्यपाकंकृत्वातुकसारौतत्रनिक्षिपेत् ।
शृंगाटकंत्रुटिंचोरंमुस्तंचतजपत्रजे ॥ ८ ॥
कसेरुपर्पटोशीरधान्यकंगोस्तनीमपि ।
श्रीखंडंचूर्णितंकृत्वापंचटंकमितंपृथक् ॥ ९ ॥
तच्चूर्णंनिक्षिपेत्पाकेखादेत्तंपलसम्मितम् ।
यदम्लपित्तंनगतंयुतैर्नानाविधौषधैः ॥
असाध्यमपितच्चूर्णंनश्यत्यस्यनिषेवणात् ॥ ११० ॥

अर्थ-भोजनका न पचना एकसाथ घबराहट होनी कडवी और खट्टी डकारोंका आना देहमें गुरुता हृदय और कंठमें दाह अरुचि इन लक्षणोंसे अम्लपित्त जाने पेठेको ले उसे छीलकर छःसेर जलमें पकावे उसे पकाकर गौके घीमें उसका पाक करे फिर उसमें नारियलकी मींग (गोला) एक सेर डाले गौके दूधसे पीसकर उसका पाक गौके घीमें मिलादे फिर चार सेर गौके दूधको ले दोसेर मिश्री ले उसकी चासनी कर उस पाकको उसमें डालदे पीछे सिंघाडेकी मींग छोटी इलायची काली सठी नागरमोथा तज पत्रज कसेरु पर्पटी खस दाख और चन्दनका चूरा यह सब औषधी पांच पांच टंक लेकर इस चूर्णको उस चासनीमें डाले एक पल: प्रतिदिन इसका सेवन करे जो अम्लपित्त अनेक प्रकारकी औषधियोंके करनेसे न गया हो वह इसके सेवनसे असाध्य अम्लपित्त भी नष्ट होजाता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधन्वयवासकम् ॥
मधुनाकंठहृद्दाहमूर्च्छाश्लेष्माम्लपित्तनुत् ॥ ११ ॥
गुडकूष्माण्डकंचैवतथाखण्डामलक्यपि ॥
गुडक्षीरकणासिद्धंसर्पिरत्रप्रयोजयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ-हरड पीपल दाख मिश्री जवासा यह शहदके साथ सेवन करनेसे कंठरोग हृदयरोग दाह मूर्छा श्लेष्म और पित्त-रोग दूर करता है गुड पेठा खांड आमलकी वा गुड दुग्ध और पपिलमें सिद्ध किया घृत इसमें प्रयोग करें ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथोदर्दः ।

वरटीदंशवद्देहेकंडूलःशीतपित्तजः ।
उदर्दःसपृथक्प्रोक्तउत्कोठोभूरितोदवान् ॥ १३ ॥

अर्थ-शीतपित्तसे शरीरमें ततैयाके काटनेकी समान ददोरे चमडेके बाहर होजाते हैं उसमें खाज और सुईछे-दनेकीसी पीडा होतीहै उदर्द ॥ १३ ॥

मेथिकांमरिचंरात्रियवानींकारवीमपि ।
अहिफेनमेतान्यादायपृथक्पलमितानितु ॥ १४ ॥
बलिंपलद्वयमितंगोसर्पिःक्षीरशोधितम् ।
चूर्णंविधायसर्वेषामार्द्रकस्यरसेनतु ॥ १५ ॥
विधायगुटिकामेकांसार्द्धटंकद्वयोन्मिताम् ।
प्रत्यहंप्रातरश्नीयादुदर्दादेर्विनाशिकाम् ॥ १६ ॥

अर्थ-मेथी, कालीमिर्च, हल्दी, अजवायन, कलौंजी, अहिफेन (अफीम) यह पृथक् पृथक् चार २ तोले ले गन्धक दो पल लेकर गौके दूध वा घीमें शोधकर इन सबका चूर्ण कर अदरखके रसके साथ इसकी गुटिका बनाय ढाई टंक प्रतिदिन खाय तो उदर्दरोग दूर हो ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

यःसर्पिःसैंधवाभ्यक्तदेहश्चारक्तकंबली ।
शयीततस्यशाम्यंतिशीतपित्तादयोगदाः ॥ १७ ॥

अर्थ-जो सेंधा, घृत मिलाकर देहमें मल काला कम्बल ओढ शयन करे उसके शीतपित्तादि रोग शान्त होतेहैं १७॥

घृतगैरिकसिंधूत्थकुसुम्भकुसुमैःसमैः ।
उद्वर्त्तनंप्रशंसन्तिकोठोदर्द्दादिनाशनम् ॥ १८ ॥

अर्थ घी, गेरु, सैंधानोन, कुसुम्भके फूल इनको बराबर ले इनका उद्वर्तन करनेसे कुष्ठ उदर्द आदि नाश होजातेहैं १८॥

सगुडंदीप्यकंयस्तुकिंचित्कटुकतैलकम् ।
भक्षयेत्तस्यनश्यंतिसोदर्द्दाःकोठसंज्ञकाः ॥ १९ ॥

अर्थ-जो मनुष्य गुड, अजवायन, कुछ कडवे तेलके साथ भक्षण करे उसके उदर्द कोठ आदि रोग दूर होने हैं ॥१९॥

अथ कुष्ठम् ।

अत्युग्रपातकाहारघर्मश्रमविरेकिनाम् ।
कुष्ठान्यष्टादशनृणांजायंतेचोग्रकर्मणाम् ॥ १२० ॥

अर्थ-उग्रपातक विरुद्धभोजन गरमी धूपमें रहनेसे श्रम और विरेचन अधिक करनेसे उग्रकर्मवाले मनुष्योंके शरीरमें अठारह प्रकारके कोढ उत्पन्न होते हैं ॥ १२० ॥

पथ्याकरंजसिद्धार्थनिशावल्गुजसैन्धवैः ।
विडङ्गसहितैःपिष्टैर्लेपोमूत्रेणकुष्ठजित् ॥ २१ ॥

अर्थ-हरड, करंजुआ, सरसों, दारुहलदी, लालचन्दन, सैंधव, वायविडंग, इन सबको चूर्ण कर गोमूत्रके साथ लेपन करनेसे कोढ दूर होतेहैं ॥ २१ ॥

एलाकुष्ठविडंगानिशताह्वाचित्रकोवला ।
दंतीरसांजनंचेतिलेपःकुष्ठविनाशनः ॥ २२ ॥

अर्थ-बडी इलायची, कूठ, वायविडंग, सौंफ, चित्रक, खरेंटी, दन्ती, रसौत इनका लेप करनेसे कुष्ठ दूर होताहै २२ ॥

भल्लातकसहस्रैकंत्रिफलावारिणाक्षिपेत्।
द्रोणमात्रेपचेत्तावद्यावत्पादावशेषितम् ॥ २३ ॥
अर्थ-एक सहस्र भिलावे त्रिफलेके जलमें डाले और १०२४ तोले जलमें पकावै जब चौथाई शेष रहजाय॥२३॥

शर्करायादशपलान्येकत्राकुचिकापलम्।
तथैवात्रचदेयानिपलानिदशगुग्गुलोः ॥ २४ ॥
अर्थ-तब उसमें ४० तोले मिश्री डाले ४ तोले सोमराजि ले और इसीप्रकार ४० तोले गूगल डाले ॥ २४ ॥

खदिरारिष्टमंजिष्ठाबीजकंचेन्द्रवारुणी।
चित्रकंद्वेहरिद्रेचदेवदारुर्हरीतकी ॥ २५ ॥
भार्ङ्गीचेतिचसर्वेषांप्रत्येकंचपलार्द्धकम्।
प्रक्षिप्यगुटिकाकार्यानाम्नासर्वांगसुन्दरी ॥ २६ ॥
अर्थ-खैरसार नीमकी छाल मजीठ बिजौरा इन्द्रायन चीता दोनों हलदी हरड देवदारु भारंगी यह सब औषधीं दो २ तोले ले उस चासनीमें डालकर सर्वांगसुंदरी नामवाली यह गुटिका बनावै ॥ २५ ॥ २६ ॥

प्रत्यहंभक्षयेत्कुष्ठीत्वेतांबदरमात्रया।
सर्वाण्येवोग्रकुष्ठानिशीघ्रमेवव्यपोहति ॥ २७ ॥
अर्थ-कुष्ठी बेर प्रमाण इसको प्रतिदिन खाय तो बहुत शीघ्र सब प्रकारके कुष्ठोंको दूर करताहै ॥ २७ ॥

शरपुंखारणीकृष्णधत्तूरार्कमकोरिकाः।
निर्गुण्डीहिंसिकाशम्यउरुबूकस्तथैवच ॥ २८ ॥
अर्थ-शरफोंका धमासा काली मिरच धतूरा आक मकोय सिन्दुवार जटामांसी अमलतास लाल एरण्ड ॥ २८ ॥

एषांत्वचःसमाश्छायाशुष्काःकृत्वाततोभिषक् ।
तैलंपातालयंत्रेणनिष्कास्यप्रत्यहंतुतत् ॥ २९ ॥

अर्थ-इनकी छाल लेकर छायामें सुखावे और इनका पातालयन्त्रसे तेल निकाल ले ॥ २९ ॥

खादेन्मापमितंकुष्ठीमंडलाद्दिव्यकायवान् ।
शुद्धसूतसमोगंधोमृतायस्ताम्रगुग्गुलुः ॥ १३० ॥
त्रिफलाचमहानिंबश्चित्रकश्चशिलाजतु ।
इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंपलसंमितम् ॥ ३१ ॥
चतुःषष्टिकरंजस्यबीजचूर्णफलानिवै ।
तावद्देयंमृतंताम्रंमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ ३२ ॥
स्निग्धभांडेस्थितंखादेद्द्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत् ।
रसःकुष्ठकुठारोऽयंगलत्कुष्ठनिवारणः ॥ ३३ ॥

अर्थ-कुष्ठी मापभर इसको खाय तो मण्डलकुष्ठ दूर होकर दिव्यकाया होजातीहै । पारेकी भस्म गंधक लोहभस्म ताम्रभस्म गूगल हरड वहेडा आमला बकायनकी छाल चीतेकी छाल शिलाजीत यह ग्यारह औषध सोलह २ शाण ले करंजेके बीज ६४ शाण सबका बारीक चूर्ण कर अभ्रककी भस्म ६४ शाण लेकर चूर्णमें मिलादेवै, यह कुष्ठकुठार रस, गलित कुष्ठको दूर करता है ॥ १३०-३३ ॥

अथ कच्छुसिध्मपामादद्रुहस्तिचर्मादयः ।

निशासुधारग्वधकाकमाचीपत्रैःसदार्वीप्रपुनाटबीजैः ।
तक्रेणपिष्टैःकटुतैलमिश्रैःपामादिषूद्वर्त्तनमेतदिष्टम् ३४॥

अर्थ-हल्दी मूर्वा अमलतास काकमाची देवदारु चकवडेके बीज इनको मट्ठेके साथ पीस कडवा तेल मिलाकर लेप करनेसे पामा दद्रुरोग दूर होताहै ॥ ३४ ॥

व्योषंमूलकबीजानिप्रपुन्नाटफलानिच।
एतान्यम्लप्रतिष्ठानिकुष्ठेपूद्वर्त्तनंपरम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-सोंठ मिरच पीपल मूलीके बीज चकवडेके फूल यह कांजीके साथ कुष्ठरोगमें लेप करनेसे परम आरोग्यता करते हैं ॥ ३५ ॥

सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेषतः।
अर्कपत्ररसेपक्वंरजनीकल्कसंयुतम् ॥
कटुतैलंहरेत्तूर्णमासात्कच्छूंविचर्चिकाम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-सिध्म किटिभ और दादरोगमें विशेषकर आकके पत्रके रसमें हल्दीका कल्क कर कडवे तेलमें पकाके लेप करनेसे एक महीनेमें कच्छू और विचर्चिकारोग दूर होताहै ॥ ३६ ॥

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगली-
स्नुक्सिन्धूत्थकुमारिकाजलधरार्कक्षीरधूमैंशजैः ॥
दद्रुघ्नैडगजाविडंगमरिचक्षौद्रैश्चखारीयुतै-
र्गोमूत्रैर्गजचर्मदद्रुरकसाकण्डूघ्नमुद्वर्त्तनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-चौंटली चीता शंखकी भस्म हलदी दूर्वा हरड करिहारी सेहुंड सेंधानोन बडी इलायची घीकुवाँर वा(मालती) नागरमोथा आकका दूध चकवड (चक्रमर्दक) वा (दादमर्दक) वायविडंग कालीमिर्च शहद खारीनोंन

यह सब बराबर लेकर गोमूत्रमें सिद्ध कर लेप करे तौ गजचर्म दद्रु रकस खुजली आदि रोगोंको दूर करताहै ॥ ३७ ॥

मृदूनिताम्रपत्राणितैलाद्यैःशोधितानिच ।
तच्चतुर्गुणसिन्धूत्थचूर्णलिप्तानिकारयेत् ॥ ३८ ॥
उपर्यधोनिधायाहोरात्रमेकंभिषग्वरः ।
तैलंताम्राद्द्विगुणितंनिंबूरसविमर्दितम् ॥ ३९ ॥
निश्चंद्रिकीकृतंतेनतानिपत्राणिलेपयेत् ।
स्थापयित्वातानिवस्त्रेततस्तेनैववेष्टयेत् ॥ ४० ॥

अर्थ–कोमल ताम्रपत्र तैलादिमें शोधन करै उनसे चौगुना सेंधा उनके ऊपर नीचे लगाकर एकरात्रितक रहनेदे फिर ताम्बेसे दूने तेल और नींबूके रसमें उसे खरल करै जबतक कि तेलकी बूंदोंकी चान्द्रिका न मिटे तबतक नींबु और तेलको खरल करै जब चन्द्रिका मिटजाय तब ताम्बेके पत्रपर उसे लपेटे फिर उसके ऊपर कपरोटी देकर फिर वह तेल उसपर लेपन करै ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

सप्तवारंतुमृच्छितवस्त्रैःसंवेष्टयेत्ततः ।
विधायगोलकंशुष्कंपक्वंगजपुटेनतत् ॥ ४१ ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यगुंजाद्वयमितंनरः ।
सितयाशाणमितयाचतुःपिप्पलियुक्तया ॥ ४२ ॥
युक्तंसंभक्षयेत्प्रातःशाकाम्लरहिताशनः ।
मंडलंवातरक्तंचसभयंचोपदंशकम् ॥
दद्रूंकंडूंविसर्पंचनिश्चितंनाशयेद्द्रुतम् ॥ ४३ ॥

इति श्रीगोरखामिशिवानंदभट्टारिगचितेवैद्यरत्ने तृतीयः प्रकाशः ॥ ३

अर्थ-फिर सात वार मृत्तिकाको लपेट फिर उसके ऊपर वस्त्र लपेटै इसप्रकार उसका गोला बनाय सुखाकर गज-पुटमें फूंकदे ठंढा होनेपर उसको निकालले उसको दो चौंटलीमात्र चारमासे मिश्रीके साथ खानेसे और पीपलके साथ सेवन करनेसे अर्थात् प्रातःकाल खानेसे शाक और अम्ल पदार्थका सेवन करनेसे मण्डल वातरक्त सभय उपदंश दाद खुजली विसर्प पित्ती आदि रोग अवश्य और शीघ्रतासे नष्ट होतेहैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

इति श्रीगोस्वामिचिदानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-मिश्रकृतभाषाटीकायां तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

अथ शिरोरोगः।

अकालपलितंपीडाःसूर्यावर्त्तार्द्धभेदकाः।
इत्यादयःशिरोरोगास्तान्यथादोषमाहरेत् ॥ १ ॥

अर्थ-अकालमें बालोंका सफेद होना शिरमें दर्द सूर्यावर्त आधाशीशी इत्यादि शिरके रोग होते हैं यथादोष उनको शोधन करना चाहिये ॥ १ ॥

कुष्ठमेरण्डजंमूलंलेपात्कांजिकपेषितम्।
शिरोर्तिंनाशयत्याशुपुष्पंवामुचुकुंदजम् ॥ २ ॥

अर्थ-कूठ अण्डकी जड कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे शीघ्र शिरकी पीडा नष्ट होतीहै अथवा मुचुकुंदके फूल पीसकर लगावै ॥ २ ॥

सशर्करंकुंकुममाज्यभृष्टंनस्यंप्रदेयंपवनासृगुत्थे ॥
भ्रूकर्णनासाक्षिशिरोर्द्धशूलेदिनाभिवृद्धिप्रभवेऽपिरोगे ३

अर्थ-केशरको घृतसे भून उसमें कन्द मिलायकर नास देनेसे वातरक्तविकार भौं, कान, नाक, आंखपीडा, आधाशीशी दुपहरतक शिरका दर्द घटना फिर बढना आदि अनेकपीडा शान्त होतीहैं ॥ ३ ॥

कृष्णाब्दशुंठीमधुकशताह्वोत्पलवातकैः ।
जलपिष्टैःशिरोलेपःसद्यःशूलनिवारणः ॥ ४ ॥

अर्थ-कालाजीरा नागरमोथा सोंठ मुलैठी सोंफ नील-कमल असनपर्णी इनको जलमें पीस लेप करनेसे बहुत शीघ्र शिरकी पीडा दूर होती है ॥ ४ ॥

मधुकमधूकविडंगैःसभृंगराजनागरैर्घृतंसिद्धम् ।
षड्बिंदुनस्यदानादेतच्छीर्षामयंहन्ति ॥ ५ ॥

अर्थ-महुआ मुलैठी वायविडंग भृंगराज सोंठ इनको घृतमें सिद्ध कर छः बूंद नासिकामें टपकानेसे शिररोग दूर होताहै ॥ ५ ॥

बृहतीफलरसपिष्टंगुंजायाःफलमथापिवामूलम् ।
हेमनिघृष्टंलिप्तंव्यपनयतिमहेन्द्रलुप्ताख्यम् ॥
अर्द्धमूर्द्धव्यथाखिन्नःसितांशीतांबुनापिबेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-कटेरीके फलोंका रस पीसकर उसमें चौंटलीके फल वा उसका मूल धतूरेके साथ पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग दूर होता है (जो शिरके बाल गिरजाते हैं वह इन्द्रलुप्त कहाता है) जो आधे शिरमें पीडा हो तो मिश्री डाल शीतलजल पिये ॥ ६ ॥

अथ नेत्ररोगः ।

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यंदश्चतुर्विधः ।
प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्रामयाकरः ॥ ७ ॥

अर्थ-वात पित्त कफ और रक्तसे चारप्रकारका नेत्राभिष्यन्द होता है अर्थात् नेत्र दुखने आतेहैं यह नेत्रोंका भयदायी घोर रोग कहा है ॥ ७ ॥

घृतभृष्टजलपिष्टंवस्त्रनिबिष्टंतिरीटमपहरति ।
दार्वीकाथपरिस्रुतमाश्च्योतनतोक्षिकोपगदान् ॥ ८ ॥

अर्थ-घीमें भून जलमें पीस वस्त्रमें छानकर लोध नेत्रोंपर लगानेसे सबप्रकारके रोग दूर करता है अथवा दारुहल्दीका क्काथ कर आश्च्योतन करनेसे आंखें अच्छी हों ॥८॥

जात्याःपत्रैर्घृतेभृष्टैश्चक्षुष्यमुपनाहनम् ।
अथवानिंबपत्रैःस्यादुपनाहोक्षिरोगजित् ॥ ९ ॥

अर्थ-अथवा चमेलीके पत्ते घीमें भून नेत्रोंमें बूंद डालै अथवा नीमके पत्तोंका लेप करना नेत्ररोग दूर करता है९॥

यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीतार्क्ष्यैःसमांशकैः ।
जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्ररुजापहः ॥ १० ॥

अर्थ-अथवा मुलैठी गेरू सेंधानोंन दारुहलदी रसौत इनको बराबर ले जलमें पीस पलकोंपर लेप करनेसे सब प्रकारका नेत्ररोग दूर होताहै ॥ १० ॥

जातारोगाविनश्यंतिनभवन्तिकदाचन ।
त्रिफलायाःकषायेणप्रातर्नयनधावनात् ॥ ११ ॥

अर्थ-सब रोग दूर होकर फिर कभी नहीं होते हैं अथवा त्रिफलेके काढेसे प्रातःकाल प्रतिदिन नेत्र धोवे ॥ ११ ॥

भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यद्दीयते ।
अचिरणवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥ १२ ॥

---

१ पोटलीकितना । नेत्रोंको उघाडकर दोअंगुलके अन्तरसे नेत्रोंमें दूध काढे आदिके बूंदटालनेको आश्च्योतन कहतेहैं ।

अर्थ-अथवा भोजन करके नेत्रोंको हथेलीसे अच्छीतरह प्रतिदिन मलनेसे वह जल बहुत शीघ्र तिमिररोगको दूर करता है आचमन कर हथेली घिसके नेत्रोंपर धरै ॥ १२ ॥

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं
पिबतिखलुनरोयोघ्राणरंध्रेणवारि ।
सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुपाताक्ष्र्यतुल्यो
वलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ १३ ॥

अर्थ-जब अर्द्धरात्रिके समय बादल न हों तब जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर नासिकाके द्वारसे जल पीताहै उसके नेत्र गरुडकी समान तीक्ष्ण होते हैं बुद्धि बढती है वालि और बालोंका पकना यह सब रोग दूर होते हैं॥१३॥

यस्त्रैफलंचूर्णमपथ्यवर्जीसायंसमश्नातिसमाक्षिकाज्यम् ।
समुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः १४॥

अर्थ-जो अपथ्यको त्यागकर संध्यासमय घृत और शहदके साथ त्रिफलेको खाता है उसके सब नेत्रविकार ऐसे छूटजाते हैं जैसे क्षीण धनवाले मनुष्यको नौकर छोड जाते हैं१४

वटक्षीरेणसंयुक्तंश्लक्ष्णंकर्पूरजंरजः ।
क्षिप्रमंजनतोहन्तिशुक्रंवापिघनोन्नतम् ॥ १५ ॥

अर्थ-वडके दूधके साथ कपूरको घिसकर नेत्रमें लगानेसे कठिन शुक्ररोग दूर होता है ॥ १५ ॥

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोध्रंसैन्धवसंयुतम् ।
भृंगराजरसेघृष्टंगुटिकांजनमिष्यते॥ १६ ॥
अर्मसतिमिरंकाचंकंडूंशुक्रंतथार्जुनम् ।
अंजनंनेत्रजान्रोगान्निहंत्येतन्नसंशयः ॥ १७ ॥

अर्थ-पीपली त्रिफला लाख लोध सैंधानमक इनको भांगरेके रसमें घिसकर गुटिका बनाय नेत्रोंमें लगावै तो अर्म तिमिर काच कंडू शुक्र फूला अर्जुन तथा अन्यभी नेत्रोंके रोगोंको यह अंजन दूर करता है इसमें संदेह नहीं है ॥ १६ ॥ १७ ॥

अथ कर्णरोगः ।

करोतिविगुणोवायुर्मलंसंगृह्यकर्णयोः ।
सकफःपाकबाधिर्यशूलस्रावाक्षिकान्गदान् ॥ १८ ॥

अर्थ-कुपित हुआ वायु कानमें प्राप्त हो कानोंका मल ग्रहण कर कफसे युक्त हो कर्णपाक बहरापन शूल स्राव तथा नेत्ररोगोंको करता है ॥ १८ ॥

अर्कस्यपत्रपरिणामपीतमाज्येनलिप्तंशिखिनाचतप्तम् ।
आपीडचतोयंश्रवणेनिषिक्तंनिहंतिशूलंबहुवेदनंच १९॥

अर्थ-जो जडकी ओरसे पीले होगये हों ऐसे आकके पत्तोंपर घी लगाकर आगके ऊपर सेके फिर उनको मसलकर वह अर्क कानमें डालनेसे कानका शूल और वेदना नष्ट होतीहै ॥ १९ ॥

हिंगुतुम्बुरुशुंठीभिःसिद्धंतैलंतुसार्षपम् ।
कर्णशूलेप्रणादेचबाधिर्येपि हितंमतम् ॥ २० ॥

अर्थ-हिंगु, तुम्बुरु, सोंठ इनके साथ सरसोंका तेल सिद्धकर कानमें डालनेसे कानकी पीडा दूर होती है ॥२०॥

समुद्रफेनचूर्णंतुन्यस्तंश्रवसिसस्रवे ।
पूयस्रावंव्रणंसार्द्धंहन्तिध्वांतमिवांशुमान् ॥ २१ ॥

अर्थ-यदि कानसे राध बहती हो तो समुद्रफेनका चूर्ण कर कानमें डाले इससे कानका पकना और बहना ऐसे दूर होता है जैसे सूर्य अंधकारको दूर करता है ॥ २१ ॥

सूर्यावर्त्तार्करसंरसंवासिंदुवारजम् ।
लांगलीमूलतोयंवात्र्यूपणंवापिचूर्णितम् ॥ २२ ॥
एतेयोगास्तुचत्वारःपूरणात्कृमिकर्णके ॥
कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यस्रपादिकान् ॥२३॥

अर्थ-सूर्यावर्तमें आकका रस वा सिन्दुवारका रस वा कालिहारीकी जडका रस वा त्रिकुटा पीसकर यह चार प्रयोग कानोंमें कृमि पडजाँय तो करना चाहिये यह बहुत शीघ्र कानोंके कीडे निर्मूल करता है तथा शतपदी अस्र पादिक को दूर करता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

अथ नसारोगः ।

अर्शासिपीनसस्रावःक्वचिच्छ्लेष्मिणःपूययोः ।
रोगानासोद्भवास्तेषांक्षयोनस्यादिभिर्भवेत् ॥ २४ ॥

अर्थ-अर्श पीनस राधका निकलना तथा रुधिरका निकलना यह ना रोग हैं नस्यादि देनेसे यह रोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

गुडमरिचविमिश्रंपीतमाशुप्रकामं
हरतिदधिनराणांपीनसंदुर्निवारम् ।
यदितुसघृतमन्नंश्लक्ष्णगोधूमचूर्णैः
कृतमुपहरतेसौतत्कुतोस्यावकाशः ॥ २५ ॥

अर्थ-गुड और कालीमिरच मिलाकर दही पीनेसे महाकठिन पीनसरोग दूर होता है और यदि घृतसहित गेहूंका चूर्ण प्रतिदिन सेवन किया जाय तो यह किसी प्रकार नहीं ठहर सकती ॥ २५ ॥

पाठाद्विरजनीमूर्व्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ।
दंत्यायत्तैलंसंसिद्धंनस्यतःपीनसापहम् ॥ २६ ॥

अर्थ-पाठा दोनों हल्दी मूर्वा पीपल जाईके पत्ते दंती-मूल, इनसे तेल तयार कर पके पीनसमें नास देनेसे पीनसरोग दूर होता है ॥ २६ ॥

नासाशोपेक्षीरपानंससितंचप्रशस्यते।
सवचंचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम् ॥
कारवीवस्त्रबद्धावाप्रतिश्यायमपोहति ॥ २७ ॥

अर्थ-नासाके शोषमें मिश्री डालकर क्षीरपान करे अथवा वचका चूर्ण कर कपडेकी पोटलीमें रख सूंघे अथवा करोंजी कपडेमें बांध सूंघनेसे जुखाम दूर होता है ॥ २७ ॥

अथ मुखरोगः।

सरक्तःकुपितःश्लेष्माकरोत्यास्यगदान्बहून्।
दौर्गंध्यपिडकापाकजिह्वादोषान्समासतः ॥ २८ ॥

अर्थ-रक्तसहित श्लेष्मा कुपित होकर मुखमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करता है जैसे दुर्गंध, पिडिका, मुखपाक, जिह्वारोग यह संक्षेपसे कहे हैं ॥ २८ ॥

मुखरोगेषुसर्वेषुक्षिपेन्मूलंपुनर्नवा।
तस्यमूलप्रपातेनमुखरोगःप्रशाम्यति ॥ २९ ॥

अर्थ-सब प्रकारके मुखरोगोंमें पुनर्नवाकी जड मुखमें डालनी चाहिये इसके डालनेसे मुखरोग शान्त होते हैं ॥ २९ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षादेवदारुफलत्रिकैः।
क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूषोमुखपाकजित् ॥ ३० ॥

अर्थ-जाईके पत्ते, गिलोय, दाख, देवदारु, त्रिफला इनका काढा कर शहदके साथ ठंढा कर पिये तो मुख पकना बंद हो ॥ ३० ॥

कांचनारत्वचःक्काथःप्रातर्गंडूषकेधृतः ।
जिह्वादारणकंहन्तिस्फोटानपिरुजाकरान् ॥ ३१ ॥

अर्थ-श्वेतकचनारकी छालका काढा कर प्रातःकाल ठंढा कर कुल्ला करै तो जिह्वाका फटना फुनसी छाले जो मुखमें होवें सब दूर होते हैं ॥ ३१ ॥

एलामधूच्छिष्टगुडेनपक्कंतैलंघृतंवाविनिहन्तिलेपात् ।
त्वग्भेदपारुष्यरुजोऽधरस्यपूयास्रसंस्रावमपिप्रसह्य३२॥

अर्थ-इलायची मोम यह गुडमें पकाकर तेल वा घृत मिलाकर लेप करनेसे होठोंका फटना पीडा राधका निकलना रुधिरका निकलना आदि रोग दूर होते हैं ॥ ३२ ॥

भद्रमुस्ताभयाव्योषविडंगारिष्टपल्लवैः ।
गोमूत्रपिष्टांगुटिकांछायाशुष्कांप्रलेपयेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ-और नागरमोथा, हरड, त्रिकुटा, वायविडंग, नीमके पत्ते इनको गोमूत्रसे पीस वटी कर छायामें सुखाले ३३

तांनिधायमुखेसुप्याच्चलदंतातुरोनरः ।
नातःपरतरंकिञ्चिच्चलदंतस्यभेषजम् ॥ ३४ ॥

अर्थ-दांत हिलनेमें और दांतोंकी पीडामें इसको मुखमें डाले और सोरहै इससे अधिक दांत हिलनेकी पीडा दूर करनेवाली कोई औषधी नहीं है ॥ ३४ ॥

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरंगकुष्ठंवचा-
शुंठीदीप्यहरीतकीसमकृतंचूर्णंमुखेधारितम् ।
वातघ्नंकृमिदन्तशूलशमनंदुर्गंधिदोषापहं
शैथिल्यक्षयकारिदंतपटुतावीजंचजात्यादिकम् ३५

अर्थ-जाईके पत्ते पुनर्नवा गजपीपल छोटी इलायची कूठ वच सोंठ अजवायन हरड इनको समान भाग ले चूर्ण कर मुखमें रखनेसे वात, कृमि, दन्तशूल, दुर्गन्धिदोष, शिथिलता अर्थात् दांतोंका हिलना आदि रोग दूर होतेहैं तथा जाईके बीजभी दांतोंको दृढ करतेहैं ॥ ३५ ॥

कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवचर्वणतस्त्र्यहात् ।
मुखपाकव्रणक्लेददौर्गंध्यमुपशाम्यति ॥ ३६ ॥

अर्थ-पीपल जीरा कूठ इन्द्रजौ इनके चबानेसे तीन दिनके मुखपाक मुखव्रण मुखका चिकटापन और दुर्गन्ध यह सब दूर होता है ॥ ३६ ॥

तेजोवतींदारुनिशांसकृष्णां
यवाग्रजंतार्क्ष्यगिरिंचपाठाम् ।
क्षौद्रेणकुर्याद्गुटिकां मुखेन
तांधारयेत्सर्वगलामयघ्नीम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-गजपीपल, दारुहलदी, हलदी, पीपल, जवाखार, रसौत, पाठा इनको पीस शहद मिलाकर गुटिका मुखमें रखनेसे सम्पूर्ण गलेके रोग दूर होतेहैं ॥ ३७ ॥

तांबूलमध्यस्थितचूर्णकेनदग्धंमुखंयस्यभवेत्कथंचित् ।
तैलेनगंडूषमसौविदध्यादाम्लारनालेनपुनःपुनर्वा ३८॥

अर्थ-जिसका मुख ताम्बूलमें चूना अधिक लगनेसे फटगयाहो वह तेलसे कुल्ला करे अथवा इम्ली सिरकेसे वारंवार कुल्ला करे ॥ ३८ ॥

अथ स्त्रीरोगाः । तत्रादौ कुसुमजननविधिः ।

सगुडःश्यामतिलानांकाथःपीतःसुशीतलोनार्याः ।
जनयतिकुसुमंसहसागतमपिसुचिरंनिरातंकम् ॥ ३९ ॥

अर्थ-अब स्त्रीरोग कहते हैं यदि स्त्री रजोवती न होती हो तो गुडके साथ काले तिलोंका काढा कर ठंढा करके पिये तो बहुतकालसे रजोवती न होनेवाली स्त्रीभी रजोवती होय ॥ ३९ ॥

अथ गर्भस्थितिः ।

विधिनामातुलुंगस्यबीजानिसकलानितु ।
ऋत्वंतेदुग्धपिष्टानिपीत्वाप्नोत्यबलासुतम् ॥ ४० ॥

अर्थ-अब गर्भस्थिति कहते हैं बिजौरे नींबूके बीज दूधमें पीसकर ऋतुके अनन्तर चौथेदिन पीनेसे स्त्रीके गर्भकी स्थिति होती है ॥ ४० ॥

नागकेशरमेकंतुपिष्ट्वाक्षीरेणयावलाम् ।
पिबेत्सासुतमाप्नोतिऋत्वंतेचिरजीविनम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-एक नागकेशरही अतिबलाके संग पीसकर दूधके साथ ऋतुके अन्तमें पीनेसे स्त्री चिरजीवी पुत्रको प्राप्त होतीहैं इसमें संदेह नहीं ॥ ४१ ॥

पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायामूलंपिष्टंचकन्यया ।
ऋत्वंतेघृतदुग्धाभ्यांपीत्वाप्नोत्यबलासुतम् ॥ ४२ ॥

अर्थ-पुष्यनक्षत्रपर लक्ष्मणा (श्वेतभटकटैया कटेरी) इसके मूल कन्याके हाथसे उखाडके लाकर पिसावे उसको ऋतुके अन्तमें घी और दूधके साथ पीनेसे अबला पुत्रको प्राप्त होतीहै ॥ ४२ ॥

काथेनहयगंधायाःसाधितंसघृतंपयः ।
प्रातःस्नात्वाबलापीत्वागर्भंधत्तेनसंशयः ॥ ४३ ॥

अर्थ-असगंधके काढेके साथ गायका दूध औटाकर इसमें घी डाल ऋतुस्नान कर चौथे दिन स्त्री पानकर तो गर्भ धारण करती है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४३ ॥

शिवलिंगीफलमेकमृत्वंतेयावलागिलति ।
वंध्यापिपुत्ररत्नंलभेतसानात्रसंदेहः ॥ ४४ ॥

अर्थ-जो स्त्री ऋतुके अन्तमें एक शिवलिंगीके फलको निगलले वह वंध्याभी पुत्रको उत्पन्न करे इसमें संदेह नहीं ॥ ४४ ॥

अथ गर्भसंरक्षणम् ।

पततंस्तंभयेद्गर्भंकुलालकरमृत्तिका ।
कंकतीमूलमाबद्धंकुमारीसूत्रकैर्हढम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जो कुम्हार बर्तन बनाते समय हाथ पोंछता जाता है उस मट्टीको पीनेसे गिरता हुआ गर्भ थम जाता है ॥४५॥

कटिदेशोनितंविन्यागर्भःस्तंभयतिध्रुवम् ।
कुशकाशोरुबूकाणांमूलैर्गोक्षुरकस्यच ॥
शृतंदुग्धंसितायुक्तंगर्भिण्याःशूलनुत्परम् ॥ ४६ ॥

अर्थ-खरेंटीकी जड कॉरी कन्याके कते सूतमें कमरमें बांधनेसे गिरताहुआ गर्भ थम जाता है कुश काश लाल एरण्डकी जड और गोखरू यह दूधमें औटाकर मिश्री डालकर पिये तो गर्भिणीकी पीडा दूर हो ॥ ४६ ॥

ह्रीवेरारलुरक्तचंदनबलाधान्याकवत्सादनी-
मुस्तोशीरयवासपर्प्पटविपाकाथंपिवेद्गर्भिणी ।
नानाव्याधियुतातिसारगदकेत्वस्रस्रुतौवाज्वरे
योगोयंमुनिभिःपरानिगदितःशास्त्रामयेप्युत्तमः ॥

अर्थ-ह्रीवेर सोनापाठा लाल चन्दन बरियारा धनिया गिलोय नागरमोथा खस जवासा पित्तपापडा और अतीस इनका काढा गर्भिणी पिये तो अनेक रंगकी पीडासहित अतिसार तथा रक्तप्रवाह ज्वर और सूतिकारोग नाश करनेमें यह उत्तम प्रयोग है ॥ ४७ ॥

अथ सुखप्रसवौषधम् ।

मातुलुंगस्यमूलानिमधुकंमधुसंयुतम् ।
घृतेनसहपातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ॥ ४८ ॥

अर्थ-बिजोरेकी जड मुलैठीका चूरन शहद घीके साथ पियावे तो स्त्री सुखसे प्रसूति होगी ॥ ४८ ॥

गुंजामूलस्यखंडानिसप्तसप्तदलानिच ।
खंडितानिकटिस्थानिसुप्रसूतिंप्रकुर्वते ॥ ४९ ॥

अर्थ-चौंटलीकी जडके साथ सात टुकडे और सात पत्ते कमरमें बांधनेसे स्त्री सुखसे प्रसववती होगी ॥ ४९ ॥

बाणपुंखजटावाथविशल्यंकुरुतेंगनाम् ।
कलापक्षार्कऋतुदिङ्मन्वष्टाष्टादशांबुधीन् ॥ ५० ॥
विलिखेन्नवकोष्टेपुत्रिंशाख्यंयंत्रमुत्तमम् ॥
सुखंप्रसूयतेनारीदृष्ट्वावाचक्रवर्धनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-अथवा उभयतो तीसका यंत्र लिखकर मिट्टीके शरावमें रखकर धूप देकर दिखावै तो स्त्री सुखसे प्रसूति होगी उसका क्रम यह है कि क्रमसे नौ कोठोंमें नीचे लिखे पत्रके अनुसार भरे तीसका यंत्र होगा इसीका आधा करनेसे पन्द्रहका यंत्र [illegible] दिखावै वा-चक्रवर्द्धनयंत्र लिखै ॥ ५०॥५१ ॥

४	१४	१२
१८	१०	२
८	६	१६

अथ अपरापातनविधिः।

कचवेष्टितयांगुल्याघृष्टेकंठेसुखंपतत्यपरा।
मूलेनलांगलक्यासंलिप्तेपाणिपादेवा ॥ ५२ ॥

अर्थ-बालोंसे वेष्टन कीहुई अंगुलीसे कंठमें घिसनै अथवा कलिहारीकी जडको पीस हाथ पैरोंमें लगानेसें गर्भ मुक्त होताहै ॥ ५२ ॥

अथ सूतिकारोगः।

अंगमर्दोज्वरःकंपःपिपासागुरुगात्रता।
शोथःशूलातिसारोचसूतिकारोगलक्षणम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-अंगमर्द ज्वर कंप पिपासा शरीरका भारीपन शोथ शूल अतिसारका होना यह सूतिकारोगके लक्षण हैं ॥५३॥

दशमूलीशृतंतोयंकवोष्णंपिप्पलीयुतम्।
पीतंतत्सूतिकारोगमुदग्रमपिकृंतति ॥ ५४ ॥

अर्थ-दशमूलका काढा कर उसमें पीपल डाल कुछ गरम कर पीनेसे बढा हुआभी सूतिकारोग शान्त हो जाताहै ५४॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः।
क्षीराढकेनसंयुक्तंखंडस्यार्द्धंतुलांपचेत् ॥ ५५ ॥

अर्थ-सोंठ आठ पल घी बीस पल दूध एक आढक २५६ तोले लेकर इसमें आधी तुला (२०० तोले) बूरा डालकर पकावै ॥ ५५ ॥

शतावरीस्कंधयोर्धनियसुगंधिपत्रिका।
कारवीमसिचव्याग्निमुस्तानांचपलंपलम् ॥ ५६ ॥
शुद्धाभ्रकायसंयोज्यंत्रिपलंचपृथक्पृथक्।
स्वर्णतारंततोयोज्यंयथाचाग्निबलंभवेत् ॥ ५७ ॥

लेहीभूतमिदंसिद्धंघृतभाण्डेनिधापयेत् ।
तद्यथाग्निबलंखादेत्सूतिकातुविशेषतः ॥ ५८ ॥
वल्यंवर्ण्यंतथायुष्यंवलीपलितनाशनम् ।
वयसःस्थापनंहृद्यंमन्दाग्निदीपनंपरम् ॥ ५९ ॥
आमवातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम् ।
मक्कल्लशूलशमनंसूतिकारोगनाशनम् ॥ ६० ॥

अर्थ-सौंफ जीरा त्रिकुटा तज पत्रज इलायची अजवायन चिरौंजी निर्गुण्डी चव्य चीता नागरमोथा यह सब एकएक पल ले और शुद्ध अभ्रक ले पृथक् २ तीनतीन पल ले यह सब वस्तु इसमें डालदे और जब यह लेहीभूत अर्थात् चाटनेकी समान होजाय तब इसको घृतके पात्रमें रखले इसको सूतिका अपने अग्नि बलके अनुसार खाय तो बल वर्ण बढ़े आयुकी वृद्धि और वली तथा पलित रोगका नाश होताहै यह अवस्थाकास्थापन करनेवाला दिव्य हृदयको आनंद बल देनेवाला मन्दाग्निको दीप्त करनेवाला आमवातका दूर करनेवाला सौभाग्य करनेवाला उत्तम मक्कल्लशूल शान्त करनेवाला और सूतिकारोगनाशक है ॥५६-६०॥

आर्द्रहेमफलंपिष्ट्वाकटुतैलंचतुर्गुणम् ।
विपचेद्घटिकायुग्मंतत्तैलंहेमसुन्दरम् ॥
दुष्टप्रस्वेदशमनंसूतिकारोगनाशनम् ॥ ६१ ॥

अर्थ-गीले धतूरेके फल पीसकर उसमें चौगुना कडवा ल डालकर पकावे इसप्रकार दोघडीमें यह हेमसुन्दर तेल बनजायगा यह दुष्ट प्रस्वेद (पसीने) का शान्त करने· ाला तथा सूतिकारोगको दूर करताहै ॥ ६१ ॥

अथ क्षीरविवर्द्धनम् ।

शतावरीक्षीरपिष्टापीतास्तन्यविवर्द्धिनी ।
कवोष्णंकर्णयापीतंक्षीरंक्षीरविवर्द्धनम् ॥ ६२ ॥
विदारीकंदस्वरसंपिबेद्वास्तन्यवर्द्धनम् ।
सहारिद्रंकुमार्यास्तुमूलंपानीयपेषितम् ॥
स्तनरोगंहन्तिलेपात्किंवाकर्कोटिकाजटा ॥ ६३ ॥

अर्थ-दूधके बढानेको शतावरीको दूधमें पीसकर पिये अथवा गरम दूधके साथ पीपलका चूर्ण पिये अथवा भुल-भुलाकर मुई कुम्हडा पिये अथवा विदारीकंदका स्वरस पिये हलदीके सहित घीकुवाँरकी जड पीस स्तनपर लेप करनेसे स्तनरोग दूर होतेहैं कर्कोटक जटामांसीका लेप करें तो क्या कहना है ? ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

अथ प्रदरः ।

अतिमार्गातिगमनप्रभूतसुरतादिभिः ।
प्रदरोजायतेस्त्रीणांयोनिरक्तस्रुतिःपृथुः ॥ ६४ ॥

अर्थ-अतिमार्गमें चलनेसे बहुत मैथुन करनेसे स्त्रियोंके प्रदररोग होताहै इसमें योनिमार्गसे रक्त बहताहै ॥ ६४ ॥

रक्तपूगीफलंमाजूफलंचैवरसांजनम् ।
धात्रीपुष्पंमोचरसंतंदुलामूलगैरिके ॥ ६५ ॥
एतेषांसमभागानांपलार्द्धमितिचूर्णकम् ।
प्रदरार्त्तापिबेन्नारीप्रत्यहंतंदुलांबुना ॥ ६६ ॥

अर्थ-लालपूगीफल माजूफल रसौत धायके फूल मोच-रस चौराईकी जड गेरू इनको बराबर लेकर इनका चूर्ण

करले चावलके जलके साथ आधेपल प्रतिदिन प्रदररोग-वाली स्त्रीको पिलावै तो रोग शान्त हो ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

तंडुलीयकमूलंहितंडुलांबुप्रपेषितम् ।
सताक्ष्यशैलंसक्षौद्रंप्रपीतंप्रदरंजयेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ–चौलाईकी जडको चावलोंके पानीके साथ पीस: कर इसमें रसोत और शहद डालकर पिये तो प्रदर दूर हो६७

पिष्टंतंडुलतोयेनकुशमूलंससारघम् ।
सरसांजनमापीयप्रदरंत्रिदिनाज्जयेत् ॥ ६८ ॥

अर्थ–चावलके धोवनके जलसे कुशाका मूल पान कर-नेसे तीन दिनमें प्रदररोग दूर हो ॥ ६८ ॥

जीरकप्रस्थमेकंतुक्षीरंद्व्याढकमेवच ।
प्रस्थार्द्धंलोध्रघृतयोःपचेन्मंदेनवह्निना ॥ ६९ ॥
लेहीभूतेथशीतेत्रसिताप्रस्थंविनिक्षिपेत् ।
चातुर्जातकणाविश्वमजाजीमुस्तवालकम् ॥ ७० ॥
दाडिमंरसजंधान्यरजनीपटवासकम् ।
वंशजंचतवक्षीरीप्रत्येकंशुक्तिसम्मितम् ॥ ७१ ॥
जीरकस्यावलेहोयंप्रदरापहरःपरः ।
ज्वराबल्यारुचिश्वासतृष्णादाहक्षयापहः ॥ ७२ ॥
भूम्यामलकमूलंतुपीतंतंडुलवारिणा ।
द्विवैरेवदिनैर्नार्याःप्रदरंदुस्तरंजयेत् ॥ ७३ ॥

अर्थ–जीरा सफेद १ प्रस्थ (१ सेर) दूध गायका २ आढक (८ सेर) आधे प्रस्थ गोका घी और लोध इसको अग्निसे पकावै. यह गाढा हो जाय तब इसमें सेरभर

मिश्री डाले पीछे तज पत्रज इलायची नागकेशर पीपल सोंठ कालाजीरा नागरमोथा सुगन्धवाला दाडिमीका रस काकजंघा हलदी चिरौंजी अडूसा वंशलोचन तवाखीर यह प्रत्येक एकएक शुक्ति (४ तोले) ले यह जीरक अवलेह प्रदररोगका हरनेवाला है ज्वर नैर्बल्य अरुचि श्वास तृष्णा दाह क्षयको दूर करनेवाला है तथा भुइँआमलेकी जड चावलोंके धोवनकेसाथ पीनेसे दोतीन दिनमेंही प्रदररोग दूर होजायगा ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

तालीसगैरिकेपीतेबिडालपदमात्रकेः ।
शीतांबुना चतुर्थेह्निवंध्यास्त्रींकुरुतेभृशम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–तालीसके पत्ते गेरू यह दोनों दो तोले शीतल जलके साथ चार दिन पीनेसे स्त्री बांझ होतीहै ॥ ७४ ॥

पालाशबीजमध्वाज्यलेपात्सामर्थ्ययोगतः ।
योनिमध्येऋतौगर्भंधत्तेस्त्रीनकदाचन ॥ ७५ ॥

अर्थ–ढाकके बीज शहद घृत यह तीनों वस्तु ऋतुके समय स्त्री योनिमें रक्खै तो फिर कभी गर्भ न रहै ॥ ७५ ॥

धत्तूरमूलिकापुष्येगृहीताकटिसंस्थिता ।
गर्भंनिवारयत्येवरंडावेश्यादियोषिताम् ॥ ७६ ॥

अर्थ–धतूरेकी मूली पुष्यनक्षत्रपर लेकर कमरमें बांधनेसे रंडावेश्यादि स्त्रियोंका गर्भ निवारण होताहै ॥ ७६ ॥

गृंजनस्यचबीजानितिलकारविके अपि ।
गुडेनभुक्तमेतद्धुगर्भंपातयतिध्रुवम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–गाजरके बीज तिल चिरौंजी यह गुडके साथ खानेसे अवश्य गर्भका पात करताहै ॥ ७७ ॥

अथ स्तनदृढीकरणम्।

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यांतैलंसिद्धंतिलोद्भवम्।
तत्तैलंतूलकेनैवस्तनस्योपरिदापयेत्।
पतिताबुत्थितौस्यातामंगनायाःपयोधरौ ॥ ७८ ॥

अर्थ-बिजौरेके रस और कल्कके रसके संग उसमें तिलोंका तेल सिद्ध कर रूई उस तेलमें भिजोकर स्तनोंके ऊपर लगावे तौ गिरेहुए स्तन उठिआतेहैं ॥ ७८ ॥

अथ योनिसंकोचीकरणम्।

भंगापोटलिकांदत्त्वाप्रहरंकाममंदिरे।
शतवारंप्रसूतापिपुनर्भवतिकन्यका ॥ ७९ ॥

अर्थ-भंगकी पोटली बनाकर योनिमें एक प्रहरतक धरे सौवारकी प्रसूता स्त्रीकी योनि कन्याकी समान हो जाय ॥ ७९ ॥

मोचरससूक्ष्मचूर्णक्षितंयोनौस्थितंप्रहरम्।
शतवारप्रसूतायाअपियोनिःसूक्ष्मरंध्रास्यात् ॥८०॥

अर्थ-मोचरसका चूर्ण कर योनिमें प्रहरतक लगा रखनेसे सौवार प्रसूता हुई स्त्रीकी योनिभी संकुचित होजाती है ॥ ८० ॥

अथ योनिनिर्लोमीकरणम्।

कर्पूरभल्लातकशंखचूर्णक्षारोयवानीमजमोदकंच।
तलंविपक्वंहरितालमिश्रंलोमानिनिर्मूलयतिक्षणेन ८१॥

अर्थ-योनि निर्लोम करनेकी विधि कपूर भिलावा शंखका चूर्ण सज्जीखार अजवायन अजमोद इनको तेलमें पकाकर हरताल मिलाय सिद्ध करे तो क्षण मात्रमें लगानेसे लोम निर्मूल होजाते हैं ॥ ८१ ॥

अथ बालकरोगः ।

त्रिविधः कथितो बालःक्षीरान्नोभयवर्त्तकः ।
स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यांदुष्टाभ्यांरोगसंभवः ॥ ८२ ॥

अर्थ-बालक तीन प्रकारके होतेहैं एक तो केवल दूध पीनेवाले दूसरे दूध और अन्न खानेवाले तीसरे केवल अन्न खानेवाले जो अन्न और दूध शुद्ध हुए तो स्वस्थता होतीहै बालक नीरोगी रहताहै और दूषित होनेसे रोगी होताहै ॥ ८२ ॥

भैषज्यंपूर्वमुद्दिष्टंमहतायज्ज्वरादिषु ।
देयंतदेवबालेपिमात्राकिंतुकनीयसा ॥ ८३ ॥

अर्थ-ज्वरादिकोंमें जो हमने पहले औषधी कही है वही देनी चाहिये परन्तु बालकोंको थोडी मात्राकी औषधी देनी ॥ ८३ ॥

विडंगफलमात्रंतुजातमात्रस्यभेषजम ।
मासेमासेप्रयोक्तव्यंविडंगानांविवर्द्धनम् ॥ ८४ ॥

अर्थ-तुरतके उत्पन्न हुए बालकको विडंगके फलकी बराबर औषधी देनी चाहिये और जितनी जितनी महीनेकी अवस्था उसकी बढती जाय उतनीही मात्रा बढानी चाहिये अर्थात् दूसरे महीनेमें दो वायविडङ्ग फलके बराबर दे ॥ ८४ ॥

अब्दादूर्ध्वंकुमाराणांदद्यात्कोलास्थिमात्रकम् ।
क्षीरादस्यौषधंधात्र्यांक्षीरान्नादस्यचोभयोः॥ ८५ ॥
सर्वंनिवार्यतेबालेनस्तन्यंवार्य्यतेक्वचित् ।
नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम् ।
तैलमभ्यंजनेशस्तमेभिर्वाप्यवचूर्णनम् ॥ ८६ ॥

बालोयोचिरजातःस्तन्यंगृह्णातिनोतदातस्य ॥
सैन्धवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ८७
पीतंपीतंवमतियःस्तन्यंतन्मधुसर्पिषा ॥
द्विवार्त्ताकीफलरसंपंचकोलंचलेहयेत् ॥ ८८ ॥
सक्षौद्रशर्करातिक्तालीढाबालज्वरंजयेत् ॥ ८९ ॥

अर्थ–एक वर्षकी अवस्थासे जिसकी अधिक अवस्था हो उसे बेरकी मींगीके परिमाण औषधि देनी चाहिये-जो केवल दूध पीता हो तो इसकी धायकोभी औषधी देनी चाहिये बालकको दूधमें औषधी दे अन्न खाता हो तो अन्न हीके साथ औषधी दे पथ्यमें सर्ववस्तु वर्जित हैं परन्तु माताका दूध वर्जित नहीं है नाभि पकी होय तो हलदी लोध प्रियंगु मुलैठा इनसे सिद्ध किया तेल उसपर लगाना अथवा इनका चूरन बुरकाना चाहिये जो अल्प कालका उत्पन्न हुआ बालक माताका दूध न पीता होय उसकी जीभपर सैंधा धवईके फूल शहद घी और हरड पीसकर शनैः उंगलीसे लगावे जो बालक माताका दूध पीकर वारंवार वमन करे उसको भटकटैया और वनभटेका रस पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक और सोंठका चूरन शहद और घीके साथ चटावे शहद बूरा यह पाठ संग मिलाकर चाटनेसे वातज्वरको दूर करता है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

शृंग्यब्दकृष्णातिविषांविचूर्ण्य
लेहंविदध्यान्मधुनाशिशूनाम् ।
कासज्वरच्छर्दिभिरर्दितानां
समाक्षिकांवातिविषामथैकाम् ॥ ९० ॥

अर्थ-काकडासींगी नागरमोथा पीपल अतीस इनका चूर्ण कर शहदके साथ चाटे अथवा एक अतीसहीका चूरन शहदके साथ चटानेसे बालककी खांसी ज्वर और वांति दूर होती है ॥ ९० ॥

नागरातिविषामुस्तावालकेंद्रयवैःशृतम् ।
कुमारं पाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥ ९१ ॥

अर्थ-सोंठ अतीस नागरमोथा सुगंधवाला इन्द्रजौ इनका काढा कर प्रातःकाल बालकको पिलावै तो सम्पूर्ण अतिसाररोग दूर होते हैं ॥ ९१ ॥

घनकृष्णारुणाशृंगीचूर्णक्षौद्रेणयोजितम् ।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंकासश्वासवमीहरम् ॥ ९२ ॥

अर्थ-नागरमोथा पीपल अतीस और काकडासींगी इनका चूरन शहदके साथ बालकको चटावै तो बालकका ज्वर अतिसार कास श्वास और वमन दूर होतीहै ॥९२ ॥

पुष्करातिविषायासकणाशृंगीरजोलिहेत् ।
मधुनामुच्यतेबालः कासैःपंचभिरुच्छ्रितैः ॥ ९३ ॥
तुगाचक्षौद्रसंलीढाकासश्वासौशिशोर्जयेत् ।
चूर्णकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजितम् ॥ ९४ ॥
हिक्कांप्रशमयेत्क्षिप्रंशिशोश्छर्दिंचदुस्तराम् ।
कणोपणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैंधवैःकृतः ॥ ९५ ॥
मूत्रग्रहेप्रदातव्योबालानांलेहउत्तमः ।
मुखपाकस्यतुश्रेष्ठोलेपस्त्वश्वत्थकल्कजः ॥ ९६ ॥

अर्थ-पुष्करमूल अतीस काकडासींगी पीपल और धमासेका चूरन शहदसे चाटै तो बालककी पांच प्रकारकी

खांसी दूर हो कुटकी वंशलोचन शहदके साथ चाटनेसे बालककी खांसी और श्वासरोग दूर होताहै अथवा कुटकी; का चूर्ण कर शहदके साथ चाटनेसे बालककी हिचकी और कठिन छर्दि दूर होती है पीपल मिरच मिश्री शहद छोटी इलायची और सैंधा इनका अवलेह करके देनेसे बालकका मूत्रावरोध दूर होताहै बालकके मुखपाकपर पीपलकी छाल पीसकर लेप करै ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मुखपाकेतुवालानामाम्रसारमयोरजः ।
छुच्छुन्दरीमलोमापोहारिद्राविल्वपत्रकम् ॥ ९७ ॥
सगुग्गुलंयवंचैवधूपनंयःप्रयोजयेत् ।
निहन्तिरोदनंरात्रौवालकस्यनसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ—अथवा आमका रस वा गोंद उत्तम है छछूंदरकी बीट उरद हलदी बेलपत्र गूगल इनकी देनेसे जो बालक रातमें रोवे उसका रोना बंद हो ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अथ ग्रहग्रस्तबालकोपचारः ।

क्षणादुद्विजतेवालःक्षणाद्भ्रमतिरोदिति ।
नखैर्दन्तैर्दारयतिधात्रीमात्मानमेवच ॥ ९९ ॥
ऊर्ध्वंनिरीक्षतेदन्तान्खादेत्कूजतिजृंभते ।
क्षामांगोनिशिजागर्त्तिशून्यांगोभिन्नविड्ज्वरः १००

अर्थ-जो बालक क्षणमें डरनेलगे क्षणमें रोनेलगे नाखून और दांतोंसे कभी माताको और कभी अपनेको विदीर्ण करनेलगे ऊपरको देखे दांतोंको बजावे रोवे बारंबार जंभाई ले दुबला होजाय रातको जागे शून्य शरीर भिन्न विट ज्वरसे व्याकुल हो ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

सामान्यग्रहजुष्टानांलक्षणंसमुदाहृतम् ।
सभेदकूलद्वयमृत्तिकायामूर्तिंविधायैककरप्रमाणाम् ॥
त्रिलोचनांशूलकपालपाणिंजटाधरांरुद्रतनुंदधानाम् ।
भुजंगभूषांभसितोज्ज्वलांगीमंगीकृताशेषललामलीलां

अर्थ-यह सामान्य ग्रहग्रस्त बालकोंके लक्षण हैं (उपचार) नदीके दोनों किनारेकी मृत्तिका लावै उसकी एकहाथ प्रमाण मूर्ति बनावे। तीन नेत्र शूल और कपाल हाथमें लिये जटाजूटयुक्त रुद्र शरीर धारण किये भुजंगसे भूषित भस्म लगाये सम्पूर्ण मनोहर लीलाको अंगीकार किये ॥ १ ॥

अत्रमूर्त्तौसमावाह्यरुद्रंसर्वग्रहाधिपम् ।
नंदादिपूतनायुक्तंपूजयेच्चंदनादिभिः ॥ २ ॥
विरच्यतण्डुलैश्चूर्णैश्चतुरस्त्रंकरोन्मितम् ।
तत्रसंस्थाप्यपूर्वस्यांतांतदर्चाविधिंचरेत् ॥
तत्तन्मंत्रैर्विचित्रैश्चनानोपकरणादिभिः ॥ ३ ॥

अर्थ-इसमूर्तिमें ग्रहपति रुद्रका आवाहन करे नंद आदि पूतनासे युक्त चंदनादिसे पूजन करे चावलोंका चूर्ण करे चौकोन मंडल एक हाथके प्रमाणमें बनावे वहां पूर्वकी और मूर्त्तिको स्थापित कर उसकी पूजा करे वह वह विधानके मंत्र पढकर अनेक सामग्रीसे पूजन करे उसका क्रम कहते हैं ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

अथ क्रमः ।

गोमयोपलिप्तायांभूमौतण्डुलचूर्णेनयथोक्तं चतुरस्त्रंकृत्वातन्मध्येयथोक्तांमूर्तिंसंस्थाप्यओमद्या-

मुकनाम्नोबालस्यसर्वग्रहशान्त्यर्थं सर्वग्रहबलिं करिष्ये ॥ तस्यांसर्वग्रहानावाह्यसर्वग्रहाधिपतये हुँफट्स्वाहेति मंत्रेणगंधादिकोपचारैःसम्पूज्यनैवेद्यसप्तपताकासप्तदीपान्गुडोदकमत्स्यमांससुरास्विन्नगोधूमवटकादिकं बृहद्वंशपात्रेसंस्थाप्य ततस्तस्यामग्रेपरिवेष्य ओंनमोभगवते रुद्रायत्र्यंवकायसत्यसुवसत्यसुवहुंफट्स्वाहेति मंत्रमुक्त्वाबालकमुष्टिमात्रमन्नंग्राह्यपूर्वंपरिवेपितेन्नेत्याजयेत् ॥ ततोन्यमुष्टिमात्रमन्नंगृहीत्वाओं फट्वेनतेयायनमः ॥ ततोन्यदपिह्रींह्रींक्षः इति वारद्वयंबलिंदत्त्वाबालप्रमाणांपुष्पमालां गृहीत्वाबालेपरितस्त्रिःपरिभ्राम्य ओंकारिणिसुस्थापयइतिपूर्वस्यांदिशि तांस्थापयित्वाऽपश्यन्नेवगृहमागच्छेत् । ततोधूपेनबालंधूपयेत् ॥ १०८ ॥

अर्थ–चार हाथ भूमिको गोबरसे लीप चावलके चूर्णकी वेदी बनाय उसपर यथोक्तमूर्तिको स्थापन कर नामगोत्रका उच्चारण कर कहे मैं अमुक बालग्रहशान्तिके अर्थ ग्रहबलि करता हूं उसमें सम्पूर्ण ग्रहोंका आवाहन कर सम्पूर्ण ग्रहोंके अधिपतिको हुंफट्स्वाहा पढकर गंधादि उपचारसे पूजन कर नैवेद्य सात पताका सात दीप गुड उदक मत्स्यमांस सुरास्विन्न गेहूं बडकादि यह बडे बांसके पात्रकी टोकरी उसके आगे रखकर ओंनमोभगवते रुद्राय त्र्यम्बकाय

सत्यसुव सत्यसुव हुंफट्स्वाहा यह मंत्र पढकर बालकके मुष्टिमात्र अन्नको ग्रहण कर ओंफट् वैनतेयायनमः तथा ह्रीं ह्रीं क्षः यह दोवार पढ बलि दे बालककी बराबर लम्बी फूल-मालाको ग्रहण कर बालकके ऊपर तीनवार घुमाकर ओं कारिणी सुस्थापय इसप्रकार पूर्वकी ओर बाहर स्थापन कर फिर उसे न देखताहुआ घरमें आवे फिर धूपसे बालकको धूपित करै ॥ १०४ ॥

धूपविधिः ।

कार्पासास्थिमयूरपिच्छबृहतीनिर्माल्यपिंडीतक-
त्वङ्मांसीवृपदंशविड्बुसकणाकेशादिनिर्मोककैः ।
गोशृंगद्विपदंतहिंगुमरिचैस्तुल्यैःकृतंधूपनं
कृत्योन्मादपिशाचराक्षससुरावेशग्रहघ्नंमतम् १०५॥
एवंदिनत्रयंकृत्वाचतुर्थदिनेचतुरोब्राह्मणान्
भोजयेदेवंशुभंभवति ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

अर्थ-कपासके बीज मोरका पंख भटकटैया शिवनिर्माल्य मैनफल दालचीनी वंशलोचन बिलारकी विष्ठा धानकी भूसी वच मनुष्यके बाल साँपकी केंचली गायकी सींग हाथीदांत हींग और मिरच इनको बराबर भाग लेकर धूप देनेसे उन्माद पिशाच राक्षस देवताओंका आवेश और ग्रह दूर होते हैं इस प्रकार तीनदिन करके चौथेदिन चारब्राह्मणोंको भोजन करानेसे मंगल होताहै ॥ १०५ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-मिश्रकृतभाषाटीकायां चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

अथ वाजीकरणम् ।

गोक्षुरकःक्षुरकःशतमूलीवानरिनागबलातिबलाश्च ॥
चूर्णमिदंपयसानिशिपेयंयस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति ॥ १ ॥

अर्थ-गोखरू तालमखाने शतावर (कौंचके बीज) गंगेरनकी छाल सहदेईकी जड इनका चूर्ण कर रात्रिको दूधके साथ पिये तो सौ स्त्रियोंके साथ भोग करनेकी सामार्थ्य हो ॥ १ ॥

पलंगोक्षुरबीजस्यद्विपलंकपिकच्छुरम् ।
पलंनागबलाबीजंपलमेकंशतावरी ॥ २ ॥
विदारीकन्दचूर्णस्यपलद्वयमथापरम् ।
द्विपलंत्रपुसीबीजंवाजिगंधापलत्रयम् ॥ ३ ॥
वासाचतालमूलीचगुडूचीरक्तचंदनम् ।
त्रिसुगंधिकणाधात्रीलवंगंनागकेशरम् ॥ ४ ॥
एतानिकर्षमात्राणिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ।
बालशाल्मलिमूलंचभावयेदेकविंशतिः ॥ ५ ॥
कुशकाशीशफासतशर्करासमयोजितम् ।
दुष्टशुक्रंवीर्यहानिंमूत्रकृच्छ्राणियानिच ॥ ६ ॥
मूत्राघातंमूत्रदोषंजयेच्छुक्रविवर्द्धनम् ।
शतंगच्छतिचस्त्रीणांहयतुल्यपराक्रमः ॥ ७ ॥
वंध्यापुत्रमवाप्नोतिभुक्त्वाचूर्णमिदंक्रमात् ।
कामदेवाभिधंचूर्णंधन्वन्तरिनिरूपितम् ॥ ८ ॥

अर्थ-गोखरूके बीज एकपल कौंचके बीज दो पल गंगेरनके बीज एकपल शतावरी १ पल विदारीकंदका चूर्ण २

पल ककडीके बीज २ पल इन्द्रवारुणीके बीज २ पल अश्वगंधा ३ पल अडूसा तालमूली गुडूची लालचन्दन इलायची दालचीनी, तेजपात पीपल आमला लोंग नागकेशर यह सब एक २ कर्ष ले फिर इनका चूर्ण करे इसमें कोमल सेमलके पत्तोंके रसकी इक्कीस भावना दे कुश और कासके रसकी सात भावना दे फिर बराबर बूरा मिलाले सेवन करनेसे यह दुष्टशुक्र वीर्यक्षय मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रदोष रोगोंको दूर करता है यह शुक्रका बढानेहारा है इसके सेवनसे सौ स्त्रियोंके भोगनेकी सामर्थ्य होती है घोडेकी तुल्य पराक्रम होता है इसके सेवन करनेसे वंध्याके भी पुत्र होता है यह धन्वन्तरिका कहा कामदेवचूर्ण है ॥२॥३॥४॥ ॥५॥६॥७॥८॥

चूर्णंविदार्याःसुकृतंस्वरसेनैवभावितम्।
सर्पिःक्षौद्रयुतंलीढ्वादशगच्छेन्नरोंगनाः ॥ ९ ॥

अर्थ-विदारीकंदका चूर्ण कर उसीके रसकी उसमें भावना दे घृत और शहदके साथ उसे चाटे तो दश स्त्रियोंके संग गमन कर सकताहै परन्तु घृत शहद बराबर न हो ॥ ९ ॥

एवमामलकंचूर्णंस्वरसेनैवभावितम्।
शर्करामधुसर्पिर्भ्यांयुक्तंलीढ्वापयःपिबेत् ॥ १० ॥
एतेनाशीतिवर्षोपियुवेवपरिहृष्यति।
कर्षंमधूकचूर्णस्यघृतक्षौद्रसमन्वितम् ॥ ११ ॥
पयोनुपानंयोलिह्यात्सगच्छेद्दशचांगनाः ॥ १२ ॥

अर्थ-अथवा एक आमलेहीका चूर्ण लेकर उसमें आमलेके स्वरसकी भावना दे फिर उसे कन्द मधु घृतके साथ मिला-

कर चाटै पीछे दूध पिये ॥ १० ॥ इस प्रयोगसे अस्सी वर्षका पुरुषभी युवाके समान प्रसन्न होताहै । मुलेठीका चूर्ण एकतोला, घी एक तोला, शहद एक तोलासे कुछ कमती ॥ ११ ॥ इन सबको मिलाकर चाटै ऊपरसे दूध पिये तो दश स्त्रियोंके पास जानेकी शक्ति हो ॥ १२ ॥

प्रस्थंगोक्षुरसूक्ष्मचूर्णमुदितंदुग्धाढकेपाचितं
जायत्रीसलवंगलोहमरिचंकर्पूरमामलकम् ।
अब्दंशोषमजाजियुग्मरजनीधात्रीकणाकेशरं
जातीकोशफलेसदीप्यनलदंशुंठीकुबेराक्षजम् ॥१३॥
तुल्यंशर्करयातदर्द्धविजयंप्रस्थार्द्धकंगोघृतं
युक्त्यावैद्यवरेणनिर्मितमिदंप्रौढांगनादर्पनुत् ॥
वीर्यस्तंभनतुष्टिपुष्टिजननंवाजीकरंकामिना-
मुक्तोगोक्षुरपाकएषहारिणीनेत्राविलासास्पदम् १४॥

अर्थ–छोटे गोखरूका चूर्ण १ सेर एक आढक १०२४ टंक दूधमें पकावै खैरसार लवंग लोहसार काली मिर्च कपूर भीमसेनी अडूसा समुद्रशोष कालाजीरा श्वेतजीरा दारुहलदी आमला पीपल नागकेशर जायफल अजवायन खस सोंठ करंजुआ यह सब बराबर ले इन सबकी बराबर बूरा और इससे आधी भांग ले और आधे सेर गौका घृत ले इसको वैद्य युक्तिसे निर्माण करे यह सेवन करनेसे प्रौढ स्त्रीका दर्प चूर्ण करनेवाला तुष्टिपुष्टिका करनेवाला कामीजनोंको रतिमें प्रवृत्त करनेवाला यह गोखरूपाक [illegible] आनंद देनेवाला है ॥ १३ ॥ १४ ॥

कूष्मांडस्यतुलांविधायविधिवत्स्विन्नांप्रविष्टांपुन-
र्युक्तांकर्षमितःसुचर्णितततमैर्व्योपालजीराजिभिः ॥
चातुर्जातवराबलात्रयवलीकर्पूरमेथीत्रिवृ-
द्दन्तीवारणपिप्पलीक्षुरतिलद्राक्षात्रिकंटाम्बुदैः १५॥
चव्याश्वामयचारवानारिसटीयष्टीतुगापिप्पली-
मूलाज्यैःसलवंगशाल्मलिजयाकंकोलजातीफलैः ।
जातीकोशविदारिसिंधुमुशलीशृंगाटकैःसर्पिषः
प्रस्थेनाभ्रपलेनचापिसितयासार्द्धंतुलामानया १६॥
युक्त्यासाधुविपाच्यभाजनगतंकृत्वायथाग्निप्रगे
कूष्माण्डस्थरसांजनंसुललितंशुद्धोत्तरःशीलयत् ।
वृष्यंवर्ण्यमथाग्निदीपनकरंयक्ष्माम्लपित्तापहं
पांडुश्वासजिदस्रपित्तशमनंमोहादिरोगप्रणुत् १७ ॥

अर्थ-पेठा आठसौ तोले ले अर्थात उसको. छीलकर उसके बीज निकाल उसे जोश दे उसमें एकएक कर्ष सोंठ, मिरच, पीपल, लज्जावन्ती, राई, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, पाठा खरेटी सोमराजी कपूर मेथी निसोथ गजपीपल तालमखाना तिल दाख गोखरू नागरमोथा चव्य असगंध कूठ चिरौंजी कौंचके बीज कचूर मुलहठी तज पीपल शतावर मेढासिंगी लवंग सेमल, शीतलचीनी, जायफल, जायफलकी छाल बिदारीकंद, समुद्रशोष, मुशली, सिंघाडे यह सब बराबर ले अभ्रक एक पल ले, और घृत एक सेर आधी तुला श्वेत बूरा ले इसकी चासनी कर युक्तिसे अग्निपर

यह सब वस्तु डालकर पकावै और पेठेका शुद्ध रस रसोत भी उसमें डालदे इसे पाककी समान करले यह बलकारक व्रणशोधक अग्निका मर्दित करनेवाला यक्ष्मा अम्लपित्तको दूर करनेवाला पाण्डु श्वासनाशक रक्तपित्त और प्रमेहको दूर करता है ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

एतेनातिवलीवलीविरहितःस्त्रीणांयुवेवव्रजे-
द्वंद्वंवृद्धतरोनरोतिललितःप्रज्ञाप्रभापूजितः ॥ १८ ॥

अर्थ-इससे वली दूर होतीहैं बल बढताहै स्त्रियोंमें युवाकी समान इसको खानेवाला प्रवृत्त होताहै वृद्ध मनुष्य भी बली होकर कान्ति बुद्धिसे पूजित होता है ॥ १८ ॥

प्रस्थंस्वगुप्तबीजानांसूक्ष्मंचूर्णीकृताभिपक् ।
पचेत्पंचाढकेदुग्धेमृत्पात्रेमृदुवह्निना ॥ १९ ॥
प्रस्थार्द्धंगोघृतंदत्त्वाद्विप्रस्थांशर्करामपि ।
जातीफलंजातिपत्रंकंकोलंनागकेशरम् ॥ २० ॥
लवंगदीप्यमाकल्लमण्धिशोपत्रिकद्वयः ।
त्रिजातंहेमजीरंचप्रियंगुंगजपिप्पलीम् ॥ २१ ॥
प्रत्येकंकर्षमादायभक्षयेत्पलमात्रया ।
प्रमेहक्षण्यकृच्छ्राश्मगुल्मशूलानिलामये ॥ २२ ॥
शस्तोयंस्त्रीपुगभार्थिपंढानांशुक्रवृद्धये ।
प्रसूतानांहितोरक्तविकारविनिवारकः ॥ २३ ॥
पुंसांवाजीकरोवल्यश्चक्षुष्यःकामवर्द्धनः ।
कामिनीदर्पविध्वंसकर्त्तानिधुवनेनृणाम् ॥ २४ ॥

अर्थ-कौंचके बीज एक आढक लेकर उन्हें अच्छी प्रकार चूर्ण कर पांच आढक गौके दूधमें मिट्टीके पात्रमें

रखकर पकावे उसमें आधे प्रस्थ गौका घी और दो प्रस्थ शर्करा डाले इसकी चासनी कर पीछे इसमें जायफल, जातीपत्र कंकोल, नागकेशर, लवंग, अजवायन अकरकरा, समुद्रशोष, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपात, श्वेतजीरा, प्रियंगु, गजपीपल, यह प्रत्येक वस्तु एक एक कर्ष लेकर इसमें डालदे सिद्ध होने पर उतारले एक पलकी मात्रासे इसको भक्षण करे तो प्रमेह क्षीणता कृच्छ्र, अश्म, गुल्म, शूल, वातरोग दूर हों इसके सेवनसे स्त्रीको गर्भ रहता है नपुंसकोंका वीर्य बढता है प्रसूतियोंको हितकारक रक्तविकारका निवारण करनेवाला पुरुषोंको वाजीकर बलदाता चक्षुओंको हितकारक कामवर्द्धक रतिमें स्त्रियोंका दर्प नाश करनेवाला है ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

नास्त्यनेनसमोयोगोदस्राभ्यांनिर्मितःशुभः ।
कपिकच्छूबीजपाकोदीपनःपाचनःपरः ॥ २५ ॥

अर्थ-इसकी समान और योग नहीं है यह अश्विनीकुमारनिर्मित है यह कौंचबीजपाक परमदीपन और पाचन है२५॥

प्रस्थंपिप्पलिमादायपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे ।
अर्द्धाढकंघृतंगव्यंशुद्धखंडाढकंतथा ॥ २६ ॥
लोहेपचेद्घृतेतावद्यावत्पाकंसुपाचितम् ।
ततोद्रव्याणिचैतानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥ २७ ॥
एलात्वक्पत्रकंचैवलवंगंनलदंतथा ।
नागरंपिप्पलीमुस्ताश्रीखंडंमारिचंनतम् ॥ २८ ॥
कर्पूरंजातिपत्रंचकुंकुमंमधुकंतिलम् ।
वंगलोहरजश्चाथपलमानंसमांशकम् ॥ २९ ॥

मधुनाकुडवंदत्वाखादेदग्निबलंयथ.।
वृष्यंपुष्टिकरंरुच्यंचक्षुष्यंवयवर्द्धनम् ॥ ३० ॥
बलवीर्यकरंचैवच्छर्दिमूर्च्छाभ्रमापहम् ।
दाहतृष्णाप्रशमनमोजःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-एक प्रस्थ छोटी पीपल लेकर ४ चार प्रस्थ गौके दूधमें पकावे इसमें आधे आढक गौका घी और एक आढक शुद्ध बूरा डाले यह सब लोहपात्रमें डालकर पकावे जब पाक होजाय तब नीचे लिखे द्रव्य चूर्ण कर इसमें डाले इलायची, तज, पत्रज, लौंग, खस, सोंठ, पीपल, नागरमोथा, लालचन्द, कालीमिरच, तगर, भीमसेनी कपूर, जायफल, केशर, मुलहटी, तिल, वंग, लोहसार यह सब बराबर एक एक पल ले एक कुडव (१६ तोले) मधु डालकर इनको सिद्ध करे अग्निके बलके अनुसार इसको खाय यह बल पुष्टि करनेवाला रुचिकारक चक्षुओंको हितकारी वयका बढानेवाला है, बलवीर्य करता, छर्दि, मूर्छा, भ्रम हरनेवाला, बल और वीर्यका बढानेवाला है ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

बोधनंचेंद्रियाणांचप्रमेहान्हन्तिविंशतिम् ।
वातान्तककरंहृद्यमष्टज्वरविनाशनम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-इंद्रियोंका बोधक और बीस प्रमेहोंका दूर करनेवाला है वातका अन्त करनेवाला हृदयको हितकाकरक आठ प्रकारका ज्वरनाशक है ॥ ३२ ॥

अष्टादशचकुष्ठानांवंध्यानांपुत्रदंपरम् ।
पिप्पलीखंडमेतद्धिबालानांसुहितंपरम् ॥ ३३ ॥
धात्रीफलानिशुष्काणिप्रस्थमात्राणिनिक्षिपेत् ।

चतुःप्रस्थेगवांदुग्धेस्निग्धभांडेततःपरम् ॥ ३४ ॥
त्रिवारंदापयेद्दुग्धंक्षीरंपर्युषितंत्यजेत् ।
तानिसर्वाणिसंपेष्यशिलायांतुभिषग्वरः ॥ ३५ ॥
तन्मध्येतुचतुःप्रस्थंगोक्षुरंचविनिःक्षिपेत् ।
दृढहस्तेनतत्सर्ववस्त्रपूतंसमाचरेत् ॥ ३६ ॥
मृद्भाण्डेपाचयेद्वह्नौयावद्गाढत्वमाप्नुयात् ।
सिताचतुर्गुणंयोज्याऔषधानिततःक्षिपेत् ॥ ३७ ॥
चातुर्जातंलवंगंचजातीपत्रफलेतथा ।
मांसीधान्यंतुगाशीतंतगरंजीरकद्वयम् ॥ ३८ ॥

अर्थ–अठारह प्रकारके कोढ दूर करनेवाला और वंध्याको पुत्र देनेवाला है यह पिप्पलीखण्ड बालकोंको हित करनेवाला है एक प्रस्थ सूखे हुए आमले लेकर चार प्रस्थ गौके दूधमें डाले यह चिकने बरतनमें धरदे और एक दिनके उपरान्त निकालकर वह दूध अलग कर उनमें उतनाही दूध और डालदे ऐसा तीनवार करै फिर उन आमलोंको पत्थरपर पीसकर उसमें चार प्रस्थ गौका दूध मिलावै, फिर यह सब दृढवस्त्रसे छानले और अग्निपर मिट्टीके बरतनमें रखकर पकावै, जबतक गाढा होजाय इससे चौगुनी मिश्री डाले और नीचे लिखी औषधी डाले दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जातीपत्र, जायफल, जटामांसी, धनियाँ, तज, तगर, दोनों जीरे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

वीजंपुष्करजंयष्टिकवाकुंकुमंघनम् ।
प्रत्येकंकर्षयुग्मञ्चचूर्णीकृत्वाथमेलयेत् ॥ ३९ ॥

अभ्रकंवंगसंज्ञंचकर्षमात्रं पुनः क्षिपेत् ।
सुगंधार्थंचकर्पूरंकस्तूरींचांवरंक्षिपेत् ॥ ४० ॥
पलमात्रांगुटींकृत्वास्थापयेद्भाजनेशुभे ।
नोशदारुइतिख्यातांभिषजानांतुसंमताम् ॥ ४१ ॥
गुणान्वच्मियथादृष्टान्वलकृद्वीर्यवर्द्धनी ।
चत्वारिंशतिपित्तरोगाअष्टावुदरजास्तथा ॥ ४२ ॥
नश्यंत्यनेनसर्वेहिकामवीर्यविवर्द्धनी ॥ ४३ ॥

अर्थ–कमलगट्टे, मुलहटी, कबाबचीनी, केशर, नागरमोथा यह प्रत्येक दोदो कर्ष ले इनका चूर्ण कर इसमें मिलावे अभ्रक और वंग यह एक एक कर्ष डाले सुगंधिके निमित्त कपूर कस्तूरी और अम्बर डाले एक पलमात्रकी गुटिका करके अच्छे बरतनमें रखछोडे यह नोशदारु वैद्यलोगोंको सम्मत है यह सब गुणवाली बल और वीर्य बढानेवाली है चालीस पित्तरोग आठ उदरके रोग इससे दूरहोतेहैं काम और वीर्य बढताहै यह गुण देखे हुए हैं ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

अथ लक्ष्मीविलासरसः ।

पलंकृष्णाचचूर्णस्यतदर्द्धंरसगंधके ।
कर्पूरस्यतदर्द्धंतुजातीकोशफलेतथा ॥ ४४ ॥
वृद्धदारुकबीजंचबीजमुन्मत्तकस्यच ।
त्रैलोक्यविजयाबीजंविदारीकंदमेवच ॥ ४५ ॥
नारायणीतथानागबलाचातिबलातथा ।
बीजंगोक्षुरकस्यापिजलधेर्बीजमेवच ॥ ४६ ॥
एतेषांकार्षिकंचूर्णंगृहीत्वावारिणापुनः ।

निष्पिष्यवटिकाःकार्यास्त्रिगुंजाफलमानतः ॥ ४७ ॥
निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणान् ।
वातोत्थान्पैत्तिकांश्चाप्तिनास्त्यत्रनियमःक्वचित् ४८
कुष्ठमष्टादशाख्यंचप्रमेहान्विंशतिंतथा ।
नाडीव्रणंव्रणंघोरंगुदामयभगन्दरम् ॥ ४९ ॥
श्लीपदंकफवातोत्थंचिरजंकुलसम्भवम् ।
गलशोषंचांत्रवृद्धिमतिसारंसुदारुणम् ॥ ५० ॥
कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्बल्यमेवच ।
आमवातंसर्वरूपंजिह्वास्तंभंगलग्रहम् ॥ ५१ ॥
उदरंकर्णनासाक्षिमुखवैजात्यमेवच ।
सर्वशूलंशिरःशूलंस्त्रीणांगदनिपूदनम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-काले अभ्रककी भस्म ४तोले पारा गन्धक दोनों २ तोले भीमसेनी कपूर १तोले जायफल, जावित्री, विधायरेके बीज, धतूरेके बीज, भांगके बीज, विदारीकंद शतावर गुलसकरी गंगेरन गोखरू समुद्रफल इन औषधियोंको समानभाग ले सबको पानके रसमें खरल करे वा जलसे पीसकर तीनतीन रत्तीकी गोलियां बनावे यह गोली सन्निपातके घोर रोग वातके रोग पित्तके रोगोंको दूर करेहै इस रसपर किसी आहार विहारका नियम नहीं है अठारह प्रकारके कुष्ठ बीस प्रकारके प्रमेह नाडीव्रण घोर गुदाके रोग भगन्दर कफ वातके रोग श्लीपदके रोग गलेकी सूजन आंतोंकी वृद्धि अतिसार खांसी पीनस क्षयी बवासीर स्थूलता देहमें दुर्गन्धिका आना आमवातके रोग जिह्वा-

स्तंभ गलग्रह अर्दितरोग गलगंड वातरक्त उदररोग कान नाक नेत्र मुखकी विरसता सब देहके शूल मस्तकशूल स्त्रियोंके रोग यह सब दूर करताहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

वटिकांप्रातरेकैकांखादेन्नित्यंयथाबलम् ।
अनुपानमिदंप्रोक्तंमांसंमिष्टंपयोदधि ॥ ५३ ॥
वारितक्रंसुधासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ।
वृद्धोऽपितरुणस्पर्धीनचशुक्रस्यसंक्षयः ॥ ५४ ॥
नचलिंगस्यशैथिल्यंनकेशायांतिपक्कताम् ।
नित्यंशतंस्त्रियोगच्छेन्मत्तवारणविक्रमः ॥ ५५ ॥
द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिकःपरः ।
प्रोक्तःप्रयोगराजोयंनारदेनमहात्मना ॥ ५६ ॥
नाम्नालक्ष्मीविलासस्तुजगन्नाथेजगद्गुरौ ।
अस्यसंसेवनात्कृष्णोलक्षनारीपुवल्लभः ॥ ५७ ॥

अर्थ-इसरसकी गोली नियमानुसार भक्षण करे इसपर मांस मिष्टान्न दूध दही जलमट्ठेसे बने पदार्थ मद्य सीधुमद्य यह सेवन करना पथ्य है. इसके खानेसे कामदेवके सदृश हो वृद्धभी तरुण होजाता है वीर्यका क्षय नहीं होता न लिंग शिथिल होताहै न बाल श्वेत होतेहैं मत्तहाथीकी समान पुरुषको सौ स्त्रियोंसे रमणकी शक्ति होजातीहै, दो लाख योजनकी दृष्टि हो, पुष्ट हो यह प्रयोग महात्मा नारदजीने श्रीकृष्णसे कहाया जिसके अभ्याससे श्रीकृष्ण लाख गोपियोंके प्रिय हुए यह लक्ष्मीविलास रस है ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

अथ चन्द्रोदयरसक्रिया।

पलंमृदुस्वर्णदलंरसेन्द्रात्पलाष्टकंषोडशगंधकस्य ॥
शोणैस्तुकार्पासभवैःप्रसूनैःसर्वंविमर्द्याथकुमारिकाद्भिः
तत्काचकूपेनिहितंयथावद्दृढेसुमृत्कर्पटवीतगात्रे।
पचेत्क्रमाग्नौसिकताख्ययंत्रेदिनत्रयंतत्तुसुधीःसुगुप्तम् ॥
तत्स्वांगशीतंचसमुद्धरेतततोरसःपल्लवरागरागः।
निगृह्यचैतस्यपलंपलानिचत्वारिकर्पूररजस्तथैव ॥६०॥
जातीफलंसोपणमिंद्रपुष्पंकस्तूरिकायाइहशाणएकः।
चंद्रोदयोऽयंकथितोस्यमाषोभुक्तोहिवल्लीदलमध्यवर्ती।
मदोन्मदानांप्रमदाशतानांगर्वाधिकत्वंश्लथयत्यकांडे ॥

अर्थ-सोनेके वर्क ४ तोले शुद्धपारा ३२ तोले शुद्धगंधक ६४तोले तीनोंको खरलमें डालकर कजली करे फिर नरम कपासके फूलोंके रसमें सबको खरल करे फिर घीकुवाँरके रसमें खरल करके फिर सुखाके एक बडी आतशी शीशीमें भरकर ऊपर उसके सात कपडमिट्टी कर वालुकायंत्रमें रखकर नीचे अग्नि जलावे जब शीशीमेंसे धुआं निकलजाय तब ईटके टुकडेसे शीशीके मुखको बंद करदे और क्रमसे मंद मध्यते तीन दिनरात्रिकी अग्नि देवे अर्थात २४ पहरकी अग्नि देवे जब चन्द्रोदय सिद्ध होजाता है तब शीशीकी नाली *काले स्याह रंगकी होजातीहै यह सिद्ध असिद्ध होनेकी* परीक्षा है सिद्धचन्द्रोदयका रंग नवीन पत्तेकी ललाईके समान लाल रंग होता है यह सिद्ध रंगका चन्द्रोदय सकलरोगनाशक है इसे सब रोगोंपर देना चन्द्रोदय ४ तोले

भीमसेनी कपूर १६ तोले जायफल काली मिरच लोंग यह १६ तोले ले कस्तूरी ४ मासे सबको खरल कर बारीक एक मासे नागरवेलके पानमें रखकर खाय तो मदमाती सैंकडों स्त्रियोंके मदको दूर करे ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

स्थावरंजंगमंविषं विषमंविषवारिवा ।
नविकारायभवतिसाधकेंद्रस्यवत्सरात् ॥ ६२ ॥

अर्थ-स्थावर जंगम विष अथवा जलका विष इसके एक वर्ष सेवनसे मनुष्यको नहीं व्यापताहै ॥ ६२ ॥

मृत्युंजयोयथाभ्यासान्मृत्युंजयतिदेहिनाम् ।
तथायंसाधकेंद्रस्यजरामरणनाशनः ॥ ६३ ॥

अर्थ-जैसे अभ्यास करनेसे मृत्युंजय देहधारियोंकी मृत्युको जीतताहै इसी प्रकार यह साधकके जरामरणका नाश करताहै ॥ ६३ ॥

अथ सर्पदंशस्यौषधम् ।

कार्यासद्यःसर्पदंशेमणिमंत्रौषधक्रिया ।
अचिन्त्योहिप्रभावोस्तिमणिमंत्रौषधस्ययत् ॥६४॥

अर्थ-सर्पके काटेकी बहुत शीघ्र मणिमंत्र औषधी क्रिया करनी चाहिये कारण कि, मणि मंत्र और औषधियोंका प्रभाव अचिन्त्य है ॥ ६४ ॥

वृषराशिस्थेसवितरिशिरीषतरुबीजमेकमश्नुवते ।
सनरःखगपतितुल्योनदृश्यतेसर्पसंचयैःसर्वैः ॥६५॥

अर्थ-जिस समय वृषराशिके सूर्य हों उस समय शिरसका एकबीज खानेसे वह मनुष्य गरुडकी तुल्य होकर सर्पसमूहसे नहीं काटा जाताहै ॥ ६५ ॥

कुलिकामूलनस्येनकालदष्टोपिजीवति ।
तंडुलीयकमूलंहिपिष्टंतण्डुलवारिणा ॥
सद्योपपीतमात्रंतुनिर्विषंकुरुतेनरम् ॥ ६६ ॥

अर्थ-काकादिनीकी जडका नास लेनेसे कालका काटा-हुआभी जीजाताहै चौलाईकी जड चावलके जलसे पीस-कर पान करै तो मनुष्य तत्काल निर्विष होता है ॥ ६६ ॥

घृतमधुनवनीतंपिप्पलीशृङ्गबेरं
मरिचमपिचदद्यात्सप्तमंसैन्धवंच ॥
यदिभवतिसरोपंतक्षकेनापिदष्टो
गदमिहखलुपीत्वानिर्विषस्तत्क्षणेन ॥ ६७ ॥

अर्थ-घी शहद मक्खन पीपली अदरख मिरच काली और सैंधा यह सात औषधि बारीककर पान करनेसे क्रोधसे तक्षकका काटाभी अच्छा हो जाताहै ॥ ६७ ॥

जयपालस्यमज्जानंभावयेन्निंबुकद्रवैः ।
एकविंशतिवारांस्तुततोवर्तिंप्रकल्पयेत् ॥ ६८ ॥
मनुष्यलालयाघृष्टाततोनेत्रेतयांजयेत् ।
सर्पदष्टविषंजित्वासाजीवयतिमानवम् ॥ ६९ ॥

अर्थ-जयपाल (जमालगोटे) की मींगीको, नीमके रसकी भावना दे, ऐसे २१ वार भावनाकी कल्पना करै और मनुष्यकी लारसे घिसकर नेत्रोंमें अंजन लगानेसे सर्पविष दूर होकर मनुष्य जीवित होताहै ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

अथ वृश्चिकदंशः।

आरक्तवृत्तापामार्गपत्रंभुक्तंतदैवहि ।
वृश्चिकेननरंविद्धंकुरुतेसुखिनंभृशम् ॥ ७० ॥

पानीयपिष्टजैपालकल्कलेपेनसर्वथा ।
विषंवृश्चिकविद्धस्यभस्मीभवतिसर्वथा ॥ ७१ ॥

अर्थ-लाल गोल लटजीरेके पत्ते खानेसे तत्काल विच्छूके काटेका विष उतर जाता है और मनुष्य सुखी होता है तथा जमालगोटेको पानीमें पीसकर लेप करनेसे विच्छूका विष उतर जाता है ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अथ घरटीदंशः ।

मरिचंनागरोपेतंसिन्धुसौवर्चलान्वितम् ।
फणिवल्लीरसैर्लेपाद्धंतितद्घरटीविषम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-काली मिरच सोंठ सैंधानोन सोंचरनोन इनको नागरवेलपानरसके साथ लेप करे तो ततैयाका विष दूर हो ॥ ७२ ॥

अथ शतपदीदंशः ।

लेपःप्रदीपतैलस्यखर्जूरविषनाशनः ।
हरिद्राद्वयलेपोवासगैरिकमनःशिलः ॥ ७३ ॥

अर्थ-दीपकके तेलका लेप करनेसे कानखजूरेका विष दूर होता है वा दोनों हल्दियोंका लेप वा गेरू और मनःशिलका लेप करनेसे विष दूर होता है ॥ ७३ ॥

अथ श्वदंशः ।

जलवेतसपत्रंतुमूलंकुष्टंपचेज्जलैः ।
सक्काथःशीतलःपेयःपरमश्वविषापहः ॥ ७४ ॥

अर्थ-जलवेत पत्ते सहित लेकर उसका मूल और कूठ यह औषधि लेकर काढा बनाय शीतल कर पीनेसे परम श्वविषको दूर करता है ॥ ७४ ॥

असनजटाजलपिष्टंयःखादतिमातुलुंगफलमेकम् ।
उन्मत्तसारमेयप्रभवंविषमस्यनाशयति ॥ ७५ ॥

अर्थ-विजयसार जटामांसी, जलमें पीस इनके साथ जो एक मातुलुंगका फल खाता है उसका उन्मत्तश्वानका विष उतर जाता है ॥ ७५ ॥

अथ लूताविषदूरीकरणम् ।

रजनीद्वयमंजिष्टापतंगगजकेसरैः ।
शीतांबुपिष्टैरालेपः सर्वलूताविषापहः ॥ ७६ ॥

अर्थ-हल्दी दारुहल्दी मजीठ पतंग गजकेशर इनको ठंडे पानीसे पीस लेप करनेसे मकरीका विष उतर जाताहै ७६॥

अथ भक्षितस्य विषस्य निराकरणम् ।

शीतोपचारावासेकाःशीताः शीतस्थलस्थितिः ।
विषार्त्तविषवेगानांशांत्यैस्युरमृतंयथा ॥ ७७ ॥

अर्थ-इसमें शीतल उपचार शीतल सेक शीतल स्थानमें स्थिति करनी तब विषार्तके विषवेग शान्त होजातेहैं इसमें संदेह नहीं ॥ ७७ ॥

भूनागताम्रंशिखिपिच्छताम्रं
जहद्विषंवाफणिभृन्मणिंवा ॥
प्रक्षाल्यतद्वारि निपीयचार्त्तो
विषंजयेत्स्थावरजंगमाख्यम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-सीसा ताम्र और मोरपंखका तांबा सेवन करनेसे विष दूर होता है वा सर्पकी मणिको जलसे धोकर वह जल पीनेसे स्थावर जंगम दोनों प्रकारका विष दूर होताहै ॥ ७८ ॥

मरिचानवपत्राणिसैन्धवंमधुसर्पिषी ।
निर्वेगेनविषंस्थावरजंगमम् ॥ ७९ ॥

गरंविपंटंकणमूपणंचतुल्थंसमांशंकुरुदेवदाल्याः ।
रसेनपिष्टोविषवज्रपातोरसोभवेत्सर्वविषैकहन्ता ८०॥
निष्कास्यसंजीवतिसंप्रयुक्तोनृमूत्रयोगेनचसर्वथैव ।
जटाविपेणाकुलितंतथान्यैर्द्रव्यैर्विषैर्वर्णितमातुरंच ८१

अर्थ–काली मिरच नीमके पत्ते सेंधा शहद घी इनके पनिसे स्थावर जंगम दोनों प्रकारका विष नाश होजाताहै वच्छनाग विष सुहागा कालीमिरच मीलाथोथा इन सबको समान भाग ले इनको वन्दालके रसमें खरल कर चार चार माषेकी गोली बनावे यह वज्रपातरस सब प्रकारके विषका नाश करताहै यह मनुष्यके मूत्र वा गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे घोर सर्पका डसाभी अच्छा होताहै कन्दादिके विषकी पीडा तथा अन्यविषकी पीडा इसके सेवनसे शान्त होतीहै ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥

अथ क्षुद्ररोगः।

[तत्रादौ यौवनपिटिकाः ।

शाल्मलीकंटकप्रख्याः कफमारुतरक्तजाः ।
यौवनेपिटिकायूनांविज्ञेयामुखदूपिकाः ॥ ८२ ॥

अर्थ–सेमलके कांटेकी समान कफ बातसे तथा रक्तसे युवा पुरुषोंके मुखपर फुन्सी होजातीहैं वे मुखदूपिका मुहासे कहलातीं हैं ॥ ८२ ॥

वरुणस्यकषायेणमुखमाक्षाल्यलेपयेत् ।
जातीफलंचंदनंचमरिचंसहपेपितम् ॥
मुखलेपेनहन्त्याशुपिटिकांयौवनोद्भवाम् ॥ ८३ ॥

अर्थ-वरनाका क्वाथ कर मुखपर लेप करै अर्थात् जायफल लालचन्दन काली मिरचेके साथ पीसकर मुखपर लेप करने से मुहांसे दूर होजाते हैं ॥ ८३ ॥

अथ कक्षादोषः ।

बाहुपार्श्वांसकक्षासुकृष्णस्फोटांसवेदनाम् ।
पित्तप्रकोपात्संभूतांकक्षामितिविर्दिशेत् ॥ ८४ ॥
सुरदारुशिलाकुष्ठैःस्वेदयित्वाप्रलेपयेत् ।
कफमारुतसंभूतंकक्षादोषंसुदारुणम् ॥ ८५ ॥

अर्थ-बाहुके पार्श्व अर्थात बगलमें महाकष्टदायक व्रण निकलताहै उसे कंखहारी कहतेहैं वह पित्तकोपसे होतीहै देवदारु मनशिल कूठ इनका लेप कँखिहारीपर स्वेदित करके करे तो कफवातसे उत्पन्न दारुण कक्षादोष दूर होताहै ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

अथ पाददारी ।

मधूच्छिष्टवसामज्जाघृतसर्जैर्विमिश्रितैः ।
स्नेहस्वेदोपपन्नौतुपादौचालेपयेन्मुहुः ॥ ८६ ॥
सर्जाह्वसिंधूद्भवयोश्चूर्णमधुघृताप्लुतम् ।
निर्मथ्यकटुतैलाक्तंहितंपादप्रमार्जनम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-शहद चरवी हाडके भीतरका मगज घृत रालका चूरन इनको मिलाकर पहले तेल मल और स्वेदित कर पैरोंको चालन कर राल सेंधेनोंनका चूर्ण मधु और घृतमें मिलाय कडवे तेलमें मथन करे यह पैरमें मलनेसे हित-कारक है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

अथ गुदभ्रंशौषधम् ।

गुदंचगव्यपयसाम्रक्षयेदविशंकितम् ।
दुष्प्रवेश्योगुदभ्रंशोविशत्याशुनसंशयः ॥ ८८ ॥

मूपिकाणांवसाभिर्वागुदेसम्यक्प्रलेपनम् ।
चांगेरीकोलदध्यम्लनागरक्षारसंयुतम् ॥ ८९ ॥
घृतमुत्क्कथितंपेयंगुदभ्रंशरुजापहम् ॥ ९० ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने
पंचमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

अर्थ-गुदभ्रंश (काँचका निकलना) रोगमें गौके दूधसे मर्दन करे तो अत्यन्त बाहर आई हुई कांचभी भीतर प्रवेश कर सक्ती है इसमें सन्देह नहीं अथवा चूहेकी चरबीसे कांचपर लेप करनेसे फिर बाहर नहीं आती है अम्लोनियाका रस बेरोंका काढा खट्टा इनमें सोंठ और जवाखारके साथ घृत सिद्ध कर पीनेको देना गुदभ्रंशरोग दूर होगा८८-९०

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने भाषाटीकायां पंचम प्रकाश ॥ ५ ॥

अथ त्रिफला ।

एकाहरीतकीयोज्याद्वौतुयोज्यौविभीतकौ ।
चत्वार्यामलकान्याहुःसितान्नद्विगुणाभवेत् ॥ १ ॥
त्रिफलामेहशोथघ्नीकुष्ठहर्त्रीरसायनी ।
सर्पिर्मधुभ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयापहा ॥ २ ॥

अर्थ-एक हरड दो बहेडे चार आमले दुगनी मिश्री लेकर सेवन करे यह त्रिफला प्रमेह शोथ कुष्टको दूर करनेवाला रसायन है घृत मधुके साथ सेवन करनेसे नेत्ररोगका दूर करनेवाला है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ हरीतकीयोगः ।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निंपेपितामलशोधिनी ।
स्विन्नासंग्रहणीप्रोक्ताभृष्टापथ्यात्रिदोषनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ-चर्वण करनेसे हरड अग्निको बढाती है पीसकर

खानेसे मल शोधन करती है स्वेदन कीहुई दस्तावर है और भुनीहुई त्रिदोषको दूर करती है ॥ ३ ॥

ग्रीष्मेतुल्यगुडांसुसैंधवयुतांमेघावनद्धेम्बरे
तुल्यांशर्करयाशरद्यमलयाशुंठ्यातुषारागमे ॥
पिप्पल्याशिशिरेवसंतसमयेक्षौद्रेणसंयोजितां
राजन्प्राप्यहरीतकीमिवरुजोनश्यंतुतेशत्रवः ॥ ४ ॥

अर्थ-ग्रीष्म ऋतुमें हरीतकीका सेवन बराबर गुड मिलाकर करे वर्षा ऋतुमें सैंधानमकके साथ प्रतिदिन दो हरडका सेवन करे शरदऋतुमें तुल्य शर्करा (मिश्री) मिलाकर खाय हिमऋतुमें सोंठके साथ मिलाकर खाय शिशिर, वसन्तमें शहदके साथ सेवन करे हे राजन् ! इसप्रकार हरडके सेवन करनेसे रोगोंकी समान तुम्हारे शत्रु नष्ट हों ॥ ४ ॥

अथ त्रिकटु ।

पिप्पलीमरिचंशुंठीत्रिभिरुयूषणमुच्यते ।
दीपनंश्लेष्मदोपघ्नंकुष्ठपीनसनाशनम् ॥ ५ ॥

अर्थ-पीपली काला मिरच सोंठ इन तीनोंको त्र्यूषण कहते हैं यह सेवन करनेसे दीपन है श्लेष्माका दोष दूर करनेवाला तथा कुष्ट और पीनसरोग दूर करता है ॥ ५ ॥

अथ षट्कटु ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यनागरचित्रकैः ।
पंचकोलंकफानाहगुल्मशूलारुचीर्जयेत् ॥ ६ ॥
पंचकोलंसमरिचंषड्रूषणमुदीर्यते ।
पंचकोलगुणंतत्तुविशेषाद्वह्निवर्द्धनम् ॥ ७ ॥

अर्थ-पीपल पीपालामूल चव्य सोंठ चीता यह पंचकोल कहलाता है यह कफ आनाह गुल्म शूल अरुचिको

दूर करता है और इसीमें काली मिरच मिलानेसे यह षडूषण कहलाता है पंचकोलसे इसम अग्निवर्द्धनका गुण अधिक ह ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ शुंठीयोगः ।

साभृष्टासैंधवोपेतात्रिदोषघ्न्यामतत्परम् ।
गुडेनार्शोविबंधघ्नीशोफवातविकारजित् ॥ ८ ॥
तक्रेणामंपाचयतिपयसारेचयत्यसुम् ॥ ९ ॥

अर्थ-भूनीहुई सेंधेके साथ सोंठका सेवन करे तो यह त्रिदोषको दूर करती है गुडके साथ सेवन करनेसे अर्शरोग विबंधको दूर करती तथा शोफ और वातविकार दूर करती है मट्ठेके साथ आमको पचाती और दूधसे रेचन करती है ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ चातुर्जातम् ।

त्रिगंधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंसकेशरम
त्रिगंधंचचतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्तकृत् ॥
वर्ण्यंरुचिकरंतीक्ष्णंविषश्लेष्मामयापहम् ॥ १० ॥

अर्थ-इलायची दालचीनी तेजपात यह त्रिसुगंध कहलाताहै इसमें नागकेशर मिलनेसे चातुर्जात होता है त्रिसुगंध और चातुर्जात रूखा है उष्ण है हलका है पित्तकारक है वर्ण्य रुचिकारक तीक्ष्ण विष श्लेष्मा रोगका दूर करनेवाला है ॥ १० ॥

अथ पंचक्षीरीवृक्षाः ।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपारिसप्लक्षपादपाः ।
पंचैतेक्षीरिणःप्रोक्तास्तेषांत्वक्पंचवल्कलम् ॥ ११ ॥

अर्थ-बड, गूलर, पीपल, पारसपीपल, पाखर यह पांच वृक्ष क्षीरी कहातेहैं इनकी छाल पंचवल्कल कहलाती है ॥ ११ ॥

केचित्तुपारिसस्थानेशिरीषंवेतसंपरे।
त्वक्पंचकंहिमंग्राहियोनिदोषव्रणापहम्॥ १२ ॥

अर्थ-कोई पारिसके स्थानमें शिरस कोई वेतको कहते हैं इन पांचोंकी छाल ठंडी, ग्राही और योनिदोष तथा व्रणको दूर करती है ॥ १२ ॥

अथ दशमूली।

शालिपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः।
बिल्वाग्निमंथश्योनाकपाटलाकाश्मरीयुतैः।
दशमूलमिदंख्यातंक्वथितंतज्जलंपिबेत्॥ १३ ॥

अर्थ-शालिपर्णी पृश्निपर्णी अर्थात् शरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, गोखरू, बेल, अरणी, सोनापाठा, पाढल, कंभारी यह दशमूल कहाता है, क्वाथ करके इनका जल पिया जाता है ॥ १३ ॥

अथ पंचलवणम्।

सिन्धुसौवर्चलंचैवविडंसामुद्रिकंगडम्
एकंद्वित्रिचतुष्पंचलवणानिक्रमाद्विदुः॥ १४ ॥

अर्थ-सैंधानोंन, विरियासोंचरलोन, बिडलोन, समुद्रलोन, कालानोंन क्रमसे एक, दो, तीन, चार, पांच लवण तक जानना ॥ १४ ॥

अथ क्षारौ।

स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम्॥ १५ ॥

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार यह दो खार हैं ॥ १५ ॥

अथ युक्तायुक्तकथनम्।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु।
विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः॥ १६॥

अर्थ-सब कर्मके नवीनही द्रव्य प्रयोग करने चाहिये परन्तु वायविडङ्ग, पीपल, गुड, धान्य, घृत और शहद, यह पुराने काममें लावे ॥ १६ ॥

गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडंचशतावरी ।
अश्वगंधासहचरःशतपुष्पाप्रसारिणी ॥ १७ ॥

अर्थ-गिलोय कुडा अडूसा पेठा शतावर असगंध पीली· कटसरैया सौंफ पसरन ॥ १७ ॥

प्रयोक्तव्यासदैवार्द्राद्विगुणांचैवकारयेत् ।
शुष्कंनवीनंद्रव्यंचयोज्यंसकलकर्मसु ॥ १८ ॥

अर्थ-यह औषधि सदा गीली प्रयोग करनी चाहियें और यह दुगुनी प्रयोग करे नवीन द्रव्य सब कर्मोंमें सुष्क प्रयोग करना चाहिये ॥ १८ ॥

आर्द्रंचद्विगुणंयोज्यमेपसर्वत्रनिश्चयः ।
कालेनुक्तेप्रभातंस्यादंगेनुक्तेजटाभवेत् ॥ १९ ॥

अर्थ-परन्तु गीला द्रव्य दूना प्रयोग करना चाहिये यह सर्वत्र निश्चय है, जिसमें काल नहीं कहा है वहां प्रातःकाल जानना चाहिये, जहां अंग नहीं कहा है वहां जटा जाननी १९

भागेनुक्तेचसाम्यंहिपात्रेनुक्तेतुमृन्मयम् ॥
एवमप्यौपधंयोगेयस्मिन्यत्पुनरुच्यते ॥ २० ॥
मानतोद्विगुणंप्रोक्तंतद्द्रव्यंतत्त्वदर्शिभिः ।
गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वंतद्रूपमौपधम् ॥ २१ ॥

-मासद्वयंतथाचूर्णहीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ।
हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरात्परम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जहां भाग नहीं कहा वहां समान जानना, जहां पात्र नहीं कहा वहां मिट्टीका पात्र जानना और जो एकही औषधि किसी प्रयोगमें दो वार कही हो उसे दूनी लेना, यह तत्त्वदर्शियोंका निश्चय है. १ वर्ष बीतनेसे औषधी गुणहीन हो जाती है, दो महीनेमें चूर्ण हीनवीर्य हो जाता है, एकवर्षमें गुटिका और लेह हीनवीर्य होजाते हैं ॥२०॥ २१ ॥ २२ ॥

हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ।
औषध्योलघुपाकाःस्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम् ॥२३॥

अर्थ-घृत और तेल चारमहीनेमें हीनवीर्य हो जाते हैं, वर्षसे अधिक औषधी हीनवीर्य, लघुपाकवाली हो जाती हैं ॥ २३ ॥

पुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः ।
व्याधियुक्तंतुयद्द्रव्यंगणोक्तमपितत्त्यजेत् ॥ २४ ॥

अर्थ-आसव और धातुरस पुराने होकर गुणयुक्त हो जाते हैं, जो द्रव्य व्याधियुक्त हो वह गणमें कहा हो तो भी त्यागदे ॥ २४ ॥

अनुक्तमपियद्युक्तंयोजयेत्तत्रतद्बुधः ।
भल्लातकासाभावेतुप्रदेयंरक्तचंदनम् ॥ २५ ॥

अर्थ-जो द्रव्य कथन नहीं किया है और वह हितकारी हो तो उसको उसमें डालना चाहिये मिलावे और कासके अभावमें लालचन्दन देना चाहिये ॥ २५ ॥

तुगाभावेप्रदातव्यात्वक्क्षीरीतद्गुणाबुधैः ।
अंतस्संमार्जनेऽमोदास्थानेयोज्यायवानिका ॥२६॥
वहिःसंमार्जनेऽमोदाह्यजमोदैवगृह्यते ।
कृष्णजीरकयोगोनकर्त्तव्योभक्ष्यभेपजे ॥ २७ ॥

अर्थ–तजके अभावमें वंशलोचन देना चाहिये. अन्तः शुद्धिमें अजमोदके स्थानमें अजवायन लेनी और वही संमार्जन अजमोदाके स्थानमें अजमोदही लेनी, भक्ष्य औषधीमें काले जीरेका योग न करना चाहिये ॥ २६ ॥ २७ ॥

तस्यस्थानेविधातव्योजीरकः कुशलैः सदा ।
अंतःसंमार्जनेयोज्यंवचास्थानेकुलिंजनम् ॥ २८ ॥

अर्थ–उसके स्थानमें चतुर पुरुषोंको सदा सफेदजीरा प्रयोगकरना चाहिये, अंतःसंमार्जनमें वचक स्थानेंम कुलिंजनका प्रयोग करना चाहिये ॥ २८ ॥

सारस्तुखदिरादीनांनिंबादीनांत्वचःस्मृताः ।
फलंचदाडिमादीनांपटोलादेर्दलंमतम् ॥ २९ ॥

अर्थ–सारोंमें खैरसारादि छालके स्थानमें नीमकी छाल लेनी, दाडिमादि फलके स्थानमें उसका फल और पटोलादिके दल लेने चाहिये ॥ २९ ॥

मुक्ताभावेक्षिपेन्नूनंमुक्ताशुक्तिंचतद्गुणाम् ।
अभावेमधुनोयोज्योगुडोजीर्णश्चतद्गुणः ॥ ३० ॥

अर्थ–मोतीके अभावमें मुक्तासीपी उतनीही डालनी चाहिये मधुके अभावमें पुराना गुड प्रयोग करना चाहिये ३०

सिताभावेभवेत्खंडंशाल्यभावेचपष्टिकाः ।
असंभवेतुद्राक्षायाःप्रदेयंकाश्मरीफलम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-मिश्रीके अभावमें खांड, शालिके अभावमें षष्टिक धान्य और दाखके अभावमें खंभारीका फल देना चाहिये ३१

वृक्षाम्लंनभवेद्यत्रदाडिमाम्लंप्रयोजयेत् ।
वेतसाम्लस्यचाभावेहरिमंथाम्लमादिशेत् ॥
अभावेचंदनस्यापिमेलयेद्रक्तचंदनम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-जब इमली न मिले तो खट्टे दाडिमका प्रयोग करना, अमलवेतके अभावमें चणक अम्ल (चूका) प्रयोग करे, श्वेत चन्दनके अभावमें लालचन्दन डालना चाहिये ॥ ३२ ॥

अथ विरुद्धाहारकथनम् ।

विरुद्धमपिचाहारंविद्याद्गुरुविषोपमम् ।
तद्बोधायभिषक्स्थाप्योभोजनावसरेनृपैः ॥ ३३ ॥

अर्थ-विरुद्धभोजन गुरु विषकी समान होजाताहै, इसके ज्ञानार्थ राजाओंको भोजनके समय स्थापन करना चाहिये ॥ ३३ ॥

कालक्रमेणसद्योवाविरुद्धाहारसेवनम् ।
निहंतिमानवंतस्माद्विरुद्धमशनंत्यजेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-कालक्रमस वा तत्काल विरुद्ध आहारका सेवन करना मनुष्यको मारडालताहै इसकारण विरुद्धभोजन त्यागदे ॥ ३४ ॥

व्याधिमिंद्रियदौर्बल्यंमरणंवाप्रयच्छति ।
विरुद्धमशनंतस्याद्वर्जयेदात्मवान्नरः ॥ ३५ ॥

अर्थ-व्याध, इन्द्रियदुर्बलता वा मरण इससे होताहै इस कारण विरुद्धभोजनको सदा त्याग देना चाहिये ॥ ३५ ॥

दुग्धशाककुलत्थमीनमदिरावल्लीफलक्षारव-
दम्लैमासकवीरजांववदधिक्षौद्रैः पृथग्वापृथक् ॥

दुग्धस्याद्दधितूष्णलाकुचपयस्तैलासवांश्चायुधै-
स्तालेनाप्यथतक्रमाज्यकदलीधानापयःसक्तुभिः ३६

अर्थ-शाक कुलथीके साथ दूध विरुद्ध भोजन है, मछली के संग मदिरा अजमोद मैनफल और क्षार विरुद्ध है अम्लवेतके संग मांस कांजी जम्बूफल दधि शहद पृथक् भोजन करना विरुद्ध है और दही प्याज बडहरका फल दूध तेल आसव यह परस्पर विरुद्ध हैं ताडके फलके साथ मट्ठा घृत केलेकी फली,भूने जौ और सत्तुओंके साथ दूध विरुद्ध है३६

मुहूर्त्तपंचकादूर्ध्वंक्षीरंभजतिविक्रियाम् ।
तदेवद्विगुणेकालेविषवद्धन्तिमानवम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-दूध पांच मुहूर्ततक वैसेही धरा रहे तो विकारी होजाताहै और दश मुहूर्ततक धरा रहनेसे मनुष्यको विष घढानेवाला होताहै ॥ ३७ ॥

अक्वथितंदशघटिकाःक्वथितंद्विगुणञ्चतत्पयःपथ्यम् ।
अथवामधुररसाढयंयावत्तावत्पयःपथ्यम् ॥ ३८ ॥

अर्थ-बिना औटाया हुआ दशघडीतक, औटया हुआ बीस घडीतक दूध पथ्य है और मीठा मिलाया हुया जबतक इच्छा हो रहने दे ॥ ३८ ॥

मत्स्यमांसगुडमुद्गमूलकैःकुष्ठमावहतिसेवितंपयः ।
शाकजांबवसुरासवैःपुनर्मारयत्यबुधमाशुसर्पवत् ३९॥

अर्थ-मच्छीका मांस गुड मूंग मूलीके साथ सेवन करनेसे कुष्ट करताहै शाक जम्बूफल आसवके साथ सेवन करनेसे सर्पकी समान मूर्खको मार डालते हैं ॥ ३९ ॥

एणैर्मृगैर्मयूरैश्चतित्तिरैर्लावकादिभिः ।
सर्वजांगलमांसैश्चक्षीरंप्रतिनिषिद्ध्यते ॥ ४० ॥

अर्थ-एण मृग मोर तीतर लावा और सब जांगल मांसोंके साथ दूध पीना वर्जित है ॥ ४० ॥

अम्लेष्वामलकंशस्तंलवणेषुचसैन्धवम्।
कषायेष्वभयाशस्ताकटुवर्गेषुनागरम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-अम्ल पदार्थोंमें आमला, लवणमें सैंधा, कषायोंमें हरड, कटुवर्गमें सोंठ ॥ ४१ ॥

पटोलंतिक्तवर्गेषुमधुरेषुचशर्करा।
एतैःसहहितंदुग्धमेतदन्यैर्विकारकृत् ॥ ४२ ॥

अर्थ-तिक्त वर्गोंमें पटोल मधुरमें शर्करा इनके साथ दूध पीनेसे विकार नहीं करता इनसे अन्योंके साथ विकार करताहै ॥ ४२ ॥

उष्णेनदिव्यसलिलेनवराहगोधा-
मांसेनयातिविकृतिंमधुमूलकैश्च।
तक्रेणचोष्णमपितुल्यघृतंघृतंच
कांस्येदशाहमुषितंचतथाघृतञ्च ॥ ४३ ॥

अर्थ-उष्ण दिव्यजल और वराह गोहके मांसके साथ मधु मूलके विकारको प्राप्त होते हैं और तक्रके साथ गरम घृत वा वैसाही घृत खाना वर्जित है और कांसीके बर्त्तनमें रक्खा हुआ घी दशदिनमें खानेके योग्य नहीं रहता है ४३

गोधातित्तिरलावशल्लिपललान्यैरंडतैलाग्निना
मत्स्याम्लैक्षवमाधवैरथपृषदक्षामिपान्यासवैः ॥
तैलैःसर्षपजःकपोतपटलंसिद्धंविरुद्धंतथा

नानेकत्रतुपाचितानितरसाव्यापादयंत्यंगिनम् ४४॥

अर्थ-गोधा तीतर लावा मोर इनके मांस अण्डीके तेलके साथ विरुद्ध हैं, मच्छी इमली ऊब मधुके संग बिन्दुवाले मृगका मांस आसवसे विरुद्ध है तथा सरसोंके तेलसे कबूतरका मांस सिद्ध करनेसे विरुद्ध होजाता है, इनको एकत्र न पकावे ऐसा करनेसे यह भोजन करनेवालेको मारदेतेहैं ॥ ४४ ॥

हारीतस्यपलंहिदारुरजनीमूलेनविद्धानिशा
वह्नौपाचितमत्तिमानवपलंकौसुंभतैलैरविः ॥
प्रोतंकेनचिदेवभासपललंशूलेनदुष्टंमतं
वासिन्याविसकंटिकासहतथाकुलमापकैश्चाहिता ४५

अर्थ-हारीतका मांस हलदी दारुहलदीके साथ विरुद्ध है मूल (पुष्करमूल) कपूर और हलदी विरुद्ध है और अग्निमें पकाया हुआ जो मनुष्यका मांस कुसुमके तेलसे कुलथी और शूलपर रक्खा हुआ मांस पक्षीका मांस निकम्मा हो जाता है और सफेद कटसरैया वनककोडके साथ विरुद्ध है तथा कुलथीके साथभी विरुद्ध है ॥ ४५ ॥

दुष्टंपायसमन्वितंकृशरयाचंद्रस्तुनिंबूरसे-
स्तैलैःसार्द्धमफेनकंकिटिवसासिद्धोविरोधोवकः ॥
सर्पिःक्षौद्रवसांबुतैलमपृथक्तद्वद्विशोवात्रिशो
भिस्सापर्युषितातथामुद्गरबुष्णोष्णीतथानोहिता ४६

अर्थ-दूधके वा खीरके साथ खिचड़ी विरुद्ध है कपूर निम्बूके रसके साथ विरुद्ध है और तेलके साथमें फेनरहित शूकरकी चरबी मिलानेसे विरुद्ध है घृत और शहद बराबर मिलानेसे विरुद्ध है वसा (चर्बी) जल तेल विरुद्ध हैं इसी प्रकार

दा वा तीन दिनका रक्खा वासी अन्न तथा बहुत अनुष्ण तथा वारंवार गरम हितकारी नहीं है ॥ ४६ ॥

अत्युष्णंखलुवस्तुमूलकयुतंशूलामगुल्मप्रदं
दुष्टंलाकुचमाज्यदुग्धगुडदध्याज्यंसमांशंपृथक् ४७
सक्तुर्भक्तपयःपलैःसमथितैर्दुष्टःपृथग्वापृथक्
तीक्ष्णक्षौद्रकणागुडैस्सहतथास्यात्काकमाचीभृशम्
स्नेहंनिस्तलनेझपस्यतलिताकिंचोपितायामिनीं
कंपिल्लस्तुसतत्रएवमहिमैर्भल्लातमन्नादिभिः ॥ ४८ ॥

अर्थ-अत्यन्त गरम वस्तु मूलीके सहित खानेसे शूल आम और गुल्मरोग करती है और बडहरका फल घृत दूध गुड दहीके साथ समांश वा पृथक् २ विरुद्ध हैं सत्तुओं-के साथमें दूध मिलाकर वा मांसके साथ सत्तू मिलाकर खाना विरुद्ध है जवाखार शहद पीपल विरुद्ध है गुडके साथमें यह तथा काकमाची (मकोय कवैया) विरुद्ध है जिस तेलमें मछली पकाई हो उसमें हलदी विरुद्ध है बासी त्याज्य है कवीला तक्रके साथ और कपूरको छोड भिलावा अन्नादिके साथमें विरुद्ध है इस प्रकार विरुद्ध जानें ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

रात्रौक्षीरंनसेवेतयदिसेवेतनस्वपेत् ।
यदिस्वपेद्धरत्यायुस्तस्मात्पथ्यंदिवापयः ॥ ४९ ॥

अर्थ-रात्रिमें दुग्ध सेवन करना नहीं और जो सेवन करे तो सोवे नहीं और जो दुग्ध पीकर तत्काल सोता है तो आयु हरता है इसकारण दिनमें दूध पीना पथ्य है ॥ ४९ ॥

हेमंतेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते ।
शरद्ग्रीष्मवसंतेषुप्रायशस्तद्धिगर्हितम् ॥ ५० ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते
वैद्यरत्ने षष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

अर्थ-हेमन्त शिशिर और वर्षामें दहीका खाना उत्तम है, शरद ग्रीष्म और वसन्तमें दही खाना वर्जित है ॥५० ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-
मिश्रकृतभाषाटीकायां षष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

अथ क्वाथविधिः ।

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णद्रव्याद्विनिःक्षिपेत् ।
मृत्पात्रेक्कथितंग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ।
शृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहश्चेतिनामभृत् ॥ १ ॥

अर्थ-क्वाथकी विधि कहतेहैं-एकपल औषधि चूर्ण और सोलह पल पानीके साथ मिट्टीके पात्रमें औटावै जब अष्टमांश शेष रहजाय तब छानले इसको शृत कषाय क्वाथ, और निर्यूहभी कहतेहैं ॥ १ ॥

अथावलेहिका ।

क्वाथादेर्यत्पुनःपकाद्घनत्वंसारसक्रिया ।
सोवलेहश्चतन्मात्रास्यात्तथैवपलोन्मिता ॥ २ ॥

अर्थ-क्वाथादि औषधोंके जो फिर पकानेसे गाढा होताहै उसको रसक्रिया और अवलेह कहते हैं इसकी मात्रा एक पलकी है ॥ २ ॥

अथ चूर्णविधिः ।

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम् ।
तत्स्याच्चूर्णरजःक्षौद्रस्तन्मात्राकर्षसंमिता ॥
चूर्णगुडःसमोदेयःशर्कराद्विगुणामता ॥ ३ ॥

अर्थ-जो अत्यन्त सूखी औषधी सुन्दर पीसिके वस्त्रसे छानी होय इसको चूर्णरज और क्षोद कहतेहैं, उसको खानेकी मात्रा एक कर्षकी है, जो चूर्णमें गुड मिलाना होय तो चूर्णके समान शक्कर दूनी मिलावे, हींग भूनके मिलानी ॥ ३ ॥

अथ मंडविधिः ।

जलेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वसिक्थकः ॥
शुण्ठीसैंधवसंयुक्तःपाचनोदीपनोलघुः ॥ ४ ॥

अर्थ-अच्छे चावलोंको चौदहगुणे जलमें सिद्ध करनेसे मण्ड सिद्ध होता है इसमें सोंठ और सैंधा मिला सेवन करनेसे दीपन पाचन और लघु होता है, चावलोंके सीजनेपर मांड निकाल लेना इसको शुद्ध मण्ड कहते हैं ॥ ४ ॥

तण्डुलैरर्द्धमुद्गांशैःकिंचिद्भृष्टःसुपाचितः ।
धान्यत्रिकटुसिंधूत्थहिंगुतक्रेणयोजितः ॥ ५ ॥
ज्ञेयःसोष्टगुणोमंडोज्वरदोपव्रणापहः ।
रक्तक्षुद्वर्धनःप्राणप्रदोवस्तिविशोधनः ॥ ६ ॥

अर्थ-आधे चावल और मूंग मिलाकर कुछ भूनके इसमें धनियाँ सोंठ मिरच पीपल सैंधानिमक मूंग चावल हींग और तक्र यह इसमें मिलावे हींग भूनले चौदहगुने पानीमें डालकर पकावे जब चावल सीजजाय तब उतारकर छानले इसको अष्टगुण मण्ड कहतेहैं, येह ज्वरदोष और व्रणदोषका दूर करनेवाला है रक्त और क्षुधाका बढानेवाला प्राण देनेवाला बस्तिका शोधक है॥ ५ ॥ ६ ॥

सुकंडितैस्तथाभृष्टैर्वाटयमंडोयवैर्भवेत् ।
कफपित्तहरःकंठ्योरक्तपित्तप्रसादनः ॥ ७ ॥

अर्थ–श्रेष्ठ जौओंको उत्तम रीतिसे कूट फटक कर भूनै, फिर बिन फटककर उसमें चौदह गुना पानी चढाकर सिजावे फिर पानी छानकर सेवन करे इसे वाटयमण्ड कहतेहैं इसके पीनेसे कफ पित्तका दोष दूर हो कंठको हितकारक और रक्त पित्तका कोप दूर करनेवाला है ॥ ७ ॥

लाजैर्वातंडुलैर्भृष्टैर्लाजामंडःप्रकीर्तितः ।
श्लेष्मपित्तहरोग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः ॥ ८ ॥

अर्थ–धानकी भूनी खील वा चावलोंको भूनकर उसमें चौदह गुना पानी डालकर औटावे फिर उसको पसाकर मांड निकालले इसे लाजामण्ड कहतेहैं यह श्लेष्म पित्त हरनेवाला ग्राही प्यास और ज्वर दूर करताह ॥ ८ ॥

अथ यूषः ।

यूषःकृतोद्विदलानामष्टादशगुणेंवुनि ।
मुद्गामलकयूषस्तुभेदनःकफपित्तजित् ॥
तृड्दाहशमनःशीतोमूर्च्छाभ्रममदापहः ॥ ९ ॥

अर्थ–यूषविधि द्विदलवाले द्रव्योंको अठारह गुणे जलमें डालकर गाढा होजानेपर यूप कहलाताहै, मूंग और आमलेका यूप भेदन और कफपित्तका जीतनेवाला है, यह तृषा दाहका शान्त करनेवाला ठंढा मूर्छा भ्रमको दूर करताहै ९॥

अथ धातुशोधनमारणे ।

तत्रादौ हेम्नः ।

सुवर्णमुत्तमंवह्नौविद्रुतंनिक्षिपेत्त्रिशः ।
कांचनारद्रवेशुद्धंकांचनंजायतेभृशम् ॥ १० ॥

शुद्धसूतंसमंस्वर्णंखल्वेकृत्वातुगोलकम् ।
ऊर्ध्वाधोगंधकंदत्त्वासर्वतुल्यंनिरुद्ध्यच ॥ ११ ॥
त्रिंशद्वन्योपलैर्देयंपुटमेकंचतुर्दश ।
निरुद्धंहेमभस्मस्याद्वन्धोदेयःपुनःपुनः ॥ १२ ॥

अर्थ-उत्तम सुवर्णको अग्निम तीनवार तपावै जब वह गरम होजाय तब कचनारके रसका पुट देता जाय तो सुवर्ण शुद्ध हो जाता है शुद्ध पारा और सोना बराबर लेकर खरल करे फिर उसका गोला करके उस गोलेके समान नीचे ऊपर गंधक रखकर शरावसंपुटमें तीस जंगली कंडोंकी आँच देना ऐसेही वारंवार मिला मिलाकर चौदह पुट देना तो निरुद्ध भस्म होगी ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ रजतस्य ।

तैलेतक्रेगवांमूत्रेकांजिकेचकुलत्थके ।
त्रिफलाक्काथमध्येतुसंशोध्याःसर्वधातवः ॥ १३ ॥
विधायपैर्ष्टीसूतेनरजतस्याथमेलयेत् ।
तालंगंधंसमंपश्चान्मर्द्दयेन्निंबुकद्रवैः ॥
द्वित्रैःपुटैर्भवेद्भस्मयोज्यमेतद्रसादिषु ॥ १४ ॥

अर्थ-तेल तक्र गोमूत्र कांजी कुलथी और, त्रिफलेके क्काथमें सम्पूर्ण धातुओंको शोधना चाहिये चांदीके कंटकवेधी पत्र कर अग्निमें तपाकर तेल तक्र गोमूत्र और कुलथीके काढेमें तीन तीन वेर बुझावे तो शुद्ध हो पारेके साथ खरल करके पारा और रजतको मिलावे और हरताल तथा गंधक बराबर लेकर नींबूका रस डालकर खरल करे दो तीन पुट देनेसे भस्म हो जाती है इसको रसादिकमें प्रयोग करे ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ ताम्रस्य

जंबीररससंपिष्टंगंधकेनचलेपितम् ।
ताम्रपत्रंशरावस्थंत्रिपुटैर्यातिभस्मताम् ॥ १५ ॥

अर्थ-ताम्रके अतिसूक्ष्म पत्र करके उसे उपरोक्त औषधोंसे तीन वार बुझावे और जंबीरके रसमें पीसकर उसके ऊपर गंधक लगावे फिर सिकोरेमें रखकर फूँदके ऐसी तीन पुट देनेसे ताम्रकी भस्म हो जातीहै ॥ १५ ॥

अथ रीतिकांस्ययोः ।

ताम्रवन्मारणंचापितयोरुक्तंभिषग्वरैः ॥ १६ ॥

अर्थ-ताम्रकी समान पीतल और कांसीका शोधन करे १६

अथ लोहस्य ।

द्वादशांशेनदरदंतीक्ष्णंचूर्णस्यमेलयेत् ।
कन्यानीरेणसंमर्द्यंयामयुग्मंतुतत्पुनः ॥ १७ ॥
शरावसंपुटेकृत्वापुटेद्गजपुटेनवै ।
सप्तधैवंकृतेलोहरजोवारितरंभवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ-पौलादके चूर्णका बारहवां हिस्सा हिंगुल मिलाकर घीकुवाँरके पट्ठेके रसमें दो पहर खरल करे पश्चात् शराव-संपुटमें रखकर कपडमिट्टी कर गजपुटमें फूंदके ऐसे सात पुट देनेसे लोहकी भस्म पानीपर तैरने लगे ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ किट्टस्य ।

अक्षांगारेधमेत्किट्टमक्षपात्रस्थगोजले ।
निर्वापयेदष्टवारंततःसूक्ष्मंविचूर्णयेत् ॥ १९ ॥

अर्थ-बहेडेकी लकडीके कोयले कर उसमें पुरानी कीटकों धमावे लाल होनेपर गोमूत्रमें बुझावे इसप्रकार आठ वार सूक्ष्म चूर्ण करे ॥ १९ ॥

अथ वंगस्य ।

शुद्धंसतालमर्कस्यपिष्ठ्वादुग्धेनतत्पुटेत् ।
शुष्काश्वत्थभवैर्वल्कैःसप्तधाभस्मतामियात् ॥२०॥

अर्थ–शुद्ध वंगकी समान हरताल लेकर उसे आकके दूधमें पीसकर रांगेपर लेप करे और सूखे पीपलकी छालको लेकर उससे सातवार दग्ध करनेसे वंगकी भस्म हो जाती-है ॥ २० ॥

अथ जसदस्य ।

जसदंगिरिजंतस्यदोषाःशोधनमारणे ।
वंगस्येवहिबोद्धव्यागुणांस्तुगणयाम्यथ ॥ २१ ॥
जसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यंपरमंमेहाम्पाण्डुश्वासंचनाशयेत् ॥ २२ ॥

अर्थ–जस्त पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली धातु है उसके दोष शोधन और मारणमें वंगकी समान जानने जस्तके पतले पत्र कर अग्निमें तपाय सात या तीन वार नींबूके रसमें बुझावे फिर उनकी समान गंधक ले आकके दूधमें खरल कर उन जस्तके पत्रोंपर लेपकर मिट्टीकी मूसामें रखकर दूसरी मूसासे उसका मुख बंद करदे कपरमिट्टी कर अरनेउपलोंमें धर फूंकदे इसप्रकार दो अग्निपुट देनेसे जस्तकी भस्म होजाय यह जस्त तीखा शीतल कफ और पित्तका जीतनेवाला है चक्षुको हितकारक प्रमेह पाण्डु और श्वास रोग दूर करता है ॥ २१ ॥ २२ ॥

अथ सीसकस्य ।

त्रिभिःकुंभीपुटैर्नागोवासारसविमर्दितः ।
सशिलोभस्मतामेतितद्रजःसर्वमेहनुत् ॥ २३

अर्थ-शीशा वा मनसिलका चूर्ण अडूसेके रसमें खरल कर गजपुटमें फूंकदे तीन पुटमें शीशेकी उत्तम भस्म होती-है यह सब प्रकारके प्रमेह दूर करतीहै ॥ २३ ॥

अथ उपधातवः ।

अभ्रकंमाक्षिकंतालंशिलानीलांजनंतथा ।
तुत्थकंरसकंचैतेप्रोक्ताःसप्तोपधातवः ॥ २४ ॥

अर्थ-अभ्रक सुवर्णमाक्षिक हरताल मनसिल नीलाथोथा सुरमा रसकपूर यह सात उपधातु हैं ॥ २४ ॥

तत्रादौ अभ्रकस्य ।

कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौततः क्षीरेविनिक्षिपेत् ।
भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातण्डुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ २५
भावयेदष्टयामंतदेवमभ्रंविशुद्ध्यति ।
धान्याभ्रकस्यभागैकंद्वौभागौटंकणस्यच ॥ २६ ॥
पिष्ट्वातदंधमूषायांरुद्ध्वातीव्राग्निनापचेत् ।
स्वभावशीतलंचूर्णंसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ २७ ॥
वरांबुगोघृतंचाभ्रंकलापड्दिक्समांशकम् ।
मृद्वग्निनापचेल्लेह्यममृतीकरणंत्विदम् ॥ २८ ॥

अर्थ-काले अभ्रकको अग्निमें तपाकर दूधमें बुझावे फिर उसके पत्र अलग कर चौलाई और नींबूके रसमें दोनोंको एकत्र करके उनमें उन पत्रोंको आठ पहर पर्यन्त भिगोदे तो अभ्रक शुद्ध हो फिर उस रसमेंसे अभ्रकको निकाल-कर उसकी धान्याभ्रक (कनरी हुई अभ्रक को ले उसमें चतुर्थांश चावलाक धान मिलाकर उसे कम्बलमें पोटली बांध परातमें रक्खे फिर उसपर जल डालता जाय ऐसे पोटलीको मर्दता जाय इसप्रकार करनेसे

उस कम्बलमें जितना अभ्रक होगा वह बहकर उस परातके पानीमें आजायगा जब जानै सब अभ्रक परातमें आगया तब परातका पानी निकालकर फेंदके और उस अभ्रकके चूरेको धूपमें सुखाले इसे धान्याभ्रक कहते हैं) कर उसके दो भाग और दो भाग सुहागा इनको पीसकर अंधमूषामें रखकर बंद कर तीव्र अग्नि देवे जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल पीसकर सब औषधियोंके योगमें दे त्रिफलेका जल १६ पल गौका घृत ८ पल मृतअभ्रक १० पल इनको एकत्रकर लोहेकी कढाईमें मृदुअग्निसे पचावे जब जल घी जल जाय केवल अभ्रक शेष रहै तब यह लेह्य अमृतीकरण नामवाला होता है इसे औषधियोंके साथ दे ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

अथ स्वर्णमाक्षिकस्य।

माक्षिकस्यत्रयोभागाभागैकंसैंधवस्यच।
मातुलुंगद्रवैर्वाथजंबीरस्यद्रवैःपचेत् ॥ २९ ॥
चालयेल्लोहजेपात्रेयावत्पात्रंसुलोहितम्।
भवेत्ततस्तुसंशुद्धिंस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ३० ॥

अर्थ-तीनपैसेभर सुवर्णमाक्षिक पैसेभर सैंधानिमक, दोनोंको पीस कडाहीमें डाल चूल्हेपर चढाय नीचे तेज आंच दे कडाहीमें बिजोरे अथवा जंभीरीका रस डालता जाय और छेलीसे चलाता जाय जब स्वर्णमाक्षिक और कडाही दोनोंका लाल रंग होजाय तब सुवर्णमाक्षिक शुद्ध हुआ जानना ॥ २९ ॥ ३० ॥

कर्कोटीमेषश्रृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैर्दिनम्।
भावयेदातपेतीव्रेविमलंशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥

स्वर्णमाक्षिकवज्ज्ञेयंतारमाक्षिकमारणम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-रूपा माखीको ककोडा मेढासींगी जंभीरी प्रत्येकके रसमें सातसात वार धूपमें खरल रखकर घोटे तो शुद्ध हो स्वर्णमाक्षिककी समान रूपामक्खीका मारण है ॥ ३१ ॥

अथ हरितालस्य।

तालस्यकणशःकृत्वातच्चूर्णंकांजिकेक्षिपेत्।
दोलायंत्रेणयामैकंपक्वंशुद्ध्यतितालकम् ॥ ३२ ॥
तिलतैलेपचेद्यामंयामंचत्रिफलाजल।
चूर्णोदकेनयामैकंपक्वंशुद्ध्यतितालकम् ॥ ३३ ॥
सदलंतालकंशुद्धंपौनर्नवरसेनतु।
खल्वेविमर्दयेदेकंदिनंपश्चाद्विशोषयेत् ॥ ३४ ॥
संशोष्यगोलकंतस्यकुर्य्यात्तच्चविशोषयेत्।
ततःपुनर्नवाक्षारैःस्थाल्याअर्द्धंप्रपूरयेत् ॥ ३५ ॥
तत्रतद्गोलकंधृत्वापुनस्तैनैवपूरयेत्।
आकंठपिठरंतस्यपिधानंधारयेन्मुखे ॥ ३६ ॥
स्थालींचुल्लींसमारोप्यक्रमाद्वह्निंविवर्द्धयेत।
दिनान्यन्तरशून्यानिपंचवह्निःप्रदीयते ॥
एवंतन्म्रियतेतालंमात्रातस्यैकरक्तिका ॥ ३७ ॥

अर्थ-हरतालके छोटे छोटे बारीक टुकडे कर उनको कपडेकी पोटलीमें बांधकर दोलायंत्रद्वारा एक पहर कांजीमें पचावै तो शुद्ध हो एक पहर तिलके तेलमें एक पहर त्रिफलेके ॰ किये जलमें पकावै तो इस प्रकार करनेसे शुद्ध होताहै शुद्ध किये हरतालको पुनर्नवाके रसमें एक दिन घोटकर

गोला बनाकर सुखावै जब वह गोला सूखजाय फिर एक हांडीमें आधी हांडीतक पुनर्नवाका क्षार भरके उसपर वह गोला रखकर ऊपरसे वह क्षार मुखतक भरके हांडीका मुख बंद कर चूल्हेपर चढाय क्रमसे अग्नि बढाताजाय इसप्रकार बराबर पांच दिन अग्नि प्रदीप्त करै फिर उसको ठंडा करले अवश्य हरतालकी भस्म होजायगी इस मारे हुए हरतालकी मात्रा एक रत्तीकी है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६॥३७॥

अथ मनःशिला ।

अगस्तिपत्रतोयेनभावितासप्तवारकम् ।
शृंगवेररसैर्वापिविशुद्ध्यतिमनःशिला ॥ ३८ ॥

अर्थ-मनशिलको अगस्तियाके पत्तोंके रस अथवा अदरखके रसकी सात भावना दे तो मनसिल शुद्ध हो ॥ ३८ ॥

अथ खर्परस्य।

नृमूत्रवाथगोमूत्रेसप्ताहंरसकंपचेत् ।
दोलायंत्रेणशुद्धंस्यात्ततःकार्येपुयोजयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ-खपरियाको मनुष्यके मूत्रमें और गोमूत्रमें दोलायंत्रसे सात दिन पकावै तो शुद्ध हो ॥ ३९ ॥

अथ तुत्थम् ।

ओतोर्विष्टासमंतुत्थंसक्षौद्रंटंकणांत्रियुक् ।
त्रिधैवंपुटितंशुद्धंवांतिभ्रांतिविवर्जितम् ॥ ४० ॥

अर्थ-बिल्लीकी विष्ठाके समान नीलाथोथा ले उसमें शहद और सुहागा डालकर खरल करे फिर शरावसंपुटमें रख कपडमिट्टी कर फूंके ऐसे तीन वार करनेसे नीलाथोथा वमन और भ्रांतिरहित शुद्ध होता है ॥ ४० ॥

अथ नीलांजनस्य ।

स्रोतोंजनंतुद्विविधंश्वेतकृष्णप्रभेदतः ।
त्रिफलावारिणिस्वेद्यंतद्वयंसिद्धिमृच्छति ॥ ४१ ॥

अर्थ-श्वेत और कृष्णके भेदसे सुरमा दो प्रकारका है यह त्रिफलेके जलकी पुट देनेसे दोनों प्रकारका शुद्ध होता है ॥ ४१ ॥

अथ पारदशोधनम् ।

तत्रशोधनबाहुल्यादथवादरदाकृष्टंस्विन्नम् । लवणांबुभाजिदोलायांरसमादाययथेच्छंकर्त्तव्यस्तेनभेषजेयोगइतिवचनादस्यदरदाकृष्टिर्लिख्यते ।

निंबूरसेनसंपिष्टात्प्रहरंदरदाद्दढम् ।
ऊर्ध्वपातनयंत्रेणसंग्राह्योनिर्मलोरसः ॥ ४२ ॥

अर्थ-पारेका शोधन बहुत प्रकारसे है अथवा शिंगरफसे निकाल अत्यन्त खट्टी कांजीमें उसका स्वेदन करना चाहिये व लवणका जल भरे दोलायंत्रसे रस लेकर यथेच्छ प्रयोग करे इसका औषधियोंके साथ योग है, इस वचनसे शिंगरफसे पारेके निकालनेकी विधि लिखतेहैं । एक पहर-तक शिंगरफको नींबूके रससे खरल करे और ऊर्ध्वपातन यन्त्रके द्वारा पारा निकालले यह निर्मल होता है ॥ ४२ ॥

अथोपरसाः ।

तत्रादौ गंधकशोधनम् ।

सदुग्धभांडस्यपुटेस्थितोयंशुद्धोभवेत्कूर्मपुटेनगंधः ४३

अर्थ-एक हांडीमें सेरभर दूध भरकर वस्त्रसे उसका मुख बांधदे और १६ तोले आमलासार गंधक पीसकर घीमें गलावे गलनेपर उस वस्त्रपर डालदे तो गंधक उस कप-

डेमेंसे टपककर दूधमें जमजायगी उसे निकाल पानीसे धो सुखा रक्खे ॥ ४३ ॥

अथ सिंदूरस्य।

सिंदूरंनिंबुकद्रावैःपिष्टाघर्मेविशोषयेत् ।
ततस्तंडुलतोयेनतथाभूतंविशुद्ध्यति ॥ ४४ ॥

अर्थ-सिंदूरको नींबूके रसमें घोटकर धूपमें सुखावै पीछे चावलोंके पानीमें घोटकर धूपमें सुखावै तौ शुद्ध हो ॥४४॥

अथ समुद्रफेनस्य।

समुद्रफेनःसंपिष्टोनिंबूतोयेनशुद्ध्यति ॥ ४५ ॥

अर्थ-निम्बूके अर्कके साथ खरल करनेसे समुद्रफेन शुद्ध होताहै ॥ ४५ ॥

अथ दरदस्य।

मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् ।
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ॥ ४६ ॥

अर्थ-भेडीके दूधमें और कोईसीभी खटाई नींबूके रस आदिकी पृथक् पृथक् सात भावना देनेसे हिंगुल शुद्ध होताहै ॥ ४६ ॥

अथ टंकणस्य।

अतस्तंशोधयेदेवंवह्नावुत्फुल्लितःशुचिः ॥ ४७ ॥

अर्थ-अग्निपर रखनेसे फूलकर सुहागा शुद्ध होजाताहै ४

अथ शिलाजतुनः।

अथोष्णकालेरवितापयुक्तेव्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे ॥
चत्वारिपत्राण्यसितायसानिन्यस्यातपेदत्तमनोविधानः
शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रेप्रक्षिप्यतोयंद्विगुणंततोस्मात्
उष्णंतदर्द्धेश्रृतमप्सुदत्त्वाविशोषयेत्तन्मृदितंयथावत् ॥

अर्थ–गरमीके दिनोंमें जब कडी धूप निकले आकाशमें और वायुसे रहित हो उससमय समान भूमिमें चार लोहपात्र स्थापन करे उनमेंसे प्रथम पात्रमें शिलाजीतके टुकडे टुकडे कर डालदे और शिलाजीतसे दूना जल डाले और उससे आधा गरम जल डाल उसे धीरे धीरे हाथसे मलकर वस्त्रमें छानले उस छने जलको पात्रमें भरकर धूपमें रखदे ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

ततस्तुयत्कृष्णमुपैतिचोर्द्ध्वंसंतानिकावद्रविरश्मियोगात्
पात्रात्तदन्यत्रततोनिदध्यात्तस्यांतरेकोष्णजलंनिधाय
ततश्चतस्मादपरत्रपात्रेतस्माच्चपात्रादपरत्रतत्र ॥
पुनस्ततोन्यत्रनिधायकृष्णंयत्संहृतंतत्पुनरादरेच्च ५१
यदापिशुद्धंजलमच्छमूर्द्ध्वंप्रसन्नभावान्मलमेत्यधस्तात्
तदात्यजेत्तत्सलिलंमलंचशिलाजतुस्याज्जलशुद्धमेवम्

अर्थ–जब उसपर मलाई जमजाय तब उसको उतारकर दूसरे पात्रमें रखता जाय जब मलाई जमना बंद होजाय तब दूसरे पात्रमें जो मलाई जमा की है उसमें गरम जल डालकर धूपमें रखदे उसमें जो मलाई जमती जाय उसे निकाल निकालकर तीसरे पात्रमें रखता जाय इसी प्रकार चौथे पात्रमें भी करे जब इसमेंभी मलाई पडती जाय उससे निकाल २ कर प्रथम पात्रमें रक्खे इसी प्रकार चार पांच बार करे जब पात्रमें ऊपर पानी स्वच्छ रहे तब जाने कि शिलाजीत शुद्ध होगया उस जलको फेंकदे शिलाजीतको निकालले ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

वह्नौक्षिप्तंतुनिर्धूमंपक्त्वालिंगोपमंभवेत् ।
तृणाग्रेणांभसिक्षिप्तमधोगलतितंतुवत् ॥

गोमूत्रगंधिमलिनंशुद्धंज्ञेयंशिलाजतु ॥ ५३ ॥

अर्थ-जो शिलाजीत अग्निमें डालनेसे निर्धूम पक्क होकर लिंगके समान खडा होजाय और तिनके अग्रभाग पर रखकर जलमें डालनेसे तंतुओंके समान फैलकर नीचे बैठ गोमूत्रकीसी दुर्गन्धिदे और मलिन हो ऐसे शिलाजीतको शुद्ध जानना ॥ ५३ ॥

अथ विषाणि ।

खंडीकृत्यविषंवस्त्रपरिबद्धंतुदोलया ।
अजापयसिसंस्विन्नंयामतःशुद्धिमाप्नुयात् ।
अजादुग्धाभावतस्तुगव्यक्षीरेणशोधयेत् ॥ ५४ ॥

अर्थ-विषकी गांठको टुकड २ कर कपडेकी पोटलीमें बांध बकरीके मूत्रमें एक पहर स्वेदन करे तो शुद्ध हो बकरीके दूधके अभावमें गौके क्षीरमें शोधन कर ॥ ५४ ॥

अथोपविषाणि ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकम् ।
गुंजाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ ५५ ॥

अर्थ-आकका दूध थूहरका दूध कलियारी, कनेर चोंटली अफीम धतूरा यह सात उपविष हैं ॥ ५५ ॥

अथ लांगलीशोधनम् ।

लांगलीशुद्धिमायातिदिनंगोमूत्रसंस्थिता ।

अर्थ-कलियारीके टुकडोंको एकदिन गोमूत्रमें भिजोवे तो शुद्ध हो ॥

अथ गुंजायाः ।

गुंजाकांजिकसंस्विन्नाप्रहरंशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥ ५६ ॥

अर्थ-गुंजाको कांजीमें डाल एकपहर दोलायंत्रमें पचावे तो शुद्ध हो ॥ ५६ ॥

अथाहिफेनस्य ।

अहिफेनंशृङ्गवेररसैर्भाव्यंत्रिसप्तधा ।
शुद्धचत्युक्तेषुयोगेषुयोजयेत्तद्विधानतः ॥५७॥

अर्थ–अफीमअदरखके रसकी २१ भावना देनेसे शुद्ध हो तदनन्तर योगोंमें डालदे ॥ ५७ ॥

अथ धत्तूरस्य ।

धत्तूरबीजंगोमूत्रेचतुर्यामोषितंपुनः ।
कंडितंनिस्तुषंकृत्वायोगेषुविनियोजयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ–धतूरेके बीजोंको चार पहर गोमूत्रमें भिजोकर फिर निकाल सुखाकर भूसी दूर करे तो शुद्ध हो पीछे प्रयोगोंमें डालदे ॥ ५८ ॥

अथ विषमुष्टिशोधनम् ।

किञ्चिदाज्येनसंभृष्टोविषमुष्टिर्विशुद्धयति ॥ ५९ ॥

अर्थ–कुछ घीके साथ भूनेसे कुचला शुद्ध होताहै वा कांजीके पानीमें कुचलेको दो पहर दोलायंत्रद्वारा स्वेदन कर घृतमें भूने तो शुद्ध हो ॥ ५९ ॥

अथ जैपालशुद्धिः ।

जैपालंरहितत्वचंकुरुरसज्ञाभिर्मलेमाहिषे
निक्षिप्तंत्र्यहमुष्णतोयविमलंखल्वेसवासोर्दितम्
लिप्तंनूतनखर्परेषुविगतस्नेहंरजःसन्निभं
निम्बूकांबुविभावितंचवहुशःशुद्धंगुणाढ्यंभवेत् ६०

अर्थ–जमालगोटेको तीनदिन भैंसके गोबरमें गाड उसके वल्कल और जीभको दूर कर गरम पानीसे धो वस्त्रसे पोछ खरलमें डाल मर्दन करे पीछे कोरे खिपडेपर लेप करे तो उसका तेल सूखजाय पीछे नींबूके रसमें बहुत देरतक घोटे तो शुद्ध और गुणोंमें निर्मल हो ॥ ६० ॥

अथ वमनविधिः।

शरत्कालेवसंतेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम्।
वमनंरेचनंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ ६१ ॥

अर्थ-चतुर वैद्यको चाहिये कि शरत्काल वसन्त और चौमासेमें वमन विरेचन करावे ॥ ६१ ॥

बलवंतंकफव्याप्तंहृल्लासादिनिपीडितम्।
तथावमनसात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ-बलवान्को कफसे व्याप्तको हल्लासादिसे निपीडितको वमन करावे और धीर चित्तवालेको वमनकरावे ६२

विषदोषेस्तन्यरोगेमंदाग्नौश्लीपदेऽर्बुदे।
हृद्रोगकुष्ठवीसर्पमेहजीर्णभ्रमेषुच ॥ ६३ ॥
विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु।
अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ ६४ ॥
नासाताल्वोष्ठपाकेचकर्णस्रावेथजिह्वके।
गलशोथातिसारेचपित्तश्लेष्मगदेतथा ॥ ६५ ॥
मेदोगदेरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक्।
पटोलवासानिंबैश्चपित्तंशीतजलंपिवेत ॥ ६६ ॥

अर्थ-विषदोषमें स्तन्यरोगमें मन्दाग्नि श्लीपद अर्बुदरोगमें हृद्रोग कुष्ठ विसर्प मेह जीर्णज्वर भ्रम विदारिका अपची श्वास कास पीनसवृद्धि अपस्मार ज्वरोन्माद रक्तअतिसार, नासा तालु ओष्ठ इनोंका पाक, कर्णस्राव जिह्वारोग गलशोथ अतिसार पित्तश्लेष्मरोग मेदरोग अरुचिरोगोंमें वैद्यको वमन कराना चाहिये, पित्त दोषमें पटोलपत्र अडूसा और कटुनिम्बके पत्तोंका चूर्ण कर शीतल जल मिलाकार पीवे तो वमनमें पित्त निकले॥६३॥६४॥६५॥६६॥

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिवेत् ।
अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ ६७ ॥
वमिनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम् ।
कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्भिपक् ॥ ६८ ॥

अर्थ-तथा कफ वायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको दूधमें डालकर पीवै तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर हो मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर घोटू ऊंचे आसनपर बैठावै और अंडकी नालको लेकर उसके मुखमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावै इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठको सिराय वमन करावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः ।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ।
नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ-वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे ६९॥

मदार्त्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः ।
उदावर्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्दःकेवलानिली ॥ ७० ॥
एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविपपीडिताः ।
कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुककाथपानतः ॥ ७१ ॥
अजीर्णपीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा ।
स्नेहाभ्यंगान्प्रकोपंचदिनैकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

अर्थ-मदपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहवस्तिनादिया हुआ उदावर्तरोगी जिसके नाक इत्यादिक ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलता होय केवळ वातरोगी वा छर्द किये हुए वा अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह कहैं तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्तहैं इनको मधुक्काथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करने वाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उसदिन त्यागदे ॥ ७० ॥७१॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः।

स्निग्धंस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरोगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविसूचीकुष्ठसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वातमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है उसको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगन्दर रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी ग्रंथिरोगी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेहसे व्याप्त गुल्म प्लीह व्रणसे युक्त विद्रधि छर्दि विस्फोटक विसूचिका कुष्ठ कर्ण नासिका शिर मुखगुद मेढ़ रोगसेयुक्त ॥७३॥७४॥७५॥७६

प्लीहशोथाक्षिरोगार्त्ताःक्रिमिक्षारानिलार्दिताः ।
शूलिनोमूत्रघातार्त्ताविरेकार्हानरामताः ॥ ७७ ॥

अर्थ–प्लीह शोथ अक्षिरोगसे व्याकुल कृमि क्षार अनिल रोगसे अर्दित शूलवाले मूत्राघातरोगसे युक्त यह विरेचनके योग्य मनुष्यहैं ॥ ७७ ॥

मरिचंपिप्पलीशुण्ठीपथ्याधात्रीविभीतकम् ।
विडंगंमुस्तकंचैलापत्रमेकैकटंककम् ॥ ७८ ॥
लवंगंटंकदशकंखाब्धिटंकमितात्रिवृत् ।
एषांचूर्णेऽशीतिटंकमितांदद्यात्सितांसिताम् ॥ ७९ ॥
आख्ययाभिमतंचूर्णमितंप्रातस्तुभक्षयेत् ।
विरेचनमिदंश्रेष्ठमामशुद्धिकरंपरम् ॥ ८० ॥

अर्थ–काली मिरच पीपल सोंठ हरड बहेडा आमला वायविडंग नागरमोथा इलायची पत्रज यह एकएक टंकले लौंग दशटंक और निसोत ४० टंक इनसब वस्तुओंका चूर्णकर इसमें अस्सी टंक मिश्री मिलावे यह आख्याना- मक चूर्ण जो प्रातःकाल भक्षणकरै तो इसके शीघ्र विरे- चन होताहै और यह परमशुद्धि करनेवालाहै ७८॥७९॥८०॥

अभयामरिचंशुण्ठीविडंगामलकानिच ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ ८१ ॥
एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत् ।
त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचसिताभवेत् ॥ ८२ ॥
मधुनामोदकान्कृत्वाकर्षमात्रान्प्रमाणतः ।
एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंचानुपिबेज्जलम् ॥ ८३ ॥

अर्थ–हरड कालीमिरच सोंठ वायविडंग आमले पीपल पीपलामूल तज पत्रज मोथा यह सब बराबर भागले और

दन्तीमूल तीनभाग निसोत आठभाग मिश्री छःभाग इनके शहदद्वारा एकएक तोलेके मोदक बनावै प्रातःकाल एकएक भक्षणकरे और ऊपरसे ठंडा पानी पिये ॥ ८१ ॥ ८२ ॥८३॥

तावद्विरिच्यतेजंतुर्यावदुष्णंनसेवते ।
पानाहारविहारेषुभवेन्नियन्त्रितःसदा ॥ ८४ ॥
विषमज्वरमंदाग्निपांडुकासभगंदरान् ।
विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयनामयान् ॥ ८५ ॥
वातरोगांस्तथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् ।
पृष्ठपार्श्वोरुजघनंजानूदररुजंजयेत् ॥ ८६ ॥
सततंशीततादोषंपलितानिप्रणाशयेत् ।
अभयामोदकाह्येतेरसायनमनुत्तमम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-तबतक विरेचन होता रहेगा जबतक उष्ण जलका पान न करे, पान आहार और विहारमें सदा नियन्त्रित रहे विषमज्वर मन्दाग्नि पाण्डु कास भगन्दर विदाही प्लीहा प्रमेह यक्ष्मारोग नेत्ररोग वातरोग आफरा मूत्रकृच्छ्र पथरी पृष्ठपार्श्व ऊरु जंघा जानु उदररोग निरन्तर शीतता पलित इनको यह अभयामोदक दूर करते हैं यह उत्तम रसायन है ॥ ८४-८७ ॥

शंभोर्बीजंसटंकंबलिमरिचयुतंशृंगबेरंचतुल्यं
योज्यंनैकुंभबीजंसमशिखिसहितंमर्दितंयाममेकम् ।
भुक्तंगुंजाद्विमात्रंशिशिरजलयुतंत्यक्ततत्तत्रमुच्चे-
रिच्छाभेदीरसोयंप्रबलमलहरःसर्वरोगैकहर्त्ता॥८८॥

अर्थ-शुद्धपारा सुहागा गंधक काली मिरच यह सब बराबरले और सोंठभी बराबर भागले तथा जमालगोटेके बीज और चित्रक यह इनकी बराबर लेकर एकपहरतक खरल करे, यह एक रत्ती शीतल जलके साथ सेवन करे जबतक

उष्ण जलका सेवन न करे तबतक विरेचन होगा. यह इच्छा भेदीरस प्रबल मलका हरनेवाला तथा सब रोगोंका हरनेवाला है ॥ ८८ ॥

जैपालेनसमैःसूतव्योपटंकणगंधकैः ।
नाराचःस्याद्रसोमाषमात्रःसर्पिःसितायुतम् ॥ ८९ ॥
हन्तिसग्रहमानाहमामशूलंनवज्वरम् ।
वेलाज्वरंविरेकेणशीतलांबुनिपेवणात् ॥ ९० ॥

अर्थ–शोधे जमालगोटेकी बराबर पारा ले और सोंठ मिरच पीपल सुहागा गन्धक यह सब बराबर लेकर खरल करे यह नाराचरस है, एक मासा घृत और मिश्रीके साथ सेवन करे तो संग्रहणी आनाह शूल नवीन ज्वरको दूर करता है. वेलाज्वरमें विरेचनके शीतल जलसे सेवन करे ॥ ८९ ॥ ९० ॥

अथ परिभाषा ।

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् ।
अतःप्रयोगकार्यार्थमानमात्रोच्यतेमया ॥ ९१ ॥
मानंचद्विविधंप्रोक्तंकालिंगंमागधंतथा ।
कालिंगान्मागधंश्रेष्ठमितिमानविदोविदुः ॥ ९२ ॥

अर्थ–परिमाणके विना औषधियोंकी युक्ति कहीं नहीं होती इस कारण औषधि बनानेके लिये तोल आदिकी विधि वर्णन करते हैं. एक कालिंग और एक मागध देशके भेदसे दो प्रकारकी तोल है. कालिंगसे मागध श्रेष्ठ है ऐसा मान जाननेवाले कहते हैं ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः ।
त्रसरेणोस्तपर्यायेनाम्नावंशीनिगद्यते ॥ ९३ ॥

जालांतरगतैःसूर्यकरैर्वंशीविलोक्यते।
षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिश्चराजिका ९४
तिसृभीराजिकाभिश्चसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः।
यवोऽष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुंजास्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ ९५ ॥
षड्भिश्चगुंजिकाभिःस्यान्माषकोहेमधान्यकौ।
माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणोनिष्कइत्यपि ॥ ९६॥

अर्थ-तीस परिमाणुका एक त्रसरेणु होताहै इसी त्रसरेणुका पर्याय वंशी कहते हैं, झरोखोंमें सूर्यकी किरण पडनेसे जो वडे बारीक कण धूरिके दीखते हैं वह वंशी कहाते हैं. छः वंशीकी एक मरीची (जो रेतली जमीनमें धूरिके बारीक कण सूर्यकी किरणोंसे चमकते हैं) छः मरीचिकी राई और तीन राईकी एक सरसों होती है, आठ सरसोंका एक यव चार जौकी एक चोंटली (रत्ती) छःरत्तीका एक मासा[१] उसको हेम और धान्यक कहते हैं, चार मासेका शाण उसको धरण और निष्क कहते हैं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

टंकःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउच्यते।
क्षुद्रभोवटकश्चैवद्रंक्षणःसनिगद्यते ॥ ९७ ॥
कोलद्वयंचकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिमानिका।
अक्षंपिचुःपाणितलंकिंचित्पाणिश्चतिन्दुकम् ॥९८॥
बिडालपदकंचैवतथापोडशिकामता।
करमध्येहंसपदंसुवर्णकवलग्रहः ॥ ९९ ॥
उदुंबरंचपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते।
स्यात्कर्षाभ्यामर्धपलंशुक्तिरष्टमिकामता ॥ १००॥

१ इस ग्रंथमें छःरत्तीका मासा आया।

शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रंचतुर्थिकाम् ॥
प्रकुंचःपोडशीबिल्वंपलमेवप्रकीर्त्यते ॥ १ ॥
पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतंचनिगद्यते ।
प्रसृतिभ्यामंजलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकम् ॥ २ ॥

अर्थ–उसीको टंकभी कहते हैं. दो टंकका एक कोल होताहै इसको क्षुद्रभ वटक और द्रंक्षणभी कहते हैं (बेरकी बराबर होनेसे इस तोलकी कोल संज्ञा रक्खीहै) दो कोलका एक कर्ष होताहै उसको पाणिमानिका अक्ष पिचु पाणितल किंचित्पाणि तिन्दुक बिडालपदक पोडशिका करमध्य हंसपदक सुवर्ण कवलग्रह उदुम्बर यह सब कर्षके पर्यायहैं, कर्षका एक अर्द्धपल उसीको शुक्ति और अष्टमिका कहतेहैं दो शुक्तिका एकपल उसीको मुष्टि आम्र और चतुर्थिका प्रकुंच पोडशी और बिल्व (बेलका फल) यह पलके पर्याय हैं दो पलकी एक प्रसृति (फैली हुई उंगलियोंवाली) हथेली और प्रसृत होतीहै दो प्रसृतिकी एक अंजली और उसीको कुडव(पावसेर) और अर्धशराव कहतेहैं ॥९७–१०२॥

अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवाभ्यांचमानिका ।
शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ ३ ॥
शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकम् ।
भाजनंकांसपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् ॥ ४ ॥
चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोन्मनौ ।
उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकः ॥ ५ ॥
द्रोणाभ्यांशूर्पकुंभौचचतुःषष्टिशरावकाः ।
शूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता ॥ ६ ॥

अर्थ–और अष्टमानभी कहते हैं. दो कुडवकी एक मानिका होतीहै उसको शराव और अष्टपलभी कहते हैं एक शरावके १२८ टंक होते हैं दो शरावका १ प्रस्थ (सेर) होताहै चार प्रस्थका एक आढक होताहै उसको भाजन कांसपात्रभी कहते हैं, यह ६४ पलका होताहै चार आढकका एक द्रोण होताहै उसको कलश नल्वण उन्मान घट (घडा) और राशिभी कहते हैं दो द्रोणका शूर्प होताहै उसको कुंभ कहते हैं शूर्पके ६४ शराव होते हैं दो शूर्पकी द्रोणी होती है उसको वाह और गोणीभी कहतेहैं ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

खारीपरिमाणम्।

द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः।
चतुःसहस्रपलिकाषण्णवत्यधिकाचसा ॥ ७ ॥

अर्थ–चार द्रोणीकी एक खारी होतीहै उसके ४०९६ पल होतेहैं ॥ ७ ॥

भारतुलापरिमाणम्।

पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः।
तुलापलशतंज्ञेयासर्वत्रैवैपनिश्चयः ॥ ८ ॥
मापटंकाक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकम्।
राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणाः ॥ ९ ॥

अर्थ–२००० पलका एक भार होताहै १०० पलकी एक तुला यह केवल मगध देशमें नहीं किन्तु सब देशमें इसी तोलका निश्चय जानना मासेसे लेकर खारी पर्यन्त दूसरी तोल चौगुनी जाननी जैसे चार मासेका१ शाण४ शाणका एककर्ष चार कर्षका एक बिल्व चार बिल्वकी एक अंजली चार अंजलीका एक प्रस्थ चार प्रस्थका एक आढक चार आढककी एक राशि चार राशिकी एक गोणी चार गोणीकी एकखारी इसप्रकार एकसे दूसरी चौगुनी जाने८॥९॥

कलिंगपरिभाषाकेतोल ।

यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः ।
यवद्वयेनगुञ्जास्यात्रिगुंजोवल्लउच्यते ॥ ११० ॥
माषोगुंजाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्कचित् ।
स्याच्चतुर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टंकएवच ॥ ११ ॥
गद्याणोमाषकैःषड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषकः ।
चतुष्कर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः ।
चतुष्पलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ॥ १२ ॥

अर्थ-बारह सफेद सरसोंका एक यव दो यवकी एक रत्ती (गुंजा) तीन रत्तीका एक वल्ल (कहीं दो रत्तीका होता है) आठ रत्तीका १ मासा (कहीं सात रत्तीका-भी होता है) चार मासेका १ शाण उसको निष्क और टंकभी कहते हैं, छमासेका एक गद्याणक दश मासेका एक कर्ष होता है चार कर्षका एक पल उस पलके दश शाण होते हैं चार पलका एक कुडव होता है और प्रस्था-दिकी तोल मागधपरिभाषाके समान जाननी ११०-११२॥

अजीर्णखण्ड ।

अजीर्णप्रभवारोगास्तदजीर्णंचतुर्विधम् ।
आमंविदग्धविष्टब्धंरसाजीर्णंचतुर्थकम् ॥ १३ ॥

अर्थ-मनुष्योंको अजीर्ण होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं वह चार प्रकारका है आम विदग्ध विष्टब्ध और रसाजीर्ण १३

आमेचोष्णोदकंपेयंदग्धेचोदरस्वेदनम् ।
विष्टब्धेरेचनंचैवशयनंरसशेषके ॥ १४ ॥

अर्थ-आमाजीर्णमें तत्ता जल पिये विदग्धाजीर्णमें स्वेदन ... र्णमें दस्त और रसशेष अजीर्णमें शयन करे१४ ॥

घृताजीर्णेदिनेपंचतैलेद्वादशकस्तथा ।
तिथिसंख्यापयस्युक्तादधिजेविंशतिस्तथा ॥ १५

अर्थ-घीका अजीर्ण पांचदिनमें पचताहै तेलका बारह दिनमें दूधका पन्द्रह दिनमें और दहीका बीस दिनमें पकताहै॥

पिष्टान्नेसलिलंप्रियालुफलजेपथ्याहितामांसजे
खण्डक्षीरभवेतुतक्रमुचितंकोष्णाम्बुकालिंगजे ॥
मात्स्येचूतफलंत्वजीर्णशमनंमध्वम्बुपानात्यये
तैलेपुष्करजेकटुप्रशमनंशेषांस्तुबुद्ध्याजयेत् १६ ॥

अर्थ-रोटी पूरीके अजीर्णमें जलका पीना हित है खिरनीके अजीर्णमें हरड खाय मांसके अजीर्णमें खांड दूधके अजीर्णमें छाछ तरबूजके अजीर्णमें तत्ताजल मछलीके अजीर्णमें आम चूसना. मद्यके अजीर्णमें शहद मिलाजल कमलगट्टेके खानेमें सरसोंका तेल पिये शेष अजीर्णको वैद्य अपनी बुद्धिसे दूर करे ॥ १६ ॥

उष्णोदकंघृताजीर्णेतैलाजीर्णेचकांजिकम् ॥
गोधूमेकर्कटीश्रेष्ठाकदल्याम्रफलेघृतम् ॥ १७ ॥

अर्थ-घीके अजीर्णमें गरम जल तेलके अजीर्णमें कांजी गेहूंके अजीर्णमें ककडी कदलीकेआम्रफलकेअजीर्णमेंघृतखाय

दाडिमामलकतालतिन्दुकीबीजपूरलवलीफलानिच ॥
बाकुलंफलमतीवपाचयत्पाकमेतिवकुलस्वमूलतः १८॥

अर्थ-अनार आंवला तालफल तिन्दुकी बिजौरा लवली इनके अजीर्णमें मौलसिरिके फल खाने चाहिये मौलसिरिके अजीर्णमें मौलसिरिके मूल खानेसे पाचन होताहै १८

आम्रातकोदुम्बरिपिप्पलीनांफलानिचप्लक्षवटादिकानां
विश्वौषधंपर्युषितोदकेनसौवर्चलेताम्रफलस्यपाकम् १९.

अर्थ-आम्रातक, गूलर, पीपल, पाकर, वड इनके फल खानेसे अजीर्णमें सोंठको पीसकर पीना योग्य है आमके अजीर्णमें सैंधानोंन खाय ॥ १९ ॥

गोधूममाषौहरिमंथमुद्गौयवासतीनांकितवोनिहन्ति ॥
यन्मातुलुंगीफलमेतिपाकंक्षणेनसोयंलवणानुभावः २०

अर्थ-गेहूं उडद चना मूँग जो मटर इनका अजीर्ण हो तो धतूरेके रससे और विजोरेका रस सैंधेनोंनसे दूर होताहै ॥ २० ॥

नागरंहरतिबिल्वजांबवंपाचयेन्मधुरिकाकपित्थजम् ।
सर्वथैवसकलामनिहंत्रीप्रीतयेग्निजननीगदितासा २१ ॥

अर्थ-बेलफल तथा जामुनके अजीर्णको सोंठ पचाती है कैथके अजीर्णको सौंफ पचाती है यह विशेषकर सब औषधियोंको पचाती है व्याधिनाशक और अग्निवर्द्धकहै ॥२१॥

पिशितपनसयोःस्यादाम्रबीजेनपाकः
कृशरमहिषपयोपित्क्षीरयोः सैंधवेन ॥
चिपटपरिणतिःस्यात्पिप्पलीदीप्यकाभ्या-
मपहरतितुपाम्बुर्व्रीदलानामजीर्णम् ॥ २२ ॥

अर्थ-मांस और कटहरका अजीर्ण आमकी गुठलीसे नष्ट होताहै उडद तिल चावलके मिलानेसे खिचडी होतीहै भैंसका दूध इनका परिपाक सैंधेनमकसे होता है चिरवाका अजीर्ण पीपल और अजवायनसे नष्ट होताहै और दोदलका अन्न मूंग उडद आदिका अजीर्ण कांजीसे नष्ट होताहै ॥ २२ ॥

कर्पूरपूगीफलनागवल्लीकाश्मीरजातीफलजातिकोपे ॥
कस्तूरिकाशेलुकनालिकेरफलंपचत्याशुसमुद्रफेनः २३

अर्थ-कर्पूर पूगीफल (सुपारी) ताम्बूल केशर जायफल जावित्री कस्तूरी बहेडा नारियल इनका अजीर्ण समुद्र फेनसे दूर होता है ॥ २३ ॥

श्यामाकनीवारकुलत्थपष्टि-
निष्पावकंगुर्दधिमण्डकस्तु ॥
चिंचाकुलत्थौतिलतैलयोगो
जटाब्दनादस्यनिहन्त्यथाम्रम् ॥ २४ ॥

अर्थ-सनाखिया तिन्ती कुलथी सांठीचावल वनमूंग कंगनी इनका अजीर्ण दहींके मट्ठेसे दूर होता है इमली कुलथीका अजीर्ण तिलके तेलसे आमका अजीर्ण चौलाई की जडसे नष्ट होता है ॥ २४ ॥

कशेरुशृंगाटमृणालमृद्वीखर्जूरखंडाद्यपिनागरेण ॥
पलाशभस्मांबुतथारजोवारसोनिहन्याद्रसमिक्षुजातम् ॥

अर्थ-कसेरू सिंघाडे कमलका कन्द दाख खजूर खांड इनका अजीर्ण सोंठसे नष्ट होताहै गन्नेका अजीर्ण ढाककी राखको पानीमें मिलाकर पीनेसे नष्ट होता है ॥ २५ ॥

किमत्रचित्रंबहुमांसमत्स्यभोजीसुखीस्यात्परिपीतसूक्तः
इत्यद्भुतंकेवलवह्निपक्वमांसेनमत्स्यःपरिपाकमेति २६ ॥

अर्थ-बहुतमांस और मच्छी खानेवाला पुरुष मद्यपान करनेसे सुखी रहता है यह आश्चर्य नहीं है परन्तु केवल आंचसे भुनेमांससे मच्छीका अजीर्ण पचता है यह बडा आश्चर्य है ॥ २६ ॥

शाकानिसर्वाण्यपियान्तिपाकंक्षारेणसद्यस्तिलनालजेन
चंचूकसिद्धार्थकवास्तुकानांगायत्रिसारक्कथितेनपाकः ॥

अर्थ-सब सागमात्रका अजीर्ण तिलके खारसे नाश हो

त्ताहै और चुका सरसों बथुआ इनके खानेसे प्रगट अजीर्ण खैरसारके काढेसे परिपाक होय ॥ २७ ॥

पटोलवंशांकुरकारवेल्लीफलान्यलाबूनिबहूनिजग्ध्वा ॥
क्षारोदकंम्रक्षतरोर्निपीयनोक्तःपुनर्वाछतितावदेव॥२८॥

अर्थ-परवल वांसकी कोंपल मीठी तूंबी इनके अजीर्णमें पालाश ढाकके खारको जलमें पीनेसे तत्काल परिपाक हो और उसी समय उतनेही भोजन करनेकी फिर इच्छा होती है ॥ २८ ॥

विपच्यतेसूरणकोगुडेनतथालुकंतंडुलतोयपानात् ।
जम्बीरनीरेणनिशारसेनमुस्तेनचूर्णपरिपाकमेति ॥२९॥

अर्थ-जिमीकंदका अजीर्ण गुडसे आलूका चावलोंके धोवनसे हलदीका जंभीरीके रससे लहसनका मोथेके चूर्णसे पचे ॥२९॥

लवणंतंडुलपेयात्सर्पिर्जंबीरवारिणाचपचेत् ॥
मरिचादपितत्पाकंशीघ्रंयात्येवकांजिकात्तैलम् ॥ ३० ॥

अर्थ-लवण तंडुलके पीनेसे घृतका अजीर्ण जम्बीरीके जलसे और कालीमिर्चसेभी इसका पाक होजाताहै कांजीसे तेल पच जाता है ॥ ३० ॥

रसान्नंजीर्यतिव्योपखंडंनागरभक्षणात् ।
फलानिसकलान्याशुयवक्षारात्पचन्तिहि ॥
मद्यंरसान्नवासाचहरिमंथेनजीर्यति ॥ ३१ ॥

अर्थ-रसान्न त्रिकुटेसे, खांडका अजीर्ण सोंठ भक्षणसे तथा सब प्रकारके फलोंका अजीर्ण जवाखारसे नष्ट होता है मद्यरसान्नका अजीर्ण अडूसा और हरिमन्थ चनेसे दूर होता है ॥ ३१ ॥

उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्ण-
मम्लेनचक्षारग[illegible] ।

स्नेहेनतीक्ष्णंवमनातियोगे
सिताहितास्यादितिकाश्यपोक्तिः ॥
स्निग्धेषुरूक्षंचतदप्यनेन
स्निग्धंचरूक्षेणचपाकमेति ॥ ३२ ॥

अर्थ-सरदीके रोग गरम औषधीसे नष्ट होते हैं और गरमीके शीतल औषधीसे नष्ट होते हैं सब खार खट्टी वस्तुसे गुणकारक होती है तीखी मिर्चआदिवस्तु घी तेल आदिसे गुणकारक होय और वमन करता वस्तुका अवगुण मिश्रीसे शान्त होताहै. स्निग्ध पदार्थोंके अजीर्णमें रूखे और रूखोंके अजीर्णमें स्निग्ध प्रयोगकरे ॥ ३२ ॥

तप्तंतप्तंहेमवातारमग्नौतोयेक्षिप्तंक्षिप्तमंभस्सुतच्च ।
पीत्वाजीर्णंतोयपानंनिहन्यात्
चित्राक्षौद्रंभद्रमुस्तंविशेषात् ॥ ३३ ॥

अर्थ-सुवर्ण अथवा चांदीको वारंवार तपाकर जलमें बुझावे उस जलके पीनेसे बहुत दिनका अजीर्ण जाय अथवा चीता शहद और भद्रमोथा सेवनकरे तो अजीर्ण जाय३३

ताम्बूलजग्धास्थितचूर्णकेनसंदह्यतेयस्यमुखंनरस्य ।
तैलेनवाकेवलकांजिकेनसुखायगंडूपमसौविदध्यात् ३४

अर्थ-जिस मनुष्यका मुख पान खातेही जलने लगे अथवा चूने और कत्थेसे फटजाय वह तेल अथवा सिरकेसे कुल्ला करे तो आराम हो ॥ ३४ ॥

इत्यजीर्णकुलकंडनोगणोनूनमाहमुनिरत्रिसंभवः ।
सम्यगेनमधिगम्ययोजयेन्नक्कचित्स्खलतिजातुतत्त्ववित्

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने
समाप्तोऽयं सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

अर्थ-इस प्रकार यह अजीर्णकुलका नाशक गण वर्णन किया यह आत्रेयने कहा है जो इसको अच्छी प्रकार जान कर प्रयोग करता है वह तत्त्ववित किसीप्रकार धोखा नहीं खा सक्ताहै और रोगोंको जीतताहै ॥ ३५ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने भाषाटीकायां सप्तम प्रकाश ॥ ७ ॥

दोहा ।

संवद्गुणशरअंकविधु, ज्येष्ठशुक्लगुरुवार ।
तिथिअष्टमीपुनीतअति, पूर्योतिलकविचार ॥१॥
धन्वन्तरिआदिकमहा, सिद्धनकोशिरनाय ।
वैद्यरत्नटीकासकल, भाषालिख्योवनाय ॥ २ ॥
सरितरामगंगानिकट, नगरमुरादाबाद ।
तहांरहतहरिभजनरत, द्विजज्वालापरसाद ॥ ३ ॥
सेठशिरोमणिजगविदित, खेमराजगुणखान ।
तिनकेहितटीकाकियो, सारभूतसुखदान ॥ ४ ॥
नारायणकोसुमरिये, भजियेसीताराम ।
दूरकरहिंभवरोगजो, सिद्धकरहिंसवकाम ॥ ५ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई